हिन्दी सांध्य दैनिक

प्रखर पूर्वांचल

अखबार नहीं आंदोलन

RNI:UPHIN/2016/68754 www.prakharpurvanchal.com Email ID: prakharpurvanchal@gmail.com

गाजीपुर से प्रकाशित व वाराणसी, चंदौली, सोनभद्र, मऊ, बलिया, आजमगढ़, भदोही, मिर्जापुर, जौनपुर, लखनऊ, प्रयागराज, गोरखपुर, कुशीनगर, महाराजगंज तथा देवरिया से प्रसारित

वर्षः 7, अंकः 126, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00, आमंत्रण मूल्य 2.00 | 29 अक्टूबर, 2022 दिन शनिवार | गाजीपुर/वाराणसी

प्रधानमंत्री मोदी के मार्गदर्शन से सुदृढ़ हुई कानून-व्यवस्था, समाज भयमुक्त : योगी

लोकतांत्रिक व्यवस्था पर आमजन का विश्वास और अधिक मजबूत हुआ

लखनऊ। हरियाणा के सूरज कुंड में देश के सभी राज्यों के गृह मंत्रियों के राष्ट्रीय चिंतन शिविर में शामिल होने वाले उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने आज इसके समापन पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के योगदान को जमकर सराहा है। सीएम योगी आदित्यनाथ ने लगातार ट्वीट से देश तथा प्रदेश की कानून-व्यवस्था को सुधारने में पीएम नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन का उल्लेख किया है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि हरियाणा के सूरज कुंड में देश के सभी राज्यों के गृह मंत्रियों के चिंतन शिविर को बेहद उपयोगी बताया है। उन्होंने कहा कि हरियाणा के सूरजकुंड में आयोजित दो दिवसीय चिंतन शिविर में शुक्रवार को समापन सत्र में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का अमूल्य मार्गदर्शन वर्चुअल माध्यम से प्राप्त हुआ। जिससे कि हम सभी को आगे मजबूती से काम करने की प्रेरणा भी मिली है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश तथा राज्यों की कानून-व्यवस्था सुदृढ़ हुई है। हर समाज भयमुक्त हुआ है। लोकतांत्रिक व्यवस्था पर आमजन का विश्वास और अधिक मजबूत हुआ है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि चिंतन शिविर के समापन पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बड़े संकल्प लेने, विरासत पर गर्व, गुलामी की सोच से मुक्ति, एकता-एकजुटता व नागरिक कर्तव्य के पंच प्रण दिए हैं।

हम सभी को राष्ट्र निर्माण के मंत्र, इन पंच प्रणों की सिद्धि के लिए एकजुट होकर समर्पित सेवाभाव के साथ जनता के लिए कार्य करना होगा। मिलकर 'नया भारत' बनाना है। योगी आदित्यनाथ ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से उत्तर प्रदेश को स्मार्ट प्रदेश के रूप में प्रतिष्ठित करने एवं लोगों को सुगमता प्रदान करने के लिए विभिन्न सेवाओं को तकनीक से युद्ध स्तर पर जोड़ा जा रहा है। यह तो तय हो गया है कि सुशासन की स्थापना में तकनीक का योगदान महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में 'नया उत्तर प्रदेश' जीरो टालरेंस की नीति के साथ विकास की नई ऊंचाइयों को स्पर्श कर रहा है। डबल इंजन की भाजपा सरकार सुरक्षा, सेवा और सुशासन के प्रति संकल्पित होकर कार्य कर रही है।

छोटी काशी से हुंकार भरेंगे सीएम योगी, भाजपा प्रत्याशी के लिए मांगेंगे वोट

लखीमपुर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ 31 अक्टूबर को लखीमपुर की गोला गोकर्णनाथ विधानसभा सीट पर होने वाले उपचुनाव के लिए छोटी काशी से हुंकार भरेंगे। गोला गोकर्णनाथ विधानसभा सीट के लिए उपचुनाव 3 नवंबर को होना है। बता दें कि सितंबर में भाजपा विधायक अरविंद गिरि का निधन हो गया था। दिवंगत विधायक के बेटे अमन गिरि भाजपा के उम्मीदवार बनाए गए हैं। वहीं, समाजवादी पार्टी ने पूर्व विधायक विनय तिवारी को मैदान में उतारा है। कांग्रेस और बसपा उपचुनाव नहीं लड़ रही है। भाजपा ने वरिष्ठों द्वारा रैलियों को खड़ा किया है उपचुनाव में पार्टी के नेताओं का सीधा मुकाबला भगवा पार्टी और सपा के बीच होगा। नवनियुक्त यूपी भाजपा प्रमुख भूपेंद्र चौधरी और राज्य महासचिव (संगठन) धर्मपाल सिंह के पदभार संभालने के बाद यह पहला चुनावी मुकाबला होगा।

एक बीघा जमीन के लिए बेटे ने 80 साल के पिता को कुल्हाड़ी से काटा, आरोपी फरार

जलालाबाद, शाहजहांपुर। शाहजहांपुर में एक बीघा जमीन के लिए एक शख्स ने अपने पिता को कुल्हाड़ी से काट हत्या कर दी। वारदात के बाद आरोपी फरार हो गया। ये मामला जलालाबाद क्षेत्र की धियरा गांव की है। पुलिस ने पकड़ने के लिए हत्यारोपी को पकड़ने के लिए दो टीमों का गठन किया है। शरीफ खां अपने खेत में चारपाई पर बैठे हुए थे। तभी बेटा बशीर वहां आया और कुल्हाड़ी से सिर पर पार कर पिता को मार डाला। कुछ देर बाद परिजनों को बुजुर्ग शरीफ खां की जानकारी मिली तो कोहराम मच गया। वहीं आस-पास के लोग इकट्ठा हो गए। सूचना मिलने पर जलालाबाद सीओ मस्सा सिंह और थाना प्रभारी प्रवीन सोलंकी मौके पर पहुंच कर जांच पड़ताल शुरू की। इसके बाद शरीफ खां के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। मृतक शरीफ खां के पोते आमिर खां ने पुलिस को तहरीर दी कि दादा ने उसकी मां रेशमा के नाम पर एक बीघा जमीन बैनामा कर दिया था। जिसे लेकर ताऊ बशीर खां नाराज चल रहा था। जमीन को लेकर दादा और ताऊ में कई बार विवाद हुआ था। गुरुवार को दोपहर जब दादा खेत में बैठे थे थे। तभी मौका देख कर ताऊ बशीर ने कुल्हाड़ी से दादा की हत्या कर दी।

जब देश का सामर्थ्य बढ़ेगा तो देश के हर नागरिक, हर परिवार का सामर्थ्य बढ़ेगाः मोदी

नई दिल्ली। हरियाणा के फरीदाबाद जिले में चल रहे सभी राज्यों के गृह मंत्रियों के चिंतन शिविर को वीडियो कांफ्रेंसिंग के द्वारा संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी कहा जब देश का सामर्थ्य बढ़ेगा तो देश के हर नागरिक, हर परिवार का सामर्थ्य बढ़ेगा। उन्होंने कहाकि आजकल देश में उत्सव का माहौल है। ओणम, दशहरा, दुगार्पूजा और दीपावली सहित अनेक उत्सव शांति और सौहार्द के साथ देशवासियों ने मनाए हैं। अभी छठ पूजा सहित कई अन्य त्योहार भी हैं। विभिन्न चुनौतियों के बीच इन त्योहारों में देश की एकता का सशक्त होना आपकी तैयारियों का भी प्रतिबिंब है। मोदी ने कहा कि कानून और व्यवस्था राज्यों की जिम्मेदारी है, लेकिन ये राष्ट्र की एकता और अखंडता से भी जुड़े हुए हैं। पीएम ने कहा कि सूरजकुंड में गृह मंत्रियों का यह चिंतन शिविर सहकारी संघवाद का एक बेहतर उदाहरण है। राज्य एक-दूसरे से सीख सकते हैं, एक-दूसरे से प्रेरणा ले सकते हैं और देश की बेहतरी के लिए मिलकर काम कर सकते हैं। यह संविधान की भावना है और हमारे नागरिकों के प्रति हमारा कर्तव्य है।

पीएम ने आगे कहा कि आजादी का अमृतकाल हमारे सामने हैं। आने वाले 25 वर्ष देश में एक अमृत पीढ़ी के निर्माण के हैं। ये अमृत पीढ़ी 'पंच प्राणों' के संकल्पों को धारण करके निर्मित होगी। विकसित भारत का निर्माण, गुलामी की हर सोच से मुक्ति, विरासत पर गर्व, एकता और एकजुटता, और नागरिक कर्तव्य... इन पंच प्राणों का महत्व आप सभी भली भांति जानते हैं, समझते हैं। ये एक विराट संकल्प है, जिसको सिर्फ और सिर्फ सबके प्रयास से ही सिद्ध किया जा सकता है।

मोदी ने कहा कि देश की बेहतरी के लिए काम करना संविधान की भी भावना है और देशवासियों के प्रति हमारा दायित्व है। जब देश का सामर्थ्य बढ़ेगा तो देश के हर नागरिक, हर परिवार का सामर्थ्य बढ़ेगा। यही तो सुशासन है, जिसका लाभ देश के हर राज्य को समाज की आखिरी पंक्ति में खड़े व्यक्ति तक पहुंचाना है। इसमें आप सभी की बहुत बड़ी भूमिका है। पीएम ने राज्य सरकारों से केंद्रीय जांच एजेंसियों का सहयोग करने की अपील भी की। मोदी ने कहा कि कई बार केंद्रीय एजेंसियों को कई राज्यों में एक साथ जांच करनी पड़ती है, दूसरे देशों में भी जाना पड़ता है। इसलिए हर राज्य का दायित्व है कि चाहे राज्य की एजेंसी हो, चाहे केंद्र की एजेंसी हो, सभी एजेंसियों को एक-दूसरे को पूरा सहयोग देना चाहिए।

मोदी ने कहा कि आज एनडीआरएफ के लिए देशवासियों के मन में काफी सम्मान है। आपदा के समय जैसे ही एनडीआरएफ और एसडीआरएफ की टीम पहुंचती है, वैसे ही लोगों को संतोष होने लगता है कि अब विशेषज्ञ पहुंच गए हैं, अब ये अपना काम कर लेंगे। उन्होंने कहा कि अपराध वाली किसी भी जगह पर जैसे ही पुलिस पहुंचती है, लोगों में ये भाव आता है कि सरकार पहुंच गई।

फरार घोषित स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती को झटका, अग्रिम जमानत याचिका खारिज

वाराणसी। स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती को वाराणसी की अदालत से बड़ा झटका लगा है। सात साल पहले प्रतिकार यात्रा के मामले में उनकी अग्रिम जमानत याचिका एमपी-एमएलए की विशेष कोर्ट ने खारिज कर दिया है। इससे पहले उन्हें इसी कोर्ट से फरार घोषित करते हुए कुर्की का आदेश जारी किया गया था। अविमुक्तेश्वरानंद समेत 25 लोगों को एमपी-एमएलए की विशेष कोर्ट के जज सियाराम चौरसिया ने 29 सितंबर को फरार घोषित किया था। आदेश के बाद स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद की ओर से अग्रिम जमानत अर्जी दाखिल की गई थी। इस पर शुक्रवार को सुनवाई हुई। एडीजीसी ज्योति शंकर उपाध्याय ने याचिका का विरोध किया। इसके बाद अविमुक्तेश्वरानंद की याचिका खारिज कर दी गई है। बता दें कि पांच अक्तूबर 2015 को गंगा में गणेश प्रतिमा के विसर्जन की मांग लेकर स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद ने मैदागिन चौराहे से दशाश्वमेध तक प्रतिकार यात्रा निकाली थी। इसी दिन शाम करीब साढ़े चार बजे गोदौलिया चौराहे पर प्रतिकार यात्रा के पहुंचने पर भगदड़ की स्थिति बन गई। यहां जमकर उपद्रव हुआ और आगजनी की गई। इसमें पुलिस बूथ, सरकारी जीप में आग लगा दी गई थी। एक मजिस्ट्रेट की जीप, फायर ब्रिगेड की गाड़ी व पुलिस वैन और लगभग दो दर्जन बाइक क्षतिग्रस्त कर दी गई। पथराव किया गया था, जिसमें प्रशासनिक अफसर, पुलिस व अन्य घायल हुए थे। प्रकरण में दशाश्वमेध थाने में पूर्व विधायक अजय राय, स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती, महंत संतोष दास उर्फ सतुआ बाबा, महंत बालक दास, अरुण पाठक, पंकज सिंह, अजय चौबे, अमरनाथ यादव उर्फ डब्बल, असित दास समेत कई पर मुकदमा दर्ज किया गया था। इसी प्रकरण में अन्य कई ने जमानत करा ली थी। स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती ने अब तक जमानत नहीं कराई थी। कोर्ट ने गैर जमानती वारंट जारी किया था। बावजूद इसके पेश न होने पर स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद समेत 25 को फरार घोषित करते हुए कुर्की का आदेश दिया गया था।

मस्क के ट्विटर चीफ बनने पर भारत ने कहा- उम्मीद है कि ट्विटर स्थानीय नियमों का पालन करेगा

नई दिल्ली। टेस्ला के सीईओ एलन मस्क ट्विटर के नए मालिक बन गए हैं। एलन मस्क ने इस साल 13 अप्रैल को ट्विटर खरीदने का ऐलान किया था। एलन मास्क द्वारा ट्विटर का अधिग्रहण के बाद भारत का भी बयान सामने आया है। आईटी व सूचना प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री राजीव चंद्रशेखर ने समाचार एजेंसी रायटर्स से कहा कि देश को उम्मीद है कि ट्विटर भारत में नए आईटी नियमों का पालन करेगा। राजीव चंद्रशेखर ने कहा कि ट्विटर का मालिक बदलने की परवाह नहीं है। भारत में आपना कानून है, यहां सभी को कानून का पालन करना पड़ेगा। उन्होंने कुछ भारतीयों के ट्वीटर अकाउंट बैन के संबंध में कहा कि एक-दो दिन में इस संबंध में नया आईटी नियम लागू किया जाएगा, जिसका सभी को पालन करना पड़ेगा। बता दें कि जुलाई में भारत सरकार ने ट्विटर को कुछ आपत्तिजनक सामाग्री हटाने के लिए कहा था, इसे लेकर मामला कोर्ट में गया था। कोर्ट में ट्विटर के अधिकारी ने कुछ सामाग्री हटाने पर सहमत भी हुए थे। पिछले दो वर्षों में भारत सरकार ने ट्विटर से स्वतंत्र सिख राज्य बनाने, किसानों के विरोध के बारे में गलत सूचना फैलाने, उडश्क्क्-19 महामारी से निपटने के लिए सरकार के प्रयासों को गलत अर्थों में फैलाने जैसे तथ्यों को हटाने का अनुरोध किया था। बता दें कि 13 अप्रैल 2022 को एलन मास्क ने उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म को 54.2 डालर प्रति शेयर के रेट से 44 अरब डालर में खरीदने का आफर दिया था। लेकिन तब स्पैम और फेक अकाउंट्स की वजह से उन्होंने उस डील को ही होल्ड पर रख दिया था। इसके बाद 8 जुलाई को मस्क ने डील तोड़ने का फैसला किया। इसके खिलाफ ट्विटर ने कोर्ट का रुख किया था। लेकिन फिर अक्टूबर महीने की शुरूआत में मस्क ने अपना रुख बदला और फिर से डील को पूरी करने के लिए तैयार हो गए। इसी बीच डेलावेयर कोर्ट ने 28 अक्टूबर तक डील पूरी करने का आदेश दिया था।

दिल्ली में मामूली विवाद पर शख्स ने कई लोगों पर चढ़ा दी कार, सामने आया हादसे का डरावना वीडियो

नई दिल्ली। बाहरी दिल्ली के अलीपुर इलाके की संकरी गली में बहस के दौरान एक कार चालक द्वारा कई लोगों को रौंदने का मामला सामने आया है। यह पूरा हादसा सीसीटीवी में कैद हो गया है। वहीं, दिल्ली पुलिस ने पीड़ितों की शिकायत पर मामला दर्ज कर आरोपित कार चालक को गिरफ्तार कर लिया है और आगे की कानूनी कार्रवाई कर रही है। पूरा मामला 26 अक्टूबर का है। मिली जानकारी के मुताबिक, 26 अक्टूबर (बुधवार) को बाहरी दिल्ली के अलीपुर इलाके की एक संकरी गली में मोटरसाइकिल सवारों और कार चालक के बीच मामूली विवाद हो गया। वाहनों को बीच सड़क पर खड़ा कर दोनों पक्ष आपस में बहस करने लगे। इस बीच एक शख्स ने वहां पर खड़े लोगों पर कार चढ़ाकर कुचल दिया। कार की चपेट में आए तीन लोगों को गंभीर चोट आई है और उन्हें नजदीक के अस्पताल में इलाज के लिए भर्ती कराया गया है। वहीं, पीड़ितों की शिकायत पर आरोपित कार चालक नितिन को गिरफ्तार कर लिया गया है और उसके खिलाफ आइपीसी की धारा 307 के तहत हत्या के प्रयास का मामला दर्ज किया गया है। फिलहाल दिल्ली पुलिस ने पूरे प्रकरण की जांच शुरू कर दी है। दिल्ली पुलिस द्वारा जारी वीडियो में साफ देखा जा सकता है कि अलीपुर इलाके की एक गली में किसी मसले पर कुछ लोग आपस में बहस कर रहे हैं। इस बीच आरोपित नितिन बहस कर रहे लोगों पर तेज रफ्तार कार चढ़ा देता है। कार की चपेट में कई लोग आ जाते हैं। कार लोगों के ऊपर चढ़ाने के बाद नितिन फरार हो जाता है। बताया जा रहा है कि अलीपुर की गली में बहस के दौरान गुस्साए कार चालक नीतिन ने अपना आपा खो दिया। इसके बाद गली में खड़े लड़कों पर अपनी कार चढ़ा दी और इसके बाद फरार हो गया। कार चालक नशे में था या नहीं? इसका खुलासा दिल्ली पुलिस की ओर से नहीं किया गया है।

भाजपा से है अटूट गठबंधन, मिलकर लड़ेंगे नगर निकाय चुनाव : संजय निषाद

प्रतापगढ़। प्रदेश सरकार के मत्स्य विभाग के मंत्री संजय निषाद का शुक्रवार को प्रतापगढ़ जिले में दौरा हुआ। इस दौरान उन?होंनेने प्रेस वार्ता में कहा कि भाजपा से उनका अटूट गठबंधन है। नगरीय निकाय चुनाव भाजपा से मिलकर लड़ेंगे। कहा कि मछुआरा समाज के विकास के लिए योगी सरकार कृत संकल्प है। मछुआरा समाज के बच्चों को शिक्षित करने के लिए मंडल स्तर पर जल्द ही आवासीय विद्यालय खोले जाएंगे।

बोले मंत्री, भाजपा ने मछुआरा समाज को अधिकार दिलाया : यूपी के कैबिनेट मंत्री संजय निषाद ने कहा कि अब तक विपक्षी पार्टियों ने मछुआरा समाज को सिर्फ वोट बैंक के रूप में इस्तेमाल किया। पहली बार है कि भाजपा ने मछुआरा समाज को उनका अधिकार दिलाने का काम किया है। छह महीने पहले इसलिए मत्स्य मंत्रालय को एक अलग मंत्रालय बनाया गया। मंत्री बोले कि मछुआ कल्याण योजना के तहत प्रदेश सरकार ने 25 करोड़ रुपये आवंटित किया है। 18 प्रतिशत आबादी होने के बावजूद अभी तक मछुआरा समाज बंटा हुआ था। उन्होंने कहा कि मत्स्य निगम के कर्मचारियों को सातवां वेतनमान दिलाने काम उन्होंने किया है।

कैबिनेट मंत्री ने कहा- **प्रतापगढ़ में मत्स्य पालन करने वालों का मुफ्त बीमा** : प्रतापगढ़ में मत्स्य पालन करने वाले 1750 लोगों का निशुल्क बीमा कराया गया है, जो उन्हें किसी आपदा के दौरान आर्थिक सहायता दी जाएगी यहां पर इस योजना का लाभ विभाग के कुछ अधिकारियों व कर्मचारियों की उदासीनता से लोगों को नहीं मिल पा रहा था। इसके अलावा बैंक वाले भी पत्रावली मंजूर करने में शिथिलता बरत रहे थे। प्रतापगढ़ को मत्स्य गढ़ बनाना चाहते हैं, इसके लिए विभाग के पास बजट की कोई कमी नहीं है।

भुलाया नहीं जा सकता 26/11 हमला, जयशंकर बोले- 'आतंक के खिलाफ काम अभी अधूरा'

मुंबई। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की ओर से शुक्रवार को मुंबई के ताजमहल पैलेस होटल में आतंकवाद विरोधी समिति की विशेष बैठक का आयोजन किया गया। इस दौरान समिति के सदस्यों ने 26/11 हमले को याद करते हुए यहां मारे गए लोगों को श्रद्धांजलि अर्पित की। बैठक के दौरान ब्रिटेन के विदेश सचिव जेम्स क्लेवर्ली ने कहा कि ब्रिटेन किसी भी प्रकार के आतंकवाद की निंदा करता है। उन्होंने कहा, हम आतंकवादी हमलों को रोकने के लिए भारत व अपने अंतरराष्ट्रीय मित्रों से साथ काम करने के लिए तैयार हैं।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए विदेश मंत्री डॉ. एस जयशंकर ने कहा, जिस जगह पर 26/11 हमला हुआ था, उस जगह पर यूएनएससी की आतंकवाद-रोधी समिति का एक साथ आना काफी महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा, हमें मिलकर अंतरराष्ट्रीय समुदाय को यह संदेश देना चाहिए कि संयुक्त राष्ट्र और उसके सदस्य देश आतंकवादियों को जवाबदेह ठहराने में कभी हार नहीं मानेंगे। उन्होंने कहा, हमने 26/11 हमले के मास्टरमाइंड और अपराधियों को कटघरे में खड़ा करने का प्रयास किया है, लेकिन यह कार्य अभी अधूरा है। इस दौरान विदेश मंत्री डॉ. एस जयशंकर ने 26/11 स्मारक पर पुष्पांजलि अर्पित करते हुए कहा कि इस हमले को कभी नहीं भुलाया जा सकेगा।

सुरक्षा परिषद की कार्रवाई अफसोसजनक- विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कहा, आतंकवाद अंतरराष्ट्रीय शांति व सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा है। आज हमने पीड़ितों की आवाज सुनी है। हम इस आघात को हमेशा याद रखें और आतंकवादियों को न्याय के कटघरे में लाने का प्रयास करते रहें। उन्होंने कहा, आतंकवाद का मुकाबला करने का एक प्रमुख पहलू आतंकवाद के वित्तपोषण को प्रभावी ढंग से रोकना है।हालांकि, यह अफसोस की बात है कि जब आतंकवादियों में से कुछ को प्रतिबंधित करने की बात आती है तो सुरक्षा परिषद राजनीतिक कारणों से कार्रवाई करने में असमर्थ रहता है। यह हमारी सामूहिक विश्वसनीयता और हमारे सामूहिक हितों को कमजोर करता है।

सभी के हितों के लिए काम कर रही है मोदी-योगी की सरकार : केशव मौर्य

लखीमपुर। गोला विधानसभा के उपचुनाव के लिए भाजपा प्रत्याशी अमन गिरि के समर्थन में एक चुनावी जनसभा को संबोधित करते हुए डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि देश व प्रदेश की सरकार सभी के लिए सभी के हितों को साधकर आगे बढ़ रही है। उन्होंने कहा कि मोदी और योगी के नेतृत्व में सरकार सबका साथ सबका विकास के नारे के साथ काम करती है। सर्वांगीण विकास सरकार का मूल मंत्र है। सरकार गरीब कल्याण की योजनाएं बिजली पानी, सड़क, आवास, शिक्षा, स्वास्थ्य, फ्री राशन, उज्जवला योजना, आयुष्मान आदि योजनाएं उपलब्ध कराने का कार्य करती है। उन्होंने कहा कि सरकार के पास मोदी के 8 साल योगी के 5 साल के कार्य का मौका और अनुभव है। पहले अन्य पार्टियां देश के खजाने को लूटने का कार्य करती थी। अब सरकारी खजाना देश व प्रदेश के विकास पर लगाया जाता है। भाजपा विकास और सुशासन देने का काम कर रही है। विकास की गति दोगुनी हुई है। किसानों की आय बढ़ी है। हिंदुस्तान का गरीब मजदूर किसान मातृशक्ति बुजुर्ग नौजवान शोषित वंचित लोग मोदी का गुणगान करते हैं। सरकार ने भ्रष्टाचार पर रोक लगाई है, भ्रष्टाचारियों के यहां जांच में करोड़ों रुपया निकल रहा है। घोटाले बाजों व भूमाफियाओं व अपराध में लिप्त पेशेवर अपराधियों को जेल भेजा जा रहा है। जिससे विपक्षी भी बौखलाए हुए हैं। विशिष्ट अतिथि जल शक्ति मंत्री स्वतंत्र देव सिंह ने कहा कि देश और प्रदेश मे जितना विकास 70 सालों में नहीं हो पाया उतना भारतीय जनता पार्टी ने करके दिखाया है। सरकार ने गरीबों को रोटी, मंदिर दर्शन, टीकाकरण कारीडोर, भीमराव अंबेडकर सरदार पटेल के भव्य प्रतिमा लगाने व सम्मान दिलाने का काम किया है।

संपादकीय

बेतुके बयान

यहां तक कि वे मजाक तो अपने प्रतिद्वंद्वी का बनाना चाहते हैं, मगर हंसी का पात्र वे खुद बन जाते हैं। फिर भी खुद को सही साबित करने की जिद नहीं छोड़ते। आम आदमी पार्टी के संयोजक और दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के साथ भी केंद्र सरकार की खिल्ली उड़ाने की कोशिश में यही हो रहा है। डालर के मुकाबले रुपए की गिरती कीमत को लेकर केंद्र पर तंज कसते हुए उन्होंने कह डाला कि अब देश की अर्थव्यवस्था की मजबूती के लिए देवी-देवताओं के आशीर्वाद की जरूरत है। इसके लिए भारतीय नोटो पर गांधी जी की तस्वीर के साथ लक्ष्मी और गणेश का चित्र भी छापना शुरू कर देना चाहिए। इस तरह रुपए पर उनकी कृपा बनी रहेगी। अपनी बात में वजन डालने के लिए उन्होंने इंडोनेशिया के रुपए पर गणेश जी की तस्वीर छापने का उदाहरण भी दे दिया। स्वाभाविक ही उनके इस बयान को लेकर भाजपा को निशाना साधने का मौका मिल गया है। वह चुन-चुन कर उनके वे सारे बयान गिना रही है, जब केजरीवाल ने ऐसे प्रयासों के लिए भाजपा का विरोध किया था। गुजरात के विधानसभा और दिल्ली नगर निगम के चुनावों में आम आदमी पार्टी भाजपा को पटखनी देने के दावे कर रही है। इस तरह वह केंद्र सरकार की सारी नाकामियां गिनाती फिर रही है। इसी क्रम में केजरीवाल ने रुपए की हालत को मुद्दे के रूप में उठा लिया। मगर वे अर्थव्यवस्था को लेकर बात करते, तो शायद उतनी अटपटी न लगती, जितनी रुपए के स्वरूप को बदलने की उनकी सलाह लगी। छिपी बात नहीं है कि आम आदमी पार्टी भाजपा को उसके ही हथियार से हराना चाहती है। इसी कोशिश में केजरीवाल बार-बार खुद को भाजपा से अधिक राष्ट्रवादी और हिंदू हितैषी साबित करने का प्रयास करते दिखते हैं। पूरी दिल्ली में तिरंगा लगाने का मामला हो या फिर बुजुर्गों को तीर्थयात्रा पर भेजने का, हर मंच से इन्हें अपनी बड़ी उपलब्धियों में गिनाते रहे हैं। रुपए पर हिंदू देवी-देवताओं की तस्वीर छापने की सलाह भी उन्होंने इसी मंशा से दी कि इस तरह वे हिंदू वोटों को अपने पक्ष में कर सकेंगे। ऐसा नहीं माना जा सकता कि उन्हें इस बात की समझ न हो कि भारतीय रुपए पर किसी देवी-देवता की तस्वीर न छापने के पीछे मकसद क्या है। हमारा संविधान धर्मनिरपेक्ष सिद्धांतों पर बल देता है। यह ठीक है कि चुनावी माहौल में मतदाता चुटीले बयानों को देर तक याद रखते हैं। मगर इसका यह अर्थ कतई नहीं लगाया जा सकता कि इसका लाभ उठाने के लिए बेतुके बयान दिए जाएं। अरविंद केजरीवाल मुफ्त की सेवाओं का दावा कर जनमत अपने पक्ष में करने का नुस्खा लंबे समय से आजमाते आ रहे हैं। इससे लोग प्रभावित भी हैं, फिर उन्हें ऐसी क्या मजबूरी हो गई कि धार्मिक भावनाओं से खेलना शुरू कर दिया। क्या वास्तव में आम आदमी पार्टी के अपने मूलभूत सिद्धांतों से यह बयान कहीं मेल खाता है, जिसका सहारा उन्होंने लेना शुरू किया है। यह बयान देकर उन्होंने भाजपा को तो घेरने का मौका दे ही दिया है, दूसरे धर्मों और आस्था के लोगों या फिर पंथनिरपेक्ष मतदाताओं को नाराज करने का ही काम किया है। सत्ता हासिल करने के लिए कुछ भी दांव चल देना न सिर्फ लोकतांत्रिक मर्यादाओं के खिलाफ है, बल्कि पार्टी की सैद्धांतिक जमीन पर भी सवाल खड़े करता है।

मानवता के बरक्स

रूस ने यूक्रेन को ऐसे हमलों के लिए तैयार रहने की धमकी भी दी थी। यूक्रेन भी आशंका जता रहा है कि रूस ह्यडर्टी बमह्ल का इस्तेमाल कर सकता है। दरअसल, करीब दो हफ्ते पहले यूक्रेन की ओर से किए गए एक बड़े हमले के जवाब में रूस जिस तरह यूक्रेन के शहरों को निशाना बना कर हमले कर रहा है, उससे भारी तबाही की आशंका गहरी होती गई है। इस सिलसिले में भारत ने एक बार फिर दोहराया है कि किसी भी रूप में, किसी भी पक्ष द्वारा परमाणु हथियारों का उपयोग नहीं किया जाना चाहिए। यह मानवता के मूलभूत सिद्धांतों के खिलाफ होगा। इस मसले का हल कूटनीति और आपसी बातचीत से ही निकालने का प्रयास किया जाना चाहिए। रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने यह अपील अपने रूसी समकक्ष सर्गेई शोइगु से बातचीत के दौरान की। यह बातचीत रूस की पहल पर ही आयोजित हुई थी। हालांकि कहना मुश्किल है कि रूस भारत की इस अपील को कितनी गंभीरता से लेगा। जब युद्ध शुरू हुआ तबसे लेकर अब तक भारत कई बार यह बात दोहरा चुका है, मगर दोनों में से किसी भी देश ने अपने रुख में लचीलापन लाने का प्रयास नहीं किया। भारतीय प्रधानमंत्री कई बार फोन पर दोनों देशों के नेताओं से बातचीत करके आपसी संवाद के जरिए समाधान निकालने की सलाह दे चुके हैं। समरकंद में शंघाई शिखर सम्मेलन के दौरान जब रूसी राष्ट्रपति पुतिन से मुलाकात हुई तब भी उन्होंने यह बात कही थी। उस वक्त पुतिन ने उनकी सलाह पर अमल का भरोसा भी जताया था। मगर उसके कुछ दिन बाद ही रूस ने यूक्रेन पर भारी हमले शुरू कर दिए थे। रूस चाहता है कि यूक्रेन आत्मसमर्पण कर दे, मगर वह झुकने को तैयार नहीं। दरअसल, सोवियत संघ टूटने के बाद यूक्रेन ने रूस से अलग होकर स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में अपनी पहचान कायम की थी।

कुदरत से खिलवाड़ के खतरे

ऊपर से जलवायु नियंत्रण के लिए रासायनिक प्रयोगों ने आग में घी का काम तो नहीं कर दिया? आखिर क्यों जलवायु परिवर्तन को लेकर ढिंढोरा पीटने वाले दुनिया भर के चिंतक, राजनेता, शासक और शोध संस्थान चुप हैं या जानबूझ कर अनजान बने हुए हैं?

क्या बदलते, बेकाबू होते और छिन-पल बिगड़ते मौसम के लिए वे शोध और प्रयोग भी जिम्मेदार हैं, जिन्हें वैज्ञानिक तो कहा जा सकता है, लेकिन कुदरत के अनुकूल कतई नहीं। यह सवाल काफी हद तक चिंतित करता है और विश्वास करने पर मजबूर भी। सबसे गहरा सवालिया निशान चीन पर है, जिसने बीते दस वर्षों में मौसम में अपने अनुकूल सुधार के लिए लगभग पचास लाख प्रयोग कर डाले और अथाह पैसा बहाया। इसे लेकर चीन पर कई आरोप भी लगे। इसी जुलाई और अगस्त में चौंसठ दिनों तक चीन में जबर्दस्त लू चली, काफी गर्मी पड़ी। कई इलाकों का तापमान चालीस डिग्री को पार कर गया। बड़ी-बड़ी नदियां और दूसरे जलस्रोत सूखने लगे। फसलों को बचाने के लिए चीन ने बड़े पैमाने पर क्लाउड सीडिंग तकनीक अपनाई और बारिश कराई। दूसरे कई देश भी कभी प्रयोग, तो कभी जरूरत के लिए थोड़ा-बहुत इस तकनीक को अपनाते रहे हैं। तरीका वैज्ञानिक जरूर है, लेकिन प्रकृति-विरोधी है। जुलाई का महीना यों तो संयुक्त अरब अमीरात के लिए सूखा और गर्म होता है, लेकिन अबकी बार एक ही दिन में इतनी भयंकर बारिश हुई कि जितनी वहां पूरे साल में नहीं होती। इसमें आधा दर्जन से ज्यादा लोगों की जान चली गई। वहां भी जबसे कृत्रिम तरीके आजमाए जाने लगे हैं, तभी से ऐसा होने लगा है। कमोबेश यही स्थिति पिछले साल गर्मियों के दौरान जर्मनी और बेल्जियम में दिखी। वहां जबर्दस्त बाढ़ आई। मौसम के बिगड़ते रूप को सिर्फ तापमान से नहीं जोड़ सकते, क्योंकि सर्दी, गर्मी, बर्फबारी, बेमौसम बारिश और बाढ़ की तबाही के तमाम मंजर सामने हैं।

इधर भारत में अक्तूबर माह में लौटते मानसून के साथ आधे से ज्यादा देश में बाढ़, बारिश से तबाही का वह रूप दिखा जो अमूमन नहीं दिखता। देखना होगा कि क्यों पुणे में अक्तूबर के तीसरे हफ्ते में बारिश का एक सौ चालीस सालों का रिकार्ड टूटा? वहीं महाराष्ट्र के कई इलाकों में लौटते मौसम से खड़ी फसल बर्बाद हो गई। पूरे उत्तराखंड में अगस्त के आखिरी सप्ताह में बारिश का जबर्दस्त कहर दिखा। उत्तर प्रदेश में भारी और एकाएक बारिश से अक्तूबर के दूसरे हफ्ते में इटावा के पास बांध टूटने से सैकड़ों गांवों में पानी घुस गया। इसी तरह आजमगढ़ जिले में कैंची बांध भी भारी बारिश के दबाव से टूट गया और गहरी नींद में सोए सैकड़ों लोगों के घर डूबने लगे। आंबेडकर नगर और बाराबंकी में सरयू नदी से हजारों लोगों के आशियाने तबाह हो गए। यही हाल दर्जनों जिले में था। मध्यप्रदेश में बाणसागर की दो नहरें टूट गईं। इसी तरह दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में सितंबर के आखिरी हफ्ते की बारिश ने सबको हैरान कर दिया। पूरे देश में इस बारिश ने अपना अलग ही रंग दिखाया। बंगलुरु में बारिश की तबाही ने नब्बे साल का रिकार्ड तोड़ दिया। पड़ोसी नेपाल, पाकिस्तान, बांग्लादेश के हालात भी हम से अच्छे नहीं रहे। मौसम के ऐसे परिवर्तन के लिए दूसरे ज्ञात तत्त्व भी जिम्मेदार हैं, जिनमें जंगलों का अंधाधुंध दोहन, पहाड़ों को गिट्टियों में बदलना, नदियों से अंधाधुंध रेत निकालना, जीवाश्म ईंधन- कोयला, पेट्रोल, डीजल, मिट्टी के तेल के बेहिसाब उपयोग से वायुमंडल को प्रदूषित करना और तापमान बढ़ाने वाली गैसों का अंधाधुंध उत्सर्जन, सबको पता है। मगर कम सुर्खियों और चचाओं में रहे क्लाउड

सीडिंग और दूसरी जलवायु नियंत्रण तकनीकों के प्रभावों और परिणामों पर भी गंभीर वैज्ञानिक मंथन करना होगा। कृत्रिम बारिश, बर्फबारी नियंत्रण, तापमान नियंत्रण के प्रयासों के परिणामों को भी जानना होगा। वायुमंडल का तापमान बढ़ाने के लिए पहले ही औद्योगीकरण और शहरीकरण काफी हद तक जिम्मेदार हैं, जिससे ग्रीन हाउस गैसों का संतुलन प्रभावित हो गया है। वर्ल्ड मेट्रोलाजिकल आर्गनाइजेशन की एक रिपोर्ट बताती है कि दुनिया भर के छप्पन देश क्लाउड सीडिंग का प्रयोग कर रहे हैं, मगर फायदे-नुकसान पर चुप्पी साधे हुए हैं। इस बारे में यदा-कदा ही कुछ सामने आता है, पर दावे के साथ कोई कुछ भी कहने की स्थिति में नहीं है कि ऐसे प्रयोग प्रकृति के लिए फायदेमंद हैं या नुकसानदेह! अपने-अपने तर्क जरूर देकर खुद ही तसल्ली कर लेते हैं। मगर हाल ही में जिस तरह के प्रकृति के प्रकोप एकाएक सामने आए हैं, उनकी वजहों को ढूंढ़ना ही होगा।

ऐसा क्यों हो रहा है, इसके पीछे कौन से वैज्ञानिक प्रयोग हैं या प्राकृतिक वजहें ही हैं, जिस पर ज्यादा चचाएं या बैठकें नहीं हुईं। भले यह मानने का कोई आधार नहीं है, लेकिन क्या पड़ोस में क्लाउड सीडिंग के जरिए की गई रासायनिक क्रियाओं के दुष्परिणामों का असर तो नहीं? हो सकता है, देर-सबेर सच सामने आए, लेकिन जिस तरीके से मौसम को नियंत्रित करने की कोशिशों के दौरान पास-पड़ोस में असामन्य परिवर्तन या प्रभाव दिख रहा है उसका जवाब तो जरूरी है। क्या क्लाउड सीडिंग के दौरान बादलों पर सिल्वर आयोडाइड और दूसरे रसायनों के छिड़काव और प्रयोगों से कोई रासायनिक क्रिया हुई, जो वायुमंडल में ही एक पाकेट बन कर आसमान में अदृश्य गैसों के रूप में इकट्ठी होती रही, जिसका हमें पता ही नहीं चला? ये अदृश्य गैस पाकेट मौसमी हवाओं के रुख के साथ चल पड़े और लगातार चलते-चलते प्राकृतिक क्रियाओं के सामने अपना असर खोते गए, जिससे रासायनिक क्रियाओं से बनी सघनता और जटिलता ढीली पड़ने लगी। जहां-जहां ऐसे पाकेट बेहद कमजोर हुए, वहां एकाएक और तेज बारिश के रूप में फूट पड़े! यह केवल कयास या शंकाएं हैं, लेकिन आधारहीन नहीं हैं।

जलवायु नियंत्रण को लेकर एक अलग तरह की चिंता भी दिख रही है। क्या भविष्य में इसका दुरुपयोग सत्ता की खातिर युद्ध की विभीषिका के रूप में भी किया जा सकता है? दुश्मन देश की निगाहें जिस देश या सत्ता को अस्थिर करने पर हों, वहां पर ऐसे नियंत्रणों से बेतरतीब तबाही करके भी एक तरह से विजय हासिल की जा सकती है। अगर ऐसा हुआ और जिसको लेकर जरूर कभी-कभार चिंताएं झलकनीं शुरू हो गईं हैं, तो यह अलग ही तरह के युद्ध का भयानक दौर होगा। इसका प्रभावित क्षेत्र के आम जनजीवन पर असर तो पड़ेगा ही, प्रकृति के साथ भी बहुत बड़ी बेरहमी होगी, जिसकी भरपाई लगभग नामुमकिन-सी होगी। बेशक, अत्यधिक ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में तेजी से जलवायु परिवर्तन हो रहा है, जिसका वैश्विक तापमान पर सीधा असर पड़ा है। वहीं क्लाउड सीडिंग या सर्दी, गर्मी, बारिश, बर्फ पर ऐसे गैर-प्राकृतिक तरीकों से नियंत्रण और मनमाफिक क्रियाकलापों से जलवायु चक्र भटकता, टूटता और प्रभावित होता है। यह भी गैर-प्राकृतिक प्रयोगों का दुष्परिणाम है। प्रदूषण और प्राकृतिक संसाधनों के बेहिसाब दोहन से पहले ही प्रकृति का संतुलन बिगड़ चुका है, ऊपर से जलवायु नियंत्रण के लिए रासायनिक प्रयोगों ने आग में घी का काम तो नहीं कर दिया? आखिर क्यों जलवायु परिवर्तन को लेकर ढिंढोरा पीटने वाले दुनिया भर के चिंतक, राजनेता, शासक और शोध संस्थान चुप हैं या जानबूझ कर अनजान बने हुए हैं?

सनातन संस्था के सत्संगों मे बताया गया सूर्य षष्ठी (छठ) पूजा का शास्त्र

पटना - हमारे देश में सूयोर्पासना के लिए प्रसिद्ध पर्व है छठ । मूलतः सूर्य षष्ठी व्रत होने के कारण इसे छठ कहा गया है । यह पर्व वर्ष में दो बार मनाया जाता है । पहली बार चैत्र में और दूसरी बार कार्तिक में । चैत्र शुक्लपक्ष षष्ठीपर मनाए जानेवाले छठ पर्व को चैती छठ व कार्तिक शुक्लपक्ष षष्ठीपर मनाए जानेवाले पर्व को कार्तिकी छठ कहा जाता है । पारिवारिक सुख-स्मृद्धि तथा मनोवांछित फलप्राप्ति के लिए यह पर्व मनाया जाता है । इस पर्व को स्त्री और पुरुष समानरूप से मनाते हैं । लोक आस्था के इस पावन पर्व की महिमा सनातन संस्था के सत्संगों में बतायी गई ।

१. छठ पूजा कथा इतिहास

लोकपरंपरा के अनुसार सूर्य देव और छठी मइया का संबंध भाई-बहन का है । लोक मातृका षष्ठी की पहली पूजा सूर्य ने ही की थी । त्रेतायुग में भगवान राम जब माता सीता से स्वयंवर करके घर लौटे थे और उनका राज्याभिषेक किया गया, उसके पश्चात उन्होंने पूरे विधान के साथ कार्तिक शुक्ल पक्ष की षष्ठी को पूरे परिवार के साथ यह पूजा की थी; तभी से इस पूजा का महत्त्व है । द्वापरयुग में जब पांडव ने अपना सर्वस्व गंवा दिया था, तब द्रौपदी ने इस व्रत का पालन किया । वर्षों तक इसे नियमित करने पर पांडवों को उनका सर्वस्व वापस मिला था । इसकी पौराणिक कथा कुछ इस प्रकार है ।

बहुत समय पहले एक राजा-रानी हुआ करते थे । उनकी कोई संतान नहीं थी । राजा इससे बहुत दुःखी थे । महर्षि कश्यप उनके राज्य में आए । राजा ने उनकी सेवा की । महर्षि ने आशीर्वाद दिया जिसके प्रभाव से रानी गर्भवती हो गई; परंतु उनकी संतान मृत पैदा हुई जिसके कारण राजा-रानी अत्यंत दुःखी थे और दोनों ने आत्महत्या का निर्णय लिया । जैसे ही वे दोनों नदी में कूदने लगे, उन्हें छठी माता ने दर्शन दिए और कहा कि ह्यआप मेरी पूजा करें जिससे आपको अवश्य संतान प्राप्ति होगी। राजा-रानी ने विधि-विधान से छठी माता की पूजा की और उन्हें स्वस्थ संतान की प्रापति हुई । तब से ही कार्तिक शुक्ल पक्ष की षष्ठी को यह पूजा की जाती है ।

२. छठ पूजा का वैज्ञानिक महत्व

छठ पर्व की परंपरा में बहुत ही

गहरा विज्ञान छिपा हुआ है, षष्ठी तिथि (छठ) एक विशेष खगौलीय अवसर है । उस समय सूर्य की पराबैगनी किरणें पृथ्वी की सतहपर सामान्य से अधिक मात्रा में एकत्र हो जाती हैं । उसके संभावित कुप्रभावों से मानव की यथासंभव रक्षा करने का सामर्थ्य इस परंपरा में है । पर्वपालन से सूर्य (तारा) प्रकाश (पराबैगनी किरण) के हानिकारक प्रभाव से जीवों की रक्षा संभव है । पृथ्वी के जीवों को इससे बहुत लाभ मिल सकता है ।

सूर्य के प्रकाश के साथ उसकी पराबैगनी किरण भी चंद्रमा और पृथ्वीपर आती हैं । सूर्य का प्रकाश जब पृथ्वीपर पहुंचता है, तो पहले उसे वायुमंडल मिलता है । वायुमंडल में प्रवेश करनेपर उसे आयन मंडल मिलता है । पराबैगनी किरणों का उपयोग कर वायुमंडल अपने ऑक्सीजन तत्त्व को संश्लेषित कर उसे उसके एलोट्रोप ओजोन में बदल देता है । इस क्रियाद्वारा सूर्य की पराबैगनी किरणों का अधिकांश भाग पृथ्वी के वायुमंडल में ही अवशोषित हो जाता है । पृथ्वी की सतहपर केवल उसका नगण्य भाग ही पहुंच पाता है । सामान्य अवस्था में पृथ्वी की सतहपर पहुंचनेवाली पराबैगनी किरण की मात्रा मनुष्यों या जीवों के सहन करने की सीमा में होती है । अतः सामान्य अवस्था में मनुष्योंपर उसका कोई विशेष हानिकारक प्रभाव नहीं पडता, बल्कि उस धूपद्वारा हानिकारक कीटाणु मर जाते हैं, जिससे मनुष्य या जीवन को लाभ ही होता है ।

छठ जैसी खगौलीय स्थिति (चंद्रमा और पृथ्वी के भ्रमण तलों की सम रेखा के दोनों छोरोंपर) सूर्य की पराबैगनी किरणें कुछ चंद्र सतह से परावर्तित तथा कुछ गोलीय अपवर्तित होती हुई, पृथ्वीपर पुनः सामान्य से अधिक मात्रामें पहुंच जाती हैं । वायुमंडल के स्तरों से आवर्तित होती हुई, सूर्यास्त तथा सूर्योदय को यह और भी सघन हो जाती है । ज्योतिषीय गणना के अनुसार यह घटना कार्तिक तथा चैत्र मास की अमावस्या के छः दिन उपरांत आती है । ज्योतिषीय गणनापर आधारित होने के कारण इसका नाम और कुछ नहीं, बल्कि छठ पर्व ही रखा गया है ।

पवित्रता और श्रद्धा का प्रतीक यह पर्व अधिकाधिक भाव पूर्ण रूप से मनाकर इस सूर्य देवता और छठी माता की कृपा प्राप्त करें ।

दिव्यांगो को किया शामिल खुद की खुशियों में

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। समाज सेवा तथा चिकित्सा के क्षेत्र में देश विदेश तक अपनी पहचान बनाने वाले प्रबुद्ध डॉक्टर डीपी सिंह का 50 वा वर्षगांठ समर्पण संस्था द्वारा संचालित राजेश्वरी विकलांग विद्यालय एवं व्यवसायिक प्रशिक्षण केंद्र के द्वितीय शाखा फतुल्लापुर में दिव्यांग बच्चों के साथ मनाया गया`इस अवसर पर श्री सिंह ने केक काटकर जन्मदिन की बधाई बच्चों को भी दी`इस अवसर पर सिंह ने कहा कि यह मेरा पहला जन्मदिन है जो ऐसे बच्चों के साथ मनाया जा रहा है`जो दिव्यांग के रूप में छात्रा एवं छात्र हैं`इस संस्था की संरक्षिका सविता सिंह को धन्यवाद देते हुए कहा कि मेरे जन्मदिन को आपने की यादगार जन्मदिन बना दियो मेरे जीवन का पहला जन्मदिन है मैं इसे अपने जीवन काल में कभी भूल नहीं पाऊंगो हमें काफी हर्ष है ,कि मुझे ऐसे बच्चों के साथ अपनी वर्षगांठ मनाने का अवसर मिलो इस अवसर पर उन्होंने कहा कि इस संस्था का जो प्यार अधूरा आज मुझे मिला है आज मै घोषणा करता हूं कि आज से इस संस्था के लिए तन मन धन से पूरी तरह समर्पित रहूंगा। मैं अपनी क्षमता अनुसार हर संभव मदद करने की पूरी कोशिश करूंगो इस अवसर पर सविता सिंह ने बच्चे द्वारा स्क्रैच की हुई तस्वीर तथा बुके देकर उनका स्वागत किया`जन्मदिन की ढेर सारी बधाई दी`श्री सिंह ने विद्यालय के बच्चों को मिठाई ,भोजन ,चॉकलेट तथा गिफ्ट देकर उनका उत्साहवर्धन कियो गिफ्ट पाकर बच्चों ने इस तरह उनका स्वागत किया जैसे उनके अंदर भगवान मिल गया हो`इस प्यार को देखकर डॉ डीपी सिंह भाव विभोर हो उठे`इस अवसर पर उनके साथ उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रीता सिंह (प्रबंध निदेशक राम सखी देवी सेवाश्रम हॉस्पिटल गाजीपुर)साथ में डॉक्टर वरुण नागवंशी (जिला चिकित्सक जिला हॉस्पिटल गाजीपुर)डॉक्टर पल्लव नागवंशी एवं डॉ मनोज मिश्रा ,श्री रविंद्र नाथ सिंह विद्यालय के प्रधानाध्यापक अमरनाथ गुप्ता ,अशोक यादव ,अतेंद्र पाल ,रवि प्रकाश यादव ,नाजिया बेगम ,लक्ष्मी वर्मा ,सुमन सिंह, राजेश कुमार आदि लोग मौजूद रहे।

सुनक को भाग्य ने प्रधानमंत्री तो बना दिया, अब कर्मों से उन्हें समस्याओं पर काबू पाकर दिखाना होगा

भारतीय मूल के ऋषि सुनक ब्रिटेन के अगले प्रधानमंत्री होंगे। उन्हें कंजर्वेटिव पार्टी का नेता चुन लिया गया। वो ब्रिटेन के पहले एशियाई मूल के भी प्रधानमंत्री होंगे। सर ग्राहम ब्रैडी ने इसकी औपचारिक घोषणा कर दी है। सुनक को करीब 200 सांसदों का समर्थन मिला। इससे पहले उनकी प्रतिद्वंद्वी पेनी मॉरडॉन्ट ने मात्र 26 सांसदों का ही समर्थन मिलता देख अपनी दावेदारी दावेदारी वापस ले ली थी। इस घटनाक्रम को देख किंग चार्ल्स लंदन लौट आए। लिज ट्रस ने उन्हें इस्तीफा सौंप दिया। इसके कुछ देर बाद किंग चार्ल्स ने ऋषि सुनक को प्रधानमंत्री का नियुक्ति पत्र सौंप दिया। 28 अक्टूबर को सुनक प्रधानमंत्री पद की शपथ लेंगे। इसके बाद 29 अक्टूबर को कैबिनेट का ऐलान किया जाएगा।

प्रधानमंत्री पद के नाम के ऐलान के बाद सुनक ने पार्टी के नेताओं के सामने अपना पहला भाषण दिया। उन्होंने सबसे पहले त्यागपत्र देने वाली प्रधानमंत्री लिज ट्रस को "देश और दुनिया की मुश्किल परिस्थितियों में उनके नेतृत्व" के लिए शुक्रिया कहा। उन्होंने कहा, "मैं जिस पार्टी से प्यार करता हूं, उसकी सेवा करना और अपने देश को कुछ वापस दे पाना मेरे जीवन का सबसे बड़ा सम्मान है।" उनकी विजय पर भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उन्हें बधाई संदेश भेजा है।

हम भारतीय भाग्य को मानते हैं। ऋषि सुनक के प्रधानमंत्री बनने में भी उनके भाग्य का प्रबल होना रहा। ऋषि सुनक के भाग्य ने जोर मारा और ब्रिटेन के प्रधानमंत्री लिज ट्रस ने त्यागपत्र दे दिया। उनका कार्यकाल मात्र 45 दिन रहा। यदि वे त्यागपत्र न देतीं तो ऋषि सुनक प्रधानमंत्री न बन पाते। वे प्रधानमंत्री बन तो गए लेकिन उनके सामने चुनौती बहुत होंगी। चुनौती के सामने आकर मुकाबला कर अपने को इन हालात पर काबू पाने में सक्षम साबित करना है। साबित करना है कि वे पहले प्रधानमंत्री लिज ट्रस की तरह 45 दिन में भागने वाले नहीं हैं। इस पद पर रहकर उन्हें श्वेतों का जहां विश्वास जीतना है। देश के हितों के लिए दिन-रात काम करना होगा, उन्हें ब्रिटेन में रहने वाले भारतवंशियों के हितों का भी ध्यान देना है। ऋषि सुनक भारतीय मूल से हैं, इसलिए भारत देश, यहां की जनता के और भारत के विकास के लिए काम करना होगा। भारत के लोगों के लिए ब्रिटेन में सरल आवाजाही और रहने की व्यवस्था उपलब्ध करानी होगी। 42 साल के ऋषि सुनक हिंदू हैं और धार्मिक तौर तरीके भी अपनाते हैं। साल 2015 में संसद का पहली बार चुनाव जीतने के बाद उन्होंने गीता पर हाथ रखकर शपथ ली थी। ऋषि भारतीय सॉफ्टवेयर कंपनी इंफोसिस के को-फाउंडर नारायण मूर्ति के दामाद हैं। ऋषि सुनक के पेरेंट्स पंजाब के रहने

वाले थे, जो विदेश में जाकर बस गए। सुनक का जन्म ब्रिटेन के हैंपशायर में हुआ था। ऋषि ने अमेरिका की स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी से एमबीए किया है। सुनक की जीत का एक बड़ा कारण उनकी बैंकर की छवि रही है। बतौर प्रधानमंत्री लिज ट्रस के विफल रहने का सबसे बड़ा कारण उनका आर्थिक मोर्चे पर विफल रहना था। ब्रिटेन में महंगाई चुनाव का अहम मुद्दा रहा। ब्रिटेन में आर्थिक अस्थिरता भी रही। इसके बाद जॉनसन सरकार में वित्त मंत्री रह चुके सुनक इकोनॉमिक बेल आउट प्लान लाए थे। इस प्लान को मिडिल क्लास ने खासा सराहा था और लोगों के बीच उनकी लोकप्रियता बढ़ गई। दरअसल डेढ़ माह पूर्व हुए चुनाव में भी शुरूआती चरण में ऋषि सुनक लिज ट्रस से काफी आगे थे। वह अंतिम चरण में इसलिए पिछड़ गए कि कंजर्वेटिव पार्टी के श्वेत सांसद किसी अश्वेत को अपने ऊपर बैठा देखना नहीं चाहते थे। कंजर्वेटिव पार्टी के 97 प्रतिशत सदस्य श्वेत यानी गोरे हैं। उनमें भी 50 प्रतिशत से अधिक पुरुष हैं। कुल सदस्यों में से 44 प्रतिशत ऐसे सदस्य हैं, जिनकी उम्र 65 साल से ज्यादा है। लिहाजा, उनकी पहली पसंद लिज ट्रस ही थीं। बताया गया कि पूरे चुनाव के दौरान कंजर्वेटिव पार्टी की युवा पीढ़ी ऋषि के पक्ष में खुलकर नजर आई, लेकिन वरिष्ठ सदस्यों का झुकाव लिज ट्रस की तरफ साफ दिखाई दिया। पुराने और गोरे सांसद नहीं चाहते थे, कि हमारे गुलाम देश का कोई अश्वेत हमारा प्रधानमंत्री बने। इसी कारण पिछली बार हुए चुनाव के आखिर में वह पिछड़ गए। जबकि उन्हें भारतवंशियों का भरपूर समर्थन भी मिल रहा था।

इस्तीफा देने वाली लिज ट्रस की सरकार में कुछ मंत्री भारत विरोधी थे। भारतीय मूल की ब्रिटेन की गृह मंत्री सुएला ब्रेवरमैन ने अपने एक बयान में भारत ब्रिटेन के मुक्त व्यापार समझौते का विरोध किया था। कहा था कि इस डील के बाद भारतीयों की ब्रिटेन में भीड़ बढ़ जाएगी। हालांकि बाद में वह अपने इस बयान से पलट गईं। बुधवार को अपने विवादित बयान पर सफाई देते हुए उन्होंने कहा कि भारतीय प्रवासियों के कारण ब्रिटेन आज समृद्ध है। लगता है कि ऋषि सुनक के प्रधानमंत्री बनने के बाद ब्रिटेन सरकार के मंत्रियों के व्यवहार में परिवर्तन आएगा। ब्रिटेन आने के इच्छुक भारतीयों को सरल और सस्ता वीजा मिलेंगे। मुक्त व्यापार के समझौते को लागू करने में आ रही समस्याओं को वह खुद रूचि लेकर निपटाएंगे। जो श्वेत सांसद किसी अशवेत को प्रधानमंत्री नहीं देखना चाहते थे, उनके सामने ऋषि सुनक को अपनी काबलियत साबित करनी होगी। उनके सामने सिद्ध करना होगा कि विद्वता में अश्वेत किसी से कम नहीं हैं। एक किस्सा आता है कि एक राज्य के राजा का निधन हुआ। राज्य का नियम था कि राजा के निधन के अगले दिन राजा का हाथी नगर में अपनी सूंड में माला लेकर निकलता। नगर में घूमने वाले जिस व्यक्ति को वह माला पहना देता, वह अगले पांच साल के लिए राजा बन जाता। एक व्यक्ति ऐसे ही राजा बना। उसने वहां की समस्या समझी। उनका निदान किया। राज करते पांच साल हो गए। व्यवस्था थी कि पांच साल बाद राजा नगर के किनारे से बहने वाली नदी को परिवार सहित पार कर दूसरी ओर जाता। इस नदी में बड़े-बडे घड़ियाल रहते थे। ये घड़ियाल राजा और उसके परिवार को खा जाते। राजा के नदी पार करने का दिन आया। पूरे राज की जनता राजा की विदाई का दृश्य देखने नदी के किनारे एकत्र हुई।

9 दिवसीय शान्ति सद्भावना पदयात्रा का शानदार आगाज

प्रखर वाराणसी। समाज मे शांति, सद्भावना, प्रेम और भाईचारे का संदेश लेकर 9 दिवसीय शांति एवं सद्भावना यात्रा का शुभारंभ शुक्रवार को वाराणसी के लहरतारा स्थित संत कबीर प्राकट्य स्थल से किया गया। पदयात्रा का आयोजन साझा संस्कृति मंच वाराणसी एवं जन आंदोलनो के राष्ट्रीय समन्वय के संयुक्त तत्वावधान में किया गया है। कबीरपंथ के महंत गोविंद दास जी ने हरी झंडी दिखाकर यात्रा का शुभ आरंभ किया. इस अवसर पर यात्रा का उद्देश्य बताते हुए संयोजक नंदलाल मास्टर ने कहा कि शांति और सदभाव आदमी की बुनियादी जरूरत है। देश के नागरिक खुद को समृद्ध और सुरक्षित तभी महसूस कर सकते हैं जब उनके आसपास शांति हो, सद्भाव हो। हालांकि भारत में सभी तरह के लोगों के लिए काफी हद तक शांतिपूर्ण माहौल है लेकिन अफसोस , विभिन्न कारणों से देश की शांति और सदभाव कई बार बाधित हो जाती है। ऐसे में यह पदयात्रा लोगों में आपस मे मिलजुल कर रहने का संदेश देने के लिए आयोजित की गई है। गांधीवादी चिंतक एवं इतिहासकार डॉ मोहम्मद आरिफ ने कहा कि भारत की खासियत विविधता में एकता है। विभिन्न धर्मों, जातियों और पंथों के लोग यहाँ एक साथ रहते हैं। भारत का संविधान अपने नागरिकों को समानता और स्वतंत्रता की गारंटी देता है। शांति और सद्भाव सुनिश्चित रहें , इसके लिए विभिन्न कानून बनाए गए हैं। अन्य वक्ताओं ने कहा कि एक ओर हिन्दुओं के पूज्य काशी विश्वनाथ जी की दिव्य उपस्थिति तो दूसरे ओर महात्मा बुद्ध के प्रथम उपदेश दिए जाने से बनारस बौद्धों का श्रद्धास्थल बना। जैन धर्म के तीन तीर्थंकर यंही जन्मे। विज्ञान और तर्क के समर्थक कबीर, पतंजलि और संत रविदास के होने से बनारस योग सुफिज्म से जुड़ ज्ञानमार्गी बना, इसलिए यह यात्रा संत कबीर के प्राकट्य स्थल से प्रारम्भ होकर वाराणसी के सभी विकासखण्डों से होती हुई 5 नवम्बर को भगवान बुद्ध की प्रथम उपदेश स्थली सारनाथ में समाप्त होगी।

यात्रा के दौरान सांस्कृतिक टीम प्रेरणा कला मंच के कलाकारों द्वारा विभिन्न जनवादी गीतों के माध्यम से प्रेम और भाईचारे का संदेश दिया जा रहा है। यात्रा में प्रमुख रूप से नंदलाल मास्टर, गोविंदा दास, सतीश सिंह, सुरेश प्रताप सिंह, रामधीरज भाई,पारमिता, डॉ मुनीजा रफीक, सुरेंद्र सिंह, राजेश, अनिता, डॉ इंदु पांडेय, मैत्री, प्रियंका, पूनम, माला, मुस्तफा, सीमा, निशा, वंदना, फातिमा, नीति, मनोज यादव, माया कुमारी, प्रदीप सिंह, कन्हैयालाल, अजय पॉल, मधुबाला, शालिनी, चंदन, आशा राय, अमित, मुकेश, राजेश, गणेश, मनीष, सिकन्दर आदि शामिल हैं। पदयात्रा का शुक्रवार की रात्रि का पड़ाव रोहनिया के निकट घाटम पुर गांव में होगा जहां से शनिवार को सुबह आगे की यात्रा प्रारम्भ होगी।

अराजक तत्वों ने गुमटी में लगाई आग हजारों का माल जलकर हुआ खाक

प्रखर केराकत जौनपुर। कोतवाली थाना क्षेत्र के थानागद्दी पुलिस चौकी से लगभग चार सौ मीटर दूर लबे रोड पर थानागद्दी मोढैला मार्ग पर स्थित एक गुमटी में अराजकतत्वों ने बीती रात फूंक दी। पीड़ित ने पुलिस से इसकी शिकायत की तो थानागद्दी पुलिस ने गुमटी जलने की वजह शार्ट सर्किट बताकर पल्ला झाड़ लिया। जानकारी के अनुसार थानागद्दी जखियां गांव निवासी सत्यनारायण सिंह की पुलिस चौकी से करीब चार सौ मीटर दूर थानागद्दी बाजार में गुमटी वाली पान की दुकान थी। दुकानदार रोज की भांति गुरुवार की रात्रि लगभग नौ बजे दुकान बंद करके घर चले गए. रात किसी अराजक तत्वों ने गुमटी फूंक दी। आश्चर्य यह कि चौकी से केवल चार सौ मीटर की दुरी पर गुमटी जल गई और क्षेत्रीय लोगों के साथ साथ पुलिस को इसका पता तक नहीं चला।बाजारवासी सुबह टहलने के लिए निकले तब गुमटी के जल कर राख होने का पता चला. फोन पर घटना की सूचना मिलने के बाद पीड़ित तत्काल मौके पर पंहुचा। आस पास के लोग भी जुट गए भीड़ लग गई लोग गुमटी फूंकने वाले को कोस रहे थे. पुलिस को सूचना के घंटो बाद बीट सिपाही घनश्याम सिंह मौके पर पहुंचे और बिना पड़ताल किए शॉर्ट-सर्किट का राग अलापना शुरू कर दिया। जब पीड़ित व उपस्थित लोगों ने विरोध किया तो चौकी पर आकर लिखित तहरीर देने की बात कह कर वहां से निकल गए पीड़ित ने चौकी पहुंचकर अज्ञात के खिलाफ गुमटी फूंकने की तहरीर दी. पीड़ित ने बताया कि गुमटी में लगभग सत्तर हजार रुपए की संपत्ति थी। इसके आलावा कुछ जरूरी कागजात भी थे. सबकुछ जलकर खाक हो गया. पुलिस की शिथिलता के चलते आपराधिक घटनाएं बढ़ गई हैं।पुलिस रात में गश्त नहीं करती। नतीजा हर दिन कुछ न कुछ छोटी बड़ी घटनाएं हो रही है। जानकारी के मुताबिक पिछले दो महीने में क्षेत्र में लगभग एक दर्जन घटनाएं हो चुकी हैं पुलिस किसी का खुलासा नहीं कर पाई. अपराधी खुलेआम घूम रहे है. पुलिस की कार्यप्रणाली से नागरिकों में रोष है। नागरिक पुलिस के खिलाफ प्रदर्शन करने का बना रहे हैं मन।

संक्षिप्त खबरें

चयनित किसानों को कृषि विज्ञान केंद्र आंकुशपुर द्वारा उत्तम बीज वितरित

प्रखर गाजीपुर। आचार्य नरेंद्र देव कृषि विश्वविद्यालय के अंतर्गत संचालित कृषि विज्ञान केंद्र आकुशपुर गाजीपुर में के अंतर्गत 5 किसानों को अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अंतर्गत प्याज की एएफएलआर प्रजाति का बीज वितरण किया गया कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक व हेड डॉ आर सी वर्मा ने बताया की अच्छी पैदावार के लिए बीज की बुवाई से पहले बीज को कैप्टन या कार्बेंडाजिम ढाई ग्राम मात्रा प्रति किलो बीज की दर से शोधित कर लेना चाहिए सस्य वैज्ञानिक डॉक्टर जेपी सिंह प्याज की फसल में खरपतवार नियंत्रण हेतु तीन से चार निराई गुड़ाई की रासायनिक करनी चाहिए मृदा वैज्ञानिक डॉ अविनाश कुमार राय ने बताया कि प्याज के लिए बलुई दोमट मृदा जिसका पीएच 6.5 से 7.5 के मध्य हो मिट्टी कार्बनिक पदार्थ युक्त हो अच्छी मानी जाती है उद्यान वैज्ञानिक डॉ शशांक सिंह ने बताया कि रबी की फसल के लिए बीज की बुवाई मानसून समाप्ति के बाद अक्टूबर अंत तक करके 45 से 60 दिनों की पौध का रोपण नवंबर दिसंबर में कर लें जिससे फसल की पैदावार अच्छी लगती है।

छठ पूजा की बेदी बनाने गये चाचा और भतीजा की गंगा में डूबकर मौत

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। करण्डा थाना क्षेत्र के गोशन्देपुर गांव के गंगा घाट पर स्नान करते वक्त दो युवक डूब गए। गंगा में डूबे दोनों युवक आपस में चाचा भतीजा बताए जा रहे हैं। सूचना पर पहुंची पुलिस ने कड़ी मशक्कत के बाद शव बरामद कर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। बताया जा रहा है कि स्थानीय गांव निवासी ओम गिरी(14) और सुजीत गिरी (27) घाट पर पूजा की बेदी बनाने गए थे। इसके बाद दोनों गंगा में स्नान कर रहे थे कि डूब गए। थोड़ी ही देर में वहां लोगों की भीड़ जमा हो गई और मौके पर पहुंची पुलिस टीम ने गोताखोरों की मदद से दोनों का शव बरामद कर लिया है। मौके का निरीक्षण करने सीओ और एसडीएम भी पहुंच गए।

कलशयात्रा निकाल छठ माता मुर्ति का हुआ स्थापना

प्रखर गोरखपुर। घघसरा के पाली क्षेत्र के ग्राम पंचायत मांट में छठ माता की शुक्रवार को भव्य कलश यात्रा निकाली गई । जिसमें भारी संख्या में महिलाएं एवं पुरुष शामिल रहे। यह कलश यात्रा ग्राम पंचायत मांट बाजार से निकाल कर राप्ती नदी के तट सिसई घाट पर 151कन्याओं ने जलभर पुनः वापस चोरमा नारा के पास बना छठ मंदिर पहुंच कर समाप्त हुआ। और शास्त्र ज्ञाताओं द्वारा वैदिक मंत्रोच्चार से छठी मईया मुर्ति प्राण प्रतिष्ठा किया गया। छठ मंदिर निर्माण से लेकर मुर्ति स्थापना में मुख्य सहभागिता मांट गांव निवासी नन्दलाल निषाद का रहा है । इस कलश यात्रा में मुख्य रूप से प्रधान प्रतिनिधि रामदवन निषाद,बेचन प्रसाद,राजेश साहनी, विजय यादव,सोनू साहनी, सुनील साहनी, दीनानाथ चौहान, गोविन्द साहनी, प्रताप साहनी, जामवंत निषाद सहित तमाम महिला एवं पुरुष शामिल रहे।

सीएमओ ने सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र का किया निरीक्षण

प्रखर केराकत जौनपुर । सीएमओ डॉ लक्ष्मी सिंह ने शुक्रवार को सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र का निरीक्षण किया एक बजे अस्पताल पहुंची सीएमओ ने करीब 20 मिनट तक अस्पताल में रहीं उनके आने की सूचना पर सभी स्वास्थ्यकर्मी अस्पताल पहुंच गए थे।निरीक्षण के दौरान सीएमओ से अकबरपुर गांव के पंकज कुमार सिंह ने अस्पताल से अधिकांश डॉक्टरों के गायब रहने की शिकायत की। जिस पर उन्होंने चिकित्सा अधीक्षक को टाइट करने की बात बोलकर चली गई।अस्पताल में किसी न किसी को लेकर डॉक्टर को दिखाने पहुंचे कुसैला गांव के अलोक सिंह, सुल्तानपुर गांव के रोशन सिंह ने कहा कि सीएचसी पर न तो समय पर चिकित्सक मिलते हैं और न पूरी दवा।वही स्थानीय नागरिकों ने कहा कि सीएमओ की अनदेखी और यहां के डॉक्टरों की मनमानी के चलते मरीज निजी अस्पतालों का रुख करने लगे हैं।

पुलिस अधीक्षक द्वारा साप्ताहिक परेड की सलामी लेकर किया गया परेड का निरीक्षण

प्रखर मिजार्पुर।अधीक्षक ह्यसंतोष कुमार मिश्राह्व द्वारा शुक्रवार की साप्ताहिक परेड के दौरान पुलिस लाइन स्थित परेड ग्राउण्ड पर परेड की सलामी लेकर परेड का निरीक्षण किया गया तत्पश्चात जवानों को शारीरिक व मानसिक रूप से फिट रहने के लिए दौड़ व पुश-अप लगवायी गयी, अनुशासन व एकरूपता बनाए रखने के लिए ड्रिल तथा शस्त्र कवायद भी करायी गई जवानो के साथ साथ पुलिस अधीक्षक मीरजापुर सन्तोष कुमार मिश्रा ने स्वयं पुश-अप (दण्ड) एवं 04-किमी दौड़ लगाई गयी व पी.आर.वी. का निरीक्षण कर सम्बंधित उपकरणों की साफ-सफाई एवं रख-रखाव के निर्देश दिए गये। पुलिस लाइन निरीक्षण के क्रम में पुलिस अधीक्षक मीरजापुर द्वारा गणना कार्यालय में विभिन्न रजिस्टरों व अभिलेखों को चेक करते हुए सम्बन्धित को अभिलेखों को अद्यतन रखने लिए तथा पुलिस लाइन मेस ,पुलिस लाइन कार्यालय, पुलिस लाइन बैरक आदि का निरीक्षण कर साफ-सफाई एवं समुचित रख-रखाव के निर्देश दिए गये।

कांग्रेसियों ने किया प्रांतीय अध्यक्ष व पूर्व विधायक अजय राय का स्वागत

प्रखर अहरौरा मिजार्पुर। उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रांतीय अध्यक्ष पूर्व विधायक अजय राय का काफिला संगठन के कार्यों से सोनभद्र जा रहा था अजय राय का काफिला छेत्र से गुजरने की सूचना जैसे ही नगर के कांग्रेसियों के हुई महुली चौराहे पर वरिष्ठ कांग्रेसी आनंद गुप्ता के नेतृत्व में कांग्रेसियों ने उनका काफिला रोककर जोरदार स्वागत किया पत्रकारों द्वारा पूछे जाने पर उन्होंने बताया कि कांग्रेसी देश की एकमात्र पार्टी है जो गरीबों की लड़ाई लड़ती है, पार्टी अध्यक्ष के हुए चुनाव में खड़गे जी का चुना जाना यह साबित करता है कि आम कार्यकर्ता भी कांग्रेस पार्टी की कमान संभाल सकता है कांग्रेस पार्टी ही एकमात्र पार्टी है जिसमें निचले स्तर के भी कार्यकताओं को राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाया जा सकता है। स्वागत समारोह में उपस्थित रहने वालों में आनंद गुप्ता, इंद्र देव शर्मा , राजेश साहनी,उमाशंकर प्रजापति, राजेंद्र प्रसाद मनाउर,कमला सिंह, कुंवर सिंह, इरशाद आलम,वीरेंद्र कुमार सिंह उर्फ राजू सिंह,राजू मुनीब, मु, सलीम, बच्चा गुरु, अफरोज चाउ,इब्राहिम मास्टर, समेत सैकड़ों लोग उपस्थित रहे।

थाने व चौकी के बाहर लगा दलालों से सावधान का पोस्टर, बना चर्चा का विषय

प्रखर केराकत जौनपुर। कोतवाली सर्किल के थाने और चौकियों पर दलालों की सक्रियता से आम नागरिकों के साथ साथ पुलिस भी परेशान है। पुलिस की परेशानी का आलम यह है कि उसे अब लोगों को जागरूक करने के लिए थाने और चौकियों के बाहर "दलालों से सावधान" का पोस्टर लगाना पड़ रहा है। बुधवार को केराकत सर्किल के चन्दवक थाने जबकि गुरुवार को मुफ़्तीगंज चौकी में "दलालों से सावधान" का लगा पोस्टर लगा तो चर्चा का विषय बन गया। लोगों ने कहा कि अब पुलिस को भी समझ में आने लगा है कि लोग दलालों से परेशान हैं।दलालों का आलम यह है कि वे थाने, चौकी पर या उसके आस पास सुबह से ही जम जाते हैं और वहां शिकायत लेकर पहुंचने वाले प्रत्येक को अपने झांसे में लेकर उनका आर्थिक और मानसिक शोषण करते हैं। हलांकि थाने और चौकियों पर आने जाने वालों के लिए उनका व्यौरा लिखने के लिए एक रजिस्टर रखा गया है। रजिस्टर में व्यौरा लिखने का मकसद यह है कि दलालों को चिन्हित कर उनके खिलाफ कार्रवाई की जा सके। लेकिन रजिस्टर पर सिर्फ कोरम पूरा होता है। जिसके चलते दलाली का कारोबार इधर कुछ वर्षों में तेजी से बढ़ा है।दलालों के चंगुल से बचाने के लिए कई बार सोशल मीडिया और कुछेक अखबारों में इस सम्बन्ध में खबरें प्रकाशित हुई थी लेकिन वह पुलिस अधिकारियों और समाज के जागरूक लोगों की अनदेखी के चलते नक्कारखाने में तूती की आवाज बनकर रह गई।

बंद रहेगी विद्युत आपूर्ति

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। 30 अक्टूबर 2022 को 132 के वी अंधऊ, पावर हाउस से निर्गत ग्रामीण और शहरी 33 के वी महाराजगंज, जंगीपुर, कोर्ट, जखनिया तहसील, मरदह पंप कैनाल, 10 ५ 2, हंसराजपुर, रौजा, 10 एम भी ए -क, पारा, प्रकाश नगर, जखनिया की सप्लाई 10.00 बजे से 13.00 बजे तक विद्युत उपकेंद्र पर मरम्मत कार्य के कारण पूर्ण रूप से बाधित रहेगी। समय परिवर्तन भी हो सकता है। अपरिहार्य कारणों से शट डाउन निरस्त भी हो सकता है। यह जानकारी उपखंड अधिकारी ट्रांसमिशन गाजीपुर एल के प्रजापति द्वारा दी गई है।

गाजीपुर में होगा CITU का 15वां सम्मेलन

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। कचहरी स्थित पत्रकार भवन में सेंटर ऑफ इंडियन ट्रेड यूनियन्स गाजीपुर की एक पत्रकार वार्ता आयोजित हुई। वार्ता में प्रश्नों का उत्तर देते हुए CITU के प्रदेश सचिव साथी आर.एम.राय ने बताया कि हमारा राष्ट्रीय संगठन CITU देश भर के दस केंद्रीय ट्रेड यूनियनों में से एक ट्रेड यूनियन है जिसका प्रदेश सम्मेलन आगामी 6 व 7 नवम्बर 22 को लहुरी काशी मैरेज हॉल, जल निगम रोड, रौजा में संपन्न होगा जिसमें हमारे राष्ट्रीय महामंत्री व राज्यसभा सांसद (पूर्व) साथी तपन सेन ० राष्ट्रीय लीडर साथी ए.आर.सिंधु होंगी। उन्होंने बताया कि विभिन्न प्रदेशों के सम्मेलन के उपरांत आगामी वर्ष 2023 में बंगलुरू में हमारा राष्ट्रीय सम्मेलन भी प्रस्तावित है। जिसमें हमारी प्रमुख मांगें नये श्रम कोड को वापस लेने, संविदा कर्मियों को नियमित करने, पुरानी पेंशन लागू करने, महंगाई पर रोक लगाने, न्यूनतम वेतन 26000/- प्रति माह करने, ठेका प्रथा पर रोक लगाने, स्कीम वर्कर्स को राज्य कर्मचारी का दर्जा देने, इलेक्ट्रिसिटीअमेंडमेंट बिल को वापस लेने, पेट्रोल डीजल की कीमतों को कम करने, खाद-बीज के दाम कम करने, बेरोजगारी कम करने इत्यादि शामिल है, को लेकर हम अपने सम्मेलनों में चर्चा कर प्रस्ताव पारित करेंगे।

पत्रकार वार्ता में उपस्थित UPMSRA गाजीपुर इकाई के अध्यक्ष साथी मयंक श्रीवास्तव ने बताया कि UPMSRA जो कि दवा प्रतिनिधियों का संगठन है, वो प्रदेश स्तर पर CITU से बाजी संबद्ध है और UPMSRA CITU का सबसे बड़ा घटक है। इस प्रदेश सम्मेलन में UPMSRA भी बढ़ चढ़ कर शिरकत कर रहा है। उन्होंने बताया कि CITU के साथ मिलकर हमने महंगाई, दवा के दाम कम करने, SPE एक्ट (1976) को लागू करने, चारो नये श्रम संहिताओं को वापस लेने, दवा पर से GST हटाने इत्यादि को लेकर कई हड़तालें एवं आंदोलन किये हैं तथा माननीय प्रधानमंत्री (भारत सरकार) व श्रम मंत्री, उर्वरक व रसायन मंत्री (भारत सरकार) व प्रदेश सरकार को पत्रक सौंपें व उचित कार्यवाही की गुहार लगायी है परन्तु अभी कोई सुनवाई नहीं हुई है जिसको लेकर हम आगे भी अपना आंदोलन जारी रखेंगे। वार्ता में CITU के जिला संयोजक मो.अफजल ने कहा कि यह हमारे लिए सौभाग्य की बात है कि CITU का 15वां राज्य सम्मेलन गाजीपुर में होने जा रहा है जिसमें लगभग 300 डेलिगेट (प्रतिनिधि) शामिल होंगे।

एक करोड़ की हेरोइन व लाखों रुपये संग तीन तश्कर गिरफ्तार

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। पुलिस अधीक्षक रोहन प्रमोद बोत्रे के आदेशानुसार जनपद गाजीपुर में अपराध एवं अपराधियों व अवैध तस्करो के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में तथा अपर पुलिस अधीक्षक नगर गाजीपुर के कुशल पर्यवेक्षण में शहर कोतवाल तेज बहादुर सिंह थाना कोतवाली अपनी टीम व स्वाट टीम प्रभारी उप निरीक्षक रामाश्रय राय की संयुक्त टीम द्वारा जमनिया मोड पर रोज की तरह भ्रमण पर थे कि मुखबीर द्वारा सूचना मिला कि 01 व्यक्ति झारखण्ड से बस द्वारा नाजायज हिरोइन लेकर गाजीपुर आया है जो 03 व्यक्तियो को सुखदेवपुर चौराहे पर सुहवल की ओर से पैदल बेचने के लिए आ रहा है इस सूचना पर क्षेत्राधिकारी नगर को अवगत कराया गया तथा पुलिस बल व मुखबिर खास को लेकर सुखदेवपुर चौराहा से पहले छुप कर खड़े हो गये तथा वहा पहले से मौजूद 03 व्यक्ति मोटर साइकिल से खड़े दिखाई दिये। मुखबिर खास ने बताया कि यही वो तीनो व्यक्ति है तथा कुछ देर बाद 01 व्यक्ति पैदल सुखदेवपुर चौराहे पर सुहवल की ओर से हाथ में एक पीला रंग का बैग लेकर आया तब तक क्षेत्राधिकारी नगर भी मौके पर आ गये। पहले से खडे तीनो व्यक्तियों द्वारा आये हुए व्यक्ति को एक कागज में कुछ देने लगे तो मुखबिर खास ने बताया कि साहब यही चारो व्यक्ति है और वहा से हट बढ़ गया। तब पुलिस बल द्वारा चारो व्यक्तियों में से 03 व्यक्तियो को समय करीब 06.05 बजे गिरफ्तार कर लिया गया तथा मौके से 01 व्यक्ति फरार हो गया। पकड़े गये तीनों व्यक्तियों से नाम पता पूछा गया तो क्रमश अपना नाम प्रमोद कुमार दागी पुत्र ज्ञान दागी नि. गिधौर थाना गिधौर जिला चतरा झारखण्ड, मन्टू चौहान पुत्र हरिहर चौहान नि० भेलूपुर थाना इटाढी जिला बक्सर बिहार तथा हरिशंकर मिश्र पुत्र स्व0 बैजनाथ नि0 भेलूपुर थाना इटाढी जिला बक्सर बिहार बताया। पकड़े गये तीनो व्यक्तियों के कब्जे से 01 किलो 50 ग्राम नाजायज हेरोईन व उनके पास से दो लाख रुपए नगद व जामा तलाशी से सात हजार रुपए नकद व परिवहन करने हेतु प्रयोग की जाने वाली एक अदद मोटर साइकिल न0 बीआर44एम 4937 बरामद की गयी। जिसको पुलिस ने कब्जा में ले लिया।

किशोरी को भगाने वाला आरोपी गिरफ्तार

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। बिरनो थाना पुलिस ने नाबालिग लड़की को भगा ले जाने वाले आरोपी को गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त की है बिरनो थाना पुलिस ने थाने पर दर्ज पाक्सो एक्ट के मुकदमें में प्रकाश में आये अभियुक्त रोशन भारती पुत्र राकेश कुमार निवासी ग्राम जलालाबाद थाना दुल्लहपुर जनपद गाजीपुर को शुक्रवार को सुबह समय सवा नौ बजे छपरी गाँव से गिरफ्तार किया है। बताते चलें कि वादिनी मुकदमा के नाबालिग लड़की को अज्ञात अभियुक्त द्वारा भगा ले जाने के सम्बन्ध में थाने में लिखित तहरीर दी थी। विवेचना के दौरान धारा 18 पाक्सो एक्ट बढोत्तरी हुई एवं अभियुक्त रोशन भारती पुत्र राकेश कुमार निवासी ग्राम जलालाबाद थाना दुल्लहपुर जनपद गाजीपुर का नाम प्रकाश में आया था। गिरफ्तार अभियुक्त के विरुद्ध विधिक कार्यवाही करते हुए पुलिस ने उसे न्यायालय के सुपुर्द कर दिया। अभियुक्त को गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम में उपनिरीक्षक ओमप्रकाश यादव तथा आरक्षी मुलायम सिंह व राहुल यादव शामिल रहे।

वाहन चोरी करने वाले गैंग का खुलासा, 6 अभियुक्त गिरफ्तार

प्रखर अहरौरा, मिजार्पुर। स्थानीय थाना पर दिनांकः 27.10.2022 को वादी राज कुमार सखाराम गवाई पुत्र सखाराम लक्ष्मन गवाई निवासी गली नम्बर 8 सिडको थाना सिड़को जिला औरंगाबाद महाराष्ट्र द्वारा अंकुर ढ़ाबा के पास से वाहन चोरी हो जाने के सम्बन्ध में लिखित तहरीर दिया गया । प्राप्त तहरीर के आधार पर थाना अहरौरा पर मु0अ0सं0-204/2022 धारा 379 भादवि बनाम अज्ञात पंजीकृत कर विवेचना प्रारम्भ की गई । पुलिस अधीक्षक संतोष कुमार मिश्रा द्वारा चोरी की घटना को गंभीरता से लेते हुए वाहन चोरी करने वाले अभियुक्तों की गिरफ्तारी तथा चोरी गये वाहन की यथाशीघ्र बरामदगी करने हेतु प्रभारी निरीक्षक अहरौरा को निर्देश दिये गये थे । उक्त निर्देश के अनुक्रम में आज दिनांकः 28.10.2022 को प्रभारी निरीक्षक अहरौरा के नेतृत्व में उ0नि0 दिलीप कुमार व उ0नि0 गिरेन्द्र कुमार राय मय पुलिस बल द्वारा विभिन्न स्थानों से कार की चोरी करने वाले 06 अभियुक्त 1-पुरूषोत्म मिश्रा, 2.शशि रंजन पाण्डे, 3.किरन देवी, 4.मेराज हासमी उर्फ सोनू, 5.प्रियांशु सिंह व 6. मोनू सोनकर को थाना अहरौरा क्षेत्र से गिरफ्तार किया गया, जिनके कब्जे चोरी की कार, 01 अदद देशी तमंचा 315 बोर मय 01 अदद कारतुस व दो अदद अवैध चाकु बरामद किया गया । अहरौरा पुलिस द्वारा उपरोक्त गिरफ्तार सभी अभियुक्तों का अर्टिका कार चोरी के सम्बन्ध में धारा 379,411,412,120बी भादवि व उनके कब्जे से बरामद नाजायज असलहा व चाकू के सम्बन्ध में आयुध अधि0 के अंतर्गत सुसंगत धाराओं में चालान करते हुए आवश्यक वैधानिक कार्यवाही करते हुवे जेल भेजा गया ।

अंसारी परिवार पर एक और वार, 12 करोड़ 50 लाख की अचल संपत्ति कुर्क

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। भू माफियाओं द्वारा अवैध ढंग से अर्जित की गयी भू सम्पत्तियों की कुर्की के क्रम में पुलिस द्वारा अफजाल अंसारी पुत्र शुभानुल्लाह अंसारी द्वारा अवैध ढंग से अर्जित की गयी 12 करोड़, 50 लाख रुपये की अचल सम्पत्ति को कुर्क किया गया। उल्लेखनीय है कि प्रभारी निरीक्षक/विवेचक थाना मुहम्मदाबाद जनपद गाजीपुर की प्रेषित आख्या दिनांक 17 अक्टूबर 22 पर पुलिस अधीक्षक द्वारा की गयी संस्तुति के आधार पर जिलाधिकारी द्वारा दिनांक 23 अक्टूबर 22 को पारित कुर्की आदेश अन्तर्गत धारा 14(1) उ0प्र0 गिरोह बंन्ध एवं समाज विरोधी अधिनियम 1986, के क्रियान्वयन हेतु जिलाधिकारी लखनऊ द्वारा दिनांक 27 अक्टूबर 2022 को अनुपालन सम्बन्धी आदेश पारित किया गया।

उसके आधार पर, अभियुक्त अफजाल अंसारी पुत्र शुभानुल्लाह अंसारी निवासी युसुफपुर थाना मुहम्मदाबाद द्वारा अवैध ढंग से अर्जित की गयी भू सम्पत्ति को कुर्क किया गया। कुर्क की गयी भू सम्पत्ति में, 31 अक्टूबर 1998 को अभियुक्त द्वारा अपने संगठित अपराध से अर्जित किये धन से अपनी पत्नी फरहत अंसारी के नाम भूसम्पत्ति मोहल्ला डालीबाग, तिलक मार्ग राममोहन राय वार्ड नं15 जोन 01 निकट बटलर गंज एक्सटेंसन बन्धा, लखनऊ स्थित प्लाट नं 14 बी रकबा 6700 वर्ग में भवन व बाउड्री वाल , जिसका बाजार मूल्य 12 करोड़ 50 लाख रुपये है। अवैध तरीके से अर्जित धन से खरीद फरोख्त कर दाखिल खारिज न कराना तथा अन्य अवैध क्रिया-कलाप किये जाने के कारण अभियुक्त से सम्बन्धित अचल भू-सम्पत्ति को गाजीपुर पुलिस प्रशासन द्वारा दिनांक 28 अक्टूबर 2022 को कुल बाजारू कीमत 12 करोड़ 50 लाख रुपये की भू-सम्पत्ति को मुनादी कर कुर्की की कार्यवाही की गयी। अभियुक्त पर सात अपराधिक मुकदमें दर्ज हैं।

पुलिस अधीक्षक द्वारा आगामी छठ महापर्व के मद्देनजर विभिन्न घाटों पर भ्रमण कर लिया गया जायजा

प्रखर मिजार्पुर। पुलिस अधीक्षक संतोष कुमार मिश्रा द्वारा आगामी छठ महापर्व के दृष्टिगत नगर क्षेत्र के विभिन्न घाटों का भ्रमण कर जायजा लिया गया। इस दौरान छठ महापर्व को सकुशल सम्पन्न करायें जाने हेतु घाटों/जलाशयों/आयोजन स्थलों पर सुरक्षा व्यवस्था का व्यापक बंदोबस्त करने हेतु महिला पुलिसकर्मी सहित पर्याप्त पुलिस बल की ड्यूटी, आयोजन स्थल से लिंक मार्गों पर पेट्रोलिंग करने सहित अन्य आवश्यक दिशा-निर्देश दिया गया ।

जिलाधिकारी के किया घाटों का निरीक्षण, व्यवस्थाओं का लिया जायजा

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर । डाला छठ त्यौहार को देखते हुए जिलाधिकारी आर्यका अखौरी ने आज जनपद के विभिन्न घाटो का स्थलीय निरीक्षण कर वहां की व्यवस्थाओ का जायजा लिया तथा सम्बन्धित अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश भी दिये।जिलाधिकारी ने शहर के ददरी घाट,चीतनाथ घाट, छोटा महादेवा मन्दिर के पास घाटो का स्थलीय निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होने सभी सम्बन्धित अधिकारियों को घाटो पर साफ-सफाई, बैरिकेटिग व्यवस्था, विद्युत व्यवस्था, सुरक्षा व्यवस्था, घाटो पर नावो तथा उस पर तैनात गोताखोरो की व्यवस्था, सुरक्षा के दृष्टिगत भारी पुलिस फोर्स के साथ महिला आरक्षियों की व्यवस्था कराने का निर्देश दिया साथ ही घाटो पर लगाये गये नाविको एवं गोताखोरो का पहचान पत्र जारी करने का निर्देश सम्बन्धित अधिकारियों को दिया। उन्होने अधिशासी अधिकारी नगर पालिका को निर्देश दिया कि सभी घाटो पर अस्थायी कपड़ा चेन्जिग रूम तथा घाटो पर जाने वाली सड़को को गड्ढा मुक्त करने तथा सभी घाटो पर साफ-सफाई का निर्देश दिया। उन्होने निर्देश दिया कि घाटो पर किसी प्रकार की दुकाने न लगाई जाये जिनसे भीड़-भाड़ होने की सम्भावना हो।उन्होने मुख्य चिकित्साधिकारी को जनपद के प्रमुख घाटो पर एम्बुलेंस की व्यवस्था सुनिश्चित कराने का निर्देश दिया। उन्होने ऐसे घाट जहां भीड-भाड़ अधिक होती है ऐसे प्रत्येक प्रमुख घाटो पर कन्ट्रोल रूम/खोया/पाया केन्द्र बनाते हुए कर्मचारी तैनात करने का भी निर्देश दिया। जिलाधिकारी ने जनपदवासियो से अपील की है कि त्यौहार को शान्तिपूर्ण ढ़ग से मनायी जाय। घाटो पर कम से कम व्यक्ति ही जाये, मौके पर उप जिलाधिकारी सदर प्रतिभा मिश्रा, मुख्य राजस्व अधिकारी, सुशील लाल श्रीवास्तव, उपजिलाधिकारी आकाश कुमार, अधिशासी अधिकारी नगर पालिका परिषद, गाजीपुर, तहसीलदार सदर एवं अन्य संस्था के पदाधिकारीगण उपस्थित थे।

सूर्य उपासना के पर्व छठ की तैयारी शुरू

लौटने लगे परदेशी

उत्तर प्रदेश और बिहार के पूर्वांचल इलाके में प्रमुखता से मनाया जाने वाले पर्व छठ की जौनपुर में तैयारियां शुरु हो गयी है।

सूर्य की उपासना के पर्व के रूप में मनाया जाने वाला छठ पर्व कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को यानी 28 अक्टूबर से प्रारंभ होकर 31 अक्टूबर को उगते सूर्य को अर्घ्य देकर समाप्त होगा। चार दिवसीय इस पर्व की जनपद में तैयारी जोर शोर से चल रही है।

घरों में साफ-सफाई के साथ खरीदारी शुरू हो गयी है। जिसके चलते बाजारों में चहल-पहल बढ़ गई है। नदियों व तालाबों के किनारे पूजन स्थलों को साफ किया जा रहा है। मुंबई, दिल्ली, गुजरात व कोलकाता आदि महानगरों से बड़ी संख्या में परदेसी घर को लौट रहे है, जिसके चलते ट्रेनों और बसों में भीड़ बढ़ गई है।

डाला छठ व्रत का मुख्य प्रसाद ठेकुआ है। यह गेहूं के आटा, गुड़ और देशी घी से बनाया जाता है। प्रसाद को मिट्टी के चूल्हे पर आम की लकड़ी जलाकर पकाया जाता है। ऋतु फल में नारियल, केला, पपीता, सेब, अनार, कंद, सुथनी, गागल, ईख, सिघाड़ा, शरीफा, कंदा, संतरा, अनन्नास, नींबू, पत्तेदार हल्दी, पत्तेदार अदरक, कोहड़ा, मूली, पान, सुपारी, मेवा आदि का सामर्थ्य के अनुसार गाय के दूध के साथ अर्घ्य दिया जाता है। यह दान बांस के दऊरा, कलसुप नहीं मिलने पर पीतल के कठवत या किसी पात्र में दिया जा सकता है।

नहाय-खाय के दूसरे दिन सभी व्रती पूरे दिन निर्जला व्रत रखते है। सुबह से व्रत के साथ इसी दिन गेहूं आदि को धोकर सुखाया जाता है। दिन भर व्रत के बाद शाम को पूजा करने के बाद व्रती खरना करते है। इस दिन गुड़ की बनी हुई चावल की खीर और घी में तैयार रोटी व्रती ग्रहण करेंगे। कई जगहों पर खरना प्रसाद के रूप में अरवा चावल, दाल, सब्जी आदि भगवान भाष्कर को भोग लगाया जाता है। इसके अलावा केला, पानी सिघाड़ा आदि भी प्रसाद के रूप में भगवान आदित्य को भोग लगाया जाता है।

खरना का प्रसाद सबसे पहले व्रती खुद बंद कमरे में ग्रहण करते है। खरना का प्रसाद मिट्टी के नये चूल्हे पर आम की लकड़ी से बनाया जाता है। चार दिवसीय उपासना का पर्व 18 नवंबर को नहाय खाय, 29 अक्टूबर को खरना, 30 अक्टूबर को अस्ताचलगामी सूर्य को अर्घ्य और 31 अक्टूबर को उदयाचल सूर्य को अर्घ्य देकर समापन किया जाता है। कोविड-19 के चलते यहां यह पर्व दो वर्ष तक नहीं मनाया गया। इस वर्ष बड़े धूमधाम से यह पर्व मनाया जा रहा है। वैसे बिहार में मनाया जाने वाला इस पर्व का धीरे-धीरे पूर्वांचल सहित जौनपुर में भी काफी असर हो गया है।

हाई रिस्क वाले लोगों में

स्तन कैंसर की समय पर जांच जरूरी

■ नई दिल्ली (एसएनबी)।

राजीव गांधी कैंसर इंस्टीट्यूट एंड रिसर्च सेंटर (आरजीसीआई) के सीनियर कंसल्टेंट एवं ब्रेस्ट सर्जिकल ओंकोलॉजी के प्रमुख डॉ. राजीव कुमार ने कहा कि जिन परिवारों में किसी को स्तन कैंसर हुआ हो, वहां अगली पीढ़ी में भी स्तन कैंसर या गर्भाशय के कैंसर का खतरा रहता है। ऐसे लोगों में निगरानी रखना और समय पर जांच बहुत जरूरी है ताकि शुरुआती स्तर पर ही कैंसर का पता लगाकर जरूरी कदम उठाये जा सकें। अक्टूबर को स्तन कैंसर जागरूकता माह के रूप में मनाया जाता है।

देखा गया है कि स्तन कैंसर के 5 प्रतिशत मामले जेनेटिक होते है और अभिभावकों से बच्चों में पहुंचते है। माता और पिता दोनों से। बीआरसीए जीन के माध्यम से बच्चों में यह कैंसर पहुंच सकता है। यह जीन एक्स क्रोमोसोम पर होता है। जिन महिलाओं में बीआरसीए जीन होता है, उनमें आगे चलकर स्तन या गर्भाशय कैंसर होने का खतरा 10 गुना ज्यादा रहता है। सभी हाई रिस्क वाले लोगों को बीआरसीए जीन टेस्टिंग करानी चाहिए जो कि किफायती दरों पर उपलब्ध है। जिनके परिवार में किसी को स्तन कैंसर हो चुका है, उन्हें हाई रिस्क माना जाता है।

एलोएलो आइडल रिएल्टी शो के विनर बने कुलदीप सिंह

■ मिली स्विफ्ट कार व 14 लाख के उपहार

नई दिल्ली (एसएनबी)। देश के अग्रणी लाइव स्ट्रीमिंग ऐप एलोएलो ने बृहस्पतिवार को 'एलोएलो आइडल : सिंग एण्ड विन ए कार' प्रतियोगिता के समापन की घोषणा की। ऐलोएलो ऐप पर यह प्रतियोगिता छह सप्ताह तक चली जिसे दर्शकों से बहुत अच्छी प्रतिक्रिया मिली। देश भर से 3000 से अधिक शौकीन एवं पेशेवर गायकों ने प्रतियोगिता में हिस्सा लिया और 50 लाख से अधिक यूज़र ऐप पर इसे लाइव देख रहे थे।

हरियाणा के कुलदीप सिंह को प्रतियोगिता का फ्रंट रनर घोषित किया गया और प्रतियोगिता के भव्य पुरस्कार के रूप में उन्हें मारुति स्विफ्ट डिजायर दी गई। 55 वर्षीय कुलदीप सिंह पेशे से इलेक्ट्रॉनिक्स इजीनियर है लेकिन गाने का शौक रखते है। सिर्फ डेढ़ महीने में इस गायक को 14 लाख रुपए के उपहार मिले जो लीडरबोर्ड पर सबसे आगे रहे। रनर-अप्स में साक्षी कुमारी और बैशाखी सिन्हा शामिल थे जो क्रमशः दूसरे और तीसरे स्थान पर रहे। इन्हें आकर्षक पुरस्कार जीतने का मौका मिला। अन्य आकर्षक पुरस्कारों में स्मार्टफोन, स्पीकर और बम्पर नकद पुरस्कार शामिल थे। प्रतियोगिता की सफलता के बारे में एलोएलो सह-संस्थापक सौरभ पाण्डेय ने कहा, 'एलोएलो लाइव टीवी का निर्माण करना चाहता है। मौजूदा रिएल्टी शो के माध्यम से गायकों को लाइव परफोर्मेन्स देने और इंटरएक्टिव तरीके से दर्शकों का डिजिटल एंटरटेनमेन्ट करने का मौका मिला।

'मोहब्बतें' के 22 साल हुए पूरे

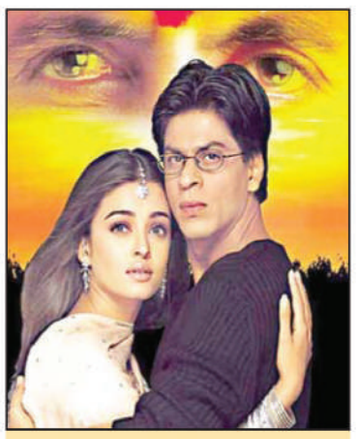

■ यह अमिताभ बच्चन, शाहरुख खान और ऐश्वर्या राय बच्चन की रोमांटिक ड्रामा फिल्म है

मुंबई (आईएएनएस)। अमिताभ बच्चन, शाहरुख खान और ऐश्वर्या राय बच्चन की रोमांटिक ड्रामा 'मोहब्बतें', जिसने प्यार की अवधारणा को फिर से परिभाषित किया, ने हिंदी सिनेमा में 22 साल पूरे कर लिए हैं।

प्रोडक्शन हाउस यश राज फिल्म्स ने फिल्म के पोस्टर को इंस्टाग्राम पर साझा किया और कैप्शन दिया, '22 साल पहले जब मिस्टर राज आर्यन मल्होत्रा आए और हमें 'प्यार कैसे होता है' सिखाया। आज मोहब्बतें फिल्म के 22 साल पूरे हो गए।'

'मोहब्बतें' 2000 में रिलीज हुई थी और इसे आदित्य चोपड़ा ने डायरेक्ट किया है। फिल्म में उदय चोपड़ा, शमिता शेट्टी, जुगल हंसराज, किम शर्मा, जिमी शेरगिल और प्रीति झंगियानी भी हैं।

यह गुरुकुल कॉलेज के सख्त प्रिंसिपल नारायण की कहानी बताती हैं, जिसकी बेटी मेघा कॉलेज में एक संगीत शिक्षक राज के साथ उसके संबंधों का विरोध करने के बाद आत्महत्या कर लेती है। कहानी तीन गुरुकुल छात्रों और उनके प्रेम हितों को नारायण के प्यार के प्रति असहिष्णुता के खिलाफ विद्रोह करने के लिए राज की सहायता करती है।

कोर्ट रूम ड्रामा खत्म करने के बाद जोधपुर पहुंचे मनोज बाजपेयी

■ मुंबई (आईएएनएस)।

'गैंग्स आफ वासेपुर' के अभिनेता मनोज बाजपेयी हाल ही में जोधपुर में अपनी आगामी फिल्म के चलते जोधपुर का मजा ले रहे हैं, अभिनेता को एक रिक्शा में शहर का भ्रमण करते देखा गया था। नीले शहर की गलियों में एक मजेदार सवारी का आनंद लेते हुए अभिनेता ने शहर की संस्कृति का पता लगाया।

मनोज ने अपने इंस्टाग्राम पर उसी की रील शेयर की। कैप्शन में उन्होंने लिखा, 'जोधपुर में शूटिंग का आखिरी दिन और हमने इस सांस्कृतिक रूप से समृद्ध शहर की खोज की, जैसा कि एक रिक्शा में होना चाहिए। धन्यवाद, सोलंकी जी हमें और जोधपुर के प्यारे लोगों को आपके आतिथ्य के लिए आमंत्रित करने के लिए। मैं जल्द ही वापस आऊँगा।'

वीडियो में, मनोज को एक नीली टी-शर्ट और काले रंग की ट्रैक पैंट पहने देखा जा सकता है। फिल्म की बात करें तो यह एक कोर्ट रूम ड्रामा है, जिसका शीर्षक अभी तय नहीं हुआ है। फिल्म का निर्देशन सुपर्ण वर्मा ने किया है, जिन्होंने मनोज के स्ट्रीमिंग शो 'द फैमिली मैन' के दूसरे सीजन के एक सेक्शन का भी निर्देशन किया था।

'फ्रैक्चर' की उपचार पद्धतियों से सेहत में सुधार का पूर्वानुमान लगाने के लिए एआई मॉडल

■ नई दिल्ली (भाषा)।

■ अनुसंधान के परिणाम हाल में पत्रिका 'पीएलओएस वन' में हुए हैं प्रकाशित

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी), गुवाहाटी के अनुसंधानकर्ताओं ने जांघ की हड्डी में 'फ्रैक्चर' की सर्जरी के बाद सुधार के बारे में अनुमान के लिए एक कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) मॉडल विकसित किया है।

अनुसंधान दल के अनुसार इस मॉडल का इस्तेमाल 'फ्रैक्चर' सही करने के विभिन्न तरीकों के बाद हड्डी जुड़ने में सुधार का पता लगाने में किया जा सकता है ताकि मरीज के लिए सर्जरी या उपचार के सही तरीके का चयन किया जा सके।

उन्होंने कहा कि इस तरह के सटीक अनुमान वाले मॉडल का इस्तेमाल हड्डी जुड़ने के समय को कम कर सकता है, खर्च में कमी ला सकता है और मरीजों की पीड़ा को भी कम कर सकता है। अनुसंधान के परिणाम हाल में पत्रिका 'पीएलओएस वन' में प्रकाशित हुए हैं। आईआईटी, गुवाहाटी में जैव विज्ञान और जैव आभियांत्रिकी विभाग के सहायक प्रोफेसर सौप्तिक चंद ने कहा, 'जब जटिल जैविक चीजों को लेकर पूर्वानुमान और समझ की बात आती है तो एआई अत्यंत क्षमतावान है और स्वास्थ्य विज्ञान के अनुप्रयोगों में बड़ी भूमिका निभा सकती है।' अनुसंधान दल ने अनेक उपचार पद्धतियों के बाद 'फ्रैक्चर' में सुधार की प्रक्रिया को समझने के लिए 'फाइनाइट एलिमेंट एनालिसिस' और एआई टूल 'फजी लॉजिक' का उपयोग किया है। अनुसंधानकर्ताओं ने अस्पतालों में इस्तेमाल के लिए एक सॉफ्टवेयर या ऐप बनाने की भी योजना तैयार की है। यह दल इस समय उत्तर पूर्व इंदिरा गांधी क्षेत्रीय स्वास्थ्य और आयुर्विज्ञान संस्थान, शिलांग के डॉ भास्कर बोरगोहेन तथा उनके अस्थिरोग विशेषज्ञों के दल के साथ काम कर रहा है।

राम चरण ने राजामौली जूनियर एनटीआर के साथ की तस्वीरें साझा की

हैदराबाद (आईएएनएस)। 'आरआरआर' को बढ़ावा देने के लिए जापान के दौरे के बीच, मेगास्टार राम चरण ने अपने निर्देशक और इसके पीछे के व्यक्ति, एस.एस. राजामौली और उनके बेटे कार्तिकेय, और सह अभिनेता जूनियर एनटीआर की कंपनी में बिताए अच्छे समय की तस्वीरें साझा करने के लिए अपने सोशल मीडिया का सहारा लिया। सोशल मीडिया पर पोस्ट की गई तस्वीरों में, आरआरआर टीम को मिली प्रतिक्रिया से खुश हैं। राम ने कहा, 'आरआरआर की यात्रा समृद्ध, रोमांचक रही है, और यादें जीवन भर रहेंगी। जापान के लोगों ने हम पर जो प्यार बरसाया है, उससे हम सभी जिन भावनाओं से गुजर रहे हैं, उन्हें शब्दों में बयां करना मुश्किल है।

मैक्सिकों के सभी राज्यों में समलैंगिक विवाह मान्य

■ मैक्सिको सिटी (एपी)।

■ विधेयक को 12 के मुकाबले 23 मतों से दी गई मंजूरी

मैक्सिको के सीमावर्ती राज्य तमाउलिपास राज्य की विधायिका ने बुधवार को समलैंगिक विवाह को कानूनी मान्यता देने संबंधी विधेयक को मंजूरी दे दी। इसी के साथ ही तमाउलिपास मैक्सिको का 32वां और अंतिम राज्य बन गया है जहां समलैंगिक विवाह को कानूनी रूप से वैध घोषित कर दिया गया है।

समलैंगिक विवाह को कानूनी बनाने के लिए नागरिक संहिता में संशोधन के लिए पेश विधेयक को 12 के मुकाबले 23 मतों से मंजूरी दी गई जबकि दो सदस्य अनुपस्थित रहे। इसी के साथ समलैंगिक विवाह के समर्थकों के चेहरे पर खुशी छा गई। सदन में जब विधेयक को पारित करने के लिए पेश किया गया, तब दर्शक दीर्घा में इसके समर्थक और विरोधी मौजूद थे और नारेबाजी कर रहे थे जिसकी वजह से सदस्यों को बहस पूरी करने और मतदान करने के लिए दूसरे कक्ष में जाना पड़ा। मैक्सिको के सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश अर्तुरो जालदिवार ने विधेयक पारित होने का स्वागत किया है। उन्होंने ट्वीट किया, 'पूरा देश इंद्रधनुष के रंग से चमक रहा है। सभी लोग सम्मान अधिकार के साथ रहेंगे।' इससे पहले, दिन में दक्षिणी राज्य ग्युरेरो ने भी समलैंगिक विवाह को मंजूरी देने के लिए इसी तरह का कानून पारित किया था। गौरतलब है कि वर्ष 2015 में सुप्रीम कोर्ट ने समलैंगिक विवाह को रोकने वाले, राज्यों के कानून को गैर कानूनी करार दिया था, लेकिन कुछ राज्यों ने इससे संबंधित कानून में संशोधन करने में वर्षों का समय लिया।

चाचा चौधरी के कॉमिक में होंगे 'फोन भूत' फिल्म के किरदार

मुंबई (भाषा)। फरहान अख्तर और रितेश सिद्धवानी की फिल्म निर्माण कंपनी एक्सेल एंटरटेनमेंट ने बृहस्पतिवार को घोषणा की कि वे अपनी आगामी फिल्म 'फोन भूत' पर एक विशेष कॉमिक श्रृंखला के लिए डायमंड टून्स के साथ साझेदारी कर रहे हैं। यह हास्य फिल्म भूत भगाने का दावा करने वाले दो किरदारों पर केंद्रित है जो एक शैतान से मुकाबले के लिए एक भूत के साथ ही मिल जाते हैं। रविशंकरन और जसविंदर सिंह बाथ द्वारा लिखी कहानी पर बनी इस फिल्म में मुख्य भूमिकाओं में सिद्धांत चतुर्वेदी, ईशान खट्टर, कैटरीना कैफ और जैकी श्राफ हैं।

फिल्म निर्माताओं के साथ साझेदारी के तहत डायमंड टून्स एक कॉमिक जारी करेंगे जिसमें 'फोन भूत' के तीन प्रमुख पात्रों का चित्रण चाचा चौधरी और साबू के साथ किया जाएगा। डायमंड टून्स के निदेशक मनीष वर्मा ने कहा कि वे 'चाचा चौधरी और फोन भूत' के विशेष अंक के लिए एक्सेल एंटरटेनमेंट के साथ साझेदारी करके प्रसन्न हैं।

अनुपम खेर ने नये चैट शो की घोषणा की

मुंबई (भाषा)। प्रसिद्ध अभिनेता अनुपम खेर ने चर्चा पर आधारित अपने नये शो 'मंजिलें और भी हैं' की घोषणा की है जिसका प्रसारण शुक्रवार से उनके यूट्यूब चैनल पर किया जाएगा। खेर ने बुधवार रात को अपने आधिकारिक ट्विटर पेज पर खबर साझा करते हुए लिखा, 'दोस्तो, मेरा नया शो (चैट शो) 'मंजिलें और भी हैं' जल्द आ रहा है। मेरे यूट्यूब चैनल पर।' खेर के मुताबिक, 'क्या आप अनुमान लगा सकते हैं कि मेरे इस प्रेरक शो पर पहले मेहमान कौन होंगे? सही नाम का अनुमान लगाने वाले को बड़ा इनाम मिलेगा।'

शेक्सपियर के चार नाटक ब्रिटेन की वर्तमान राजनीतिक से खाते हैं मेल

■ डबलिन (द कन्वरसेशन)।

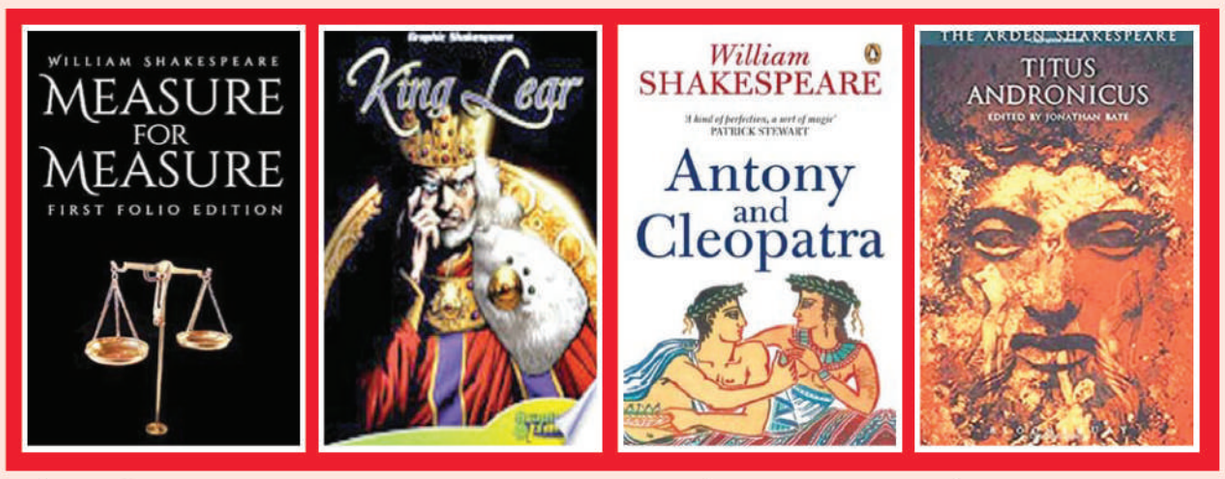

उत्सुक पर्यवेक्षक ने पिछले कुछ वर्षों के दौरान ब्रिटेन के राजनीतिक घटनाक्रम का शेक्सपियर के कुछ सबसे अधिक पसंद किए जाने वाले नाटकों के साथ मेल महसूस किया है। मिडसमर नाइट्स ड्रीम्स से लोग संसद को देखते हुए अनुभव कर सकते हैं कि अंत भला तो सब भला।

शेक्सपियर राजनीतिक रूप से उथल-पुथल भरे दौर से गुजरे। उनका नाटक लेखन करियर दो सम्राटों, एलिजाबेथ प्रथम और जेम्स प्रथम के शासनकाल तक रहा। उनके नाटकों का इंग्लैंड वार्स ऑफ रोजज (सी. 1455-1487) के बाद खुद को नए सिरे से बना रहा था, जिसने ट्यूडर राजवंश की स्थापना की। उन्होंने इस युग की सबसे बड़ी राजनीतिक विद्वता को भी गति दी: हेनरी अष्टम का कैथरीन ऑफ एरागॉन से कुख्यात तलाक और रोमन कैथोलिक चर्च से टूटना। हाल की राजनीतिक घटनाओं को इन चार नाटकों के घटनाक्रम से जोड़कर देखा जा सकता है।

1. मैजर फॉर मैजर - मैजर फॉर मैजर न्याय के बारे में है और उचित सजा की मांग करता है। नाटक में जनता, नैतिक रूप से कमजोर ड्यूक के नेतृत्व में, पाप के रास्ते पर चल निकलती हैं। खराब आचरण करने वाली, शराब पीने वाली जनता से निराश होकर, ड्यूक अपने सहयोगी एंजेलो को प्रभारी बनाकर देश छोड़ देता है और अपने शिष्य की प्रगति का निरीक्षण करने के लिए एक तपस्वी के रूप में वापस लौटता है। हाल ही में, मुझे एक और पूर्व प्रधान मंत्री, बोरिस जॉनसन की याद आ रही है, जिनका नैतिक रूप से अस्पष्ट नेतृत्व शानदार छुट्टियों की एक श्रृंखला के साथ समाप्त हुआ।

2. किंग लियर- जॉनसन के घोटाले से भरे समय के दौरान मैंने किंग लियर के बारे में सोचा। किंग लियर का दरबार चापलूसी करने वालों से भरा हुआ था जो सिर्फ वही बात करते हैं, जो राजा को अच्छी लगे। नवीनतम टोरी नेतृत्व के दौरान स्पष्ट रूप से यही बात देखने को मिली, जिसमें जॉनसन की वापसी का समर्थन करने वाले वफादार सामने आए। हालांकि, भक्ति के ऐसे प्रदर्शन बेकार गए, क्योंकि उन्होंने दौड़ में शामिल न होने का फैसला किया। लीयर भी एक फैमिली साइकोड्रामा है। वह अपनी बेटियों को एक-दूसरे के खिलाफ खड़ा करता है, प्रत्येक से यह बताने के लिए कहता है कि वे उससे कितना प्यार करती हैं।

3. एंथनी और क्लियोपेट्रा- एंथोनी और क्लियोपेट्रा जॉनसन के उत्तराधिकारी लिज़ ट्रस और उनके चांसलर क्वासी क्वार्टेंग के दुर्भाग्यपूर्ण और अल्पकालिक शासन के लिए सबसे उपयुक्त हो सकते हैं। शुरूआती दृश्य से, एंथोनी वास्तविकता के प्रति अपनी लापरवाही को उजागर करता है। अगर एंथनी और क्लियोपेट्रा ने अच्छे नेतृत्व की बलि चढ़ाकर प्यार निभाया, तो ट्रस और क्वार्टेंग का दोष यह था कि उन्होंने मुक्त बाजार अर्थशास्त्र के प्रति अपने मोह की वजह से घातक गलतियां की, लेकिन ट्रस और क्वार्टेंग दोनों ने शेक्सपियर की त्रासदी के अंत पर ध्यान दिया होगा जिसमें एंथनी और क्लियोपेट्रा की पीड़ा में मृत्यु हो गई थी। ट्रस के छोटे शासनकाल में अर्थव्यवस्था में गिरावट आई और इसी तरह उनकी लोकप्रियता भी गिरती गई।

4. टाइटस एंड्रोनिकस- सत्ता के लिए संघर्ष के बाद शेक्सपियर के नाटक अक्सर व्यवस्था की बहाली के साथ समाप्त होते हैं। रिचर्ड तृतीय ट्यूडर युग की शुरुआत के साथ समाप्त होता है और मैकबेथ में, सही उत्तराधिकारी को सिंहासन मिलता है। कुछ के लिए, ट्रस के उत्तराधिकारी ऋषि सनक को एक 'सुरक्षित विकल्प' के रूप में देखा जा रहा है लेकिन जो चीज मुझे यहां अधिक उपयुक्त लगती है वह है टाइटस एंड्रोनिकस। शेक्सपियर के सबसे खूनी नाटक में, कोई भी विजेता बनकर नहीं उभरा।

संक्षिप्त खबरें

सैमसंग के नए चेयरमैन

सोल। सैमसंग ने आधिकारिक ली जे योंग को कंपनी का कार्यकारी चेयरमैन नियुक्त किया है। ली की पदोन्नति आंशिक रूप से महत्वपूर्ण है। उन्होंने अपने पिता और कंपनी के पूर्व चेयरमैन ली कुन-ही के निधन के बाद वाइस चेयरमैन के रूप में जिम्मेदारी संभाली थी। हालांकि, ली को कानूनी बाधाओं के कारण 2020 में अपने पिता के निधन के बाद जल्दी से चेयरमैन के रूप में पदोन्नत करने से रोक दिया था। सैमसंग की तरफ यह घोषणा दरअसल कंपनी के सितम्बर तिमाही में शुद्ध लाभ में 31 प्रतिशत की गिरावट की सूचना के तुरंत बाद आई है।

निवेश करेगी एम3एम

नई दिल्ली। रियल्टी फर्म एम3एम इंडिया गुरुग्राम में एक नई खुदरा संपत्ति परियोजना विकसित करने के लिए 700 करोड़ रुपए का निवेश करेगी। कंपनी ने कहा कि उसने 150 मीटर चौड़े द्वारका एक्सप्रेसवे पर गुरुग्राम के सेक्टर 113 में एक खुदरा परियोजना 'एम3एम कैपिटलवॉक' शुरू की है। इस परियोजना में विभिन्न आकारों की 1,047 इकाइयां होंगी, जो 100 से 3,000 वर्ग फुट के क्षेत्रफल में होंगी। इस परियोजना से 2,000 करोड़ रुपए की कमाई की उम्मीद है। कंपनी के निदेशक पंकज बंसल ने कहा कि कंपनी 60 लाख वर्ग फुट खुदरा क्षेत्र का पोर्टफोलियो बनाने को निवेश कर रही है।

जेएसडब्ल्यू ने पूंजी जुटाई

नई दिल्ली। जेएसडब्ल्यू स्टील की अमेरिकी इकाई ने बेटाउन में इस्पात चादर संयंत्र के आधुनिकीकरण के लिए इटली की बैंकिंग संस्थानों से 18.2 करोड़ डालर जुटाए हैं। समूह की अनुषंगी जेएसडब्ल्यू स्टील (यूएसए) अमेरिका में इस्पात की चादर बनाने वाले सबसे बड़े में संयंत्रों में से एक का संचालन करती है। इसकी स्थापित क्षमता प्रति वर्ष 12 लाख टन से अधिक है। जेएसडब्ल्यू स्टील ने बृहस्पतिवार को जारी बयान में कहा कि जेएसडब्ल्यू स्टील यूएसए ने इटली के दो बैंकिंग संस्थानों इंटेसा सानपोलो और बैंको बीपीएम के साथ दीर्घकालिक वित्तपोषण के लिए करार किया है।

आरईसी का लाभ बढ़ा

नई दिल्ली। सार्वजनिक क्षेत्र की आरईसी लिमिटेड का एकीकृत शुद्ध लाभ चालू वित्त वर्ष की सितम्बर तिमाही में 1.5 प्रतिशत बढ़कर 2,732.12 करोड़ रुपए हो गया। कंपनी ने बृहस्पतिवार को शेयर बाजारों को यह जानकारी दी। कंपनी ने इसने पिछले वित्त वर्ष 2021-22 की जुलाई-सितम्बर तिमाही में 2,692.27 करोड़ रुपये का मुनाफा कमाया था। हालांकि, कंपनी की कुल आय आलोच्य तिमाही में मामूली घटकर 9,964 करोड़ रुपए पर आ गयी। एक साल पहले की इसी तिमाही में यह 10,056.53 करोड़ रुपए थी। चालू वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही में कंपनी का कुल खर्च भी घटकर 6,527.76 करोड़ रुपए रह गया। एक साल पहले की समान अवधि में यह 6,708.93 करोड़ रुपये था।

टेक्समैको रेल को ठेका

कोलकाता। टेक्समैको रेल एंड इंजीनियरिंग लिमिटेड को इंदौर मेट्रो रेल परियोजना के लिए मानक गेज गिट्टी रहित ट्रैक की आपूर्ति के लिए 252.88 करोड़ रुपये का ठेका मिला है। मध्य प्रदेश मेट्रो रेल कारपोरेशन लिमिटेड (एमपीएमआरसीएल) ने इसके लिए बोलियां आमंत्रित की थीं। कंपनी के एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। अधिकारी ने बताया कि टेक्समैको रेल ने लार्सन एंड टुब्रो की 262.32 करोड़ रुपए की बोली को पीछे छोड़ते हुए सबसे कम बोली लगाई है। अन्य बोलीदाताओं में विजय निर्माण कंपनी प्राइवेट लिमिटेड और रेल विकास निगम लिमिटेड (आरवीएनएल) थीं।(एजेंसिया)

टॉप-10 बिजी एयरपोर्ट में शामिल हुआ दिल्ली हवाईअड्डा

■ वर्ष 2019 में था दुनिया का चौदहवां सबसे व्यस्त हवाईअड्डा ■ अक्टूबर में अटलांटा एयरपोर्ट सबसे व्यस्त हवाईअड्डा रहा

नई दिल्ली (भाषा)।

दिल्ली के इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डे ने अपनी रैंकिंग में सुधार किया है और अक्टूबर में दुनिया के 10वें सबसे व्यस्त हवाईअड्डे के रूप में उभरा है।

वैश्विक यात्रा से संबंधित आंकड़े उपलब्ध कराने वाली संस्था आफिशियल एयरलाइन गाइड (ओएजी) ने अपनी रिपोर्ट में यह जानकारी दी है। रिपोर्ट में कहा गया, 'दिल्ली का हवाईअड्डा कोविड-19 महामारी से पहले यानी अक्टूबर 2019 में 14वां सबसे व्यस्त हवाईअड्डा था।' वहीं हार्ट्सफील्ड जैक्सन का अटलांटा अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डा अक्टूबर में सबसे व्यस्त हवाईअड्डा रहा है। इसके बाद दुबई और टोक्यो हनेडा हवाई अड्डा क्रमशः दूसरे और तीसरे स्थान पर हैं।

रिपोर्ट में छठे स्थान पर लंदन का हीथ्रो हवाई अड्डा है। इसके बाद सातवें स्थान पर शिकागो का 'ओ'ह्यारे' अंतरराष्ट्रीय ह्वाई अड्डा है और लास एंजिल्स अंतरराष्ट्रीय ह्वाई अड्डा नौवें स्थान पर है।

ओएजी की रैंकिंग इस साल अक्टूबर और अक्टूबर 2019 में निर्धारित एयरलाइन क्षमता की तुलना के आधार पर जारी की गई है। दुनिया के शीर्ष 10 सबसे व्यस्त ह्वाई अड्डों को उनकी संयुक्त घरेलू और अंतरराष्ट्रीय क्षमता के आधार पर स्थान दिया गया है।

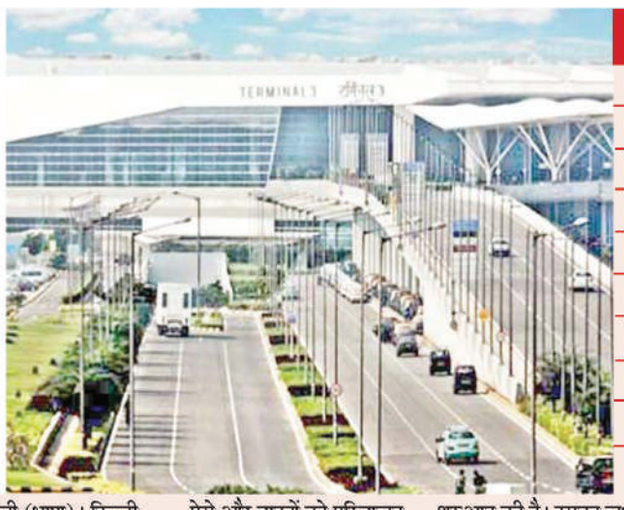

टॉप-10 मोस्ट बिजी एयरपोर्ट

■ अटलांटा एयरपोर्ट	अटलांटा
■ दुबई एयरपोर्ट	दुबई
■ इनेडा एयरपोर्ट	टोक्यो
■ डालास एयरपोर्ट	डालास
■ डेनेवर एयरपोर्ट	डेनेवर
■ हीथ्रो एयरपोर्ट	लंदन
■ ओ हारे एयरपोर्ट	शिकागो
■ इस्तांबुल एयरपोर्ट	इस्तांबुल
■ लास एंजिल्स एयरपोर्ट	लास एंजिल्स
■ आईजीआई एयरपोर्ट	नई दिल्ली

दिल्ली हवाईअड्डे पर अधिक इलेक्ट्रिक वाहन तैनात करेगी डायल

नई दिल्ली (भाषा)। दिल्ली अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डा लिमिटेड (डायल) ने कार्बन उत्सर्जन कम करने के लिए 57 इलेक्ट्रिक वाहनों (ईवी) को तैनात किया है। जल्द ही ऐसे और वाहनों को परिचालन में लाया जाएगा। डायल ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी।

एक बयान के अनुसार, डायल ने ईवी को अपनाने की शुरुआत की है। इसका लक्ष्य चरणबद्ध तरीके से अपने सभी डीजल और पेट्रोल वाहनों को बदलने का है।

डायल ने कहा, 'हमने पहले चरण में अपने 'एयरसाइड' और 'लैंडसाइड' प्रबंधन के लिए 64 ईवी का आर्डर दिया है। उसे इनमें से 57 ईवी मिले हैं, जिन्हें एयरसाइड और लैंडसाइड पर तैनात किया है। सात और ईवी जल्द ही तैनात किए जाएंगे।' 57 इलेक्ट्रिक वाहनों में से 21 को एयरसाइड पर तैनात किया जा रहा है।

हवाई अड्डे की परिचालक ने इस साल जून में हरित परिवहन कार्यक्रम शुरू किया है।

इसका उद्देश्य इस कार्यक्रम के जरिए हरित परिवहन की ओर बदलाव करना है।

डीजीसीए ने गोवा के मोपा हवाईअड्डे के लिए लाइसेंस जारी किया

मुंबई (भाषा)।

नागर विमानन महानिदेशालय (डीजीसीए) ने गोवा के मोपा में जल्द वाणिज्यिक उड़ान सेवाएं शुरू करने के लिए 'हवाईअड्डा लाइसेंस' जारी कर दिया है।

डीजीसीए के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि जीएमआर समूह द्वारा संचालित होने वाले मोपा हवाईअड्डे के लिए 26 अक्टूबर को लाइसेंस जारी किया गया था। यह गोवा का दूसरा हवाईअड्डा होगा। यहां पहले से ही मोरमुगाओ शहर के डाबोलिम में एक हवाई अड्डा है। नया हवाई अड्डा गोवा के उत्तरी भाग में पंजिम से लगभग 35 किलोमीटर दूर होगा और इसका निर्माण चार चरणों में किया जा रहा है। इसके अलावा, डीजीसीए ने विमानन कंपनी इंडिगो को बोइंग विमानों को तुर्की एयरलाइंस से छह महीने तक के लिए पट्टे (लीज) पर देने की अनुमति दे दी है।

सूत्रों ने यह जानकारी देते हुए कहा कि महानिदेशालय ने लंबी अवधि के लिए बोइंग विमानों को पट्टे पर लेने के कंपनी के अनुरोध को ठुकरा दिया है।

दूरसंचार विधेयक में ट्राई की आपत्तियां दूर

नई दिल्ली (भाषा)।

दूरसंचार विभाग ने दूरसंचार विधेयक के मसौदे के कुछ प्रावधानों को लेकर नियामक ट्राई की आपत्तियों पर गौर किया गया है और नियामक को सशक्त बनाने से संबंधित प्रावधानों पर सरकार बाद में विचार कर सकती है। दूरसंचार विभाग से जुड़े सूत्रों ने इसकी जानकारी दी।

दरअसल, विधेयक के प्रारूप के कुछ प्रावधानों से भारतीय दूरसंचार नियामक प्राधिकरण (ट्राई) को अपने अधिकारों में कमी आने की आशंका सता रही है। उसने इस बारे में सरकार से अपनी आपत्तियां भी जताई थीं। इस बारे में पूछे जाने पर सूत्रों ने कहा कि इन आशंकाओं के बारे में दोनों पक्षों के बीच बातचीत हुई है और सभी बकाया मुद्दों का समाधान निकाला जा चुका है। सूत्रों ने कहा कि ट्राई और दूरसंचार विभाग के बीच इस मसले पर अब कोई मतभेद नहीं रह गया है।

दूरसंचार विभाग की सोच यह है कि अमेरिकी संघीय संचार आयोग या ब्रिटिश संचार नियामक आफकाम की तर्ज पर ट्राई को भी सशक्त बनाने के लिए जरूरी प्रावधान तीन-चार साल बाद अलग से किए जा सकते है। फिलहाल सभी विवादास्पद प्रावधानों को विधेयक के मसौदे से हटाने के बारे में विचार किया जा रहा है। सरकार ने पिछले महीने इस विधेयक के मसौदे को हितधारकों की प्रतिक्रिया के लिए सार्वजनिक किया था। इसमें दूरसंचार एवं इंटरनेट सेवाप्रदाताओं का शुल्क एवं जुर्माना हटाने का प्रावधान रखा गया है। इसके मुताबिक, अगर कोई सेवाप्रदाता अपना लाइसेंस लौटा देता है तो उससे लिए गए शुल्क को लौटाने का प्रावधान है।

■ विधेयक के प्रावधानों से अपने अधिकारों में कमी को लेकर सशंकित था ट्राई
■ इसके लिए उसने दर्ज कराई थीं अपनी आपत्तियां
■ विधेयक के प्रावधानों से निकाले जा रहे विवादित मुद्दे

इस बीच, दूरसंचार सेवाप्रदाता 'ओवर-द-टॉप' (ओटीटी) संचार ऐप को भी नियमन के दायरे में लाए जाने की मांग कर रहे है। उनका कहना है कि व्हाट्सऐप, सिग्नल जैसी कालिंग एवं मैसेजिंग सेवाएं देने वाले ऐप को भी दूरसंचार कंपनियों की ही तरह लाइसेंस नियमों के दायरे में लाया जाना चाहिए।

ओटीटी संचार ऐप को नियमन के दायरे में लाने की मांग पर दूरसंचार विभाग के सूत्रों ने कहा कि सरकार का ध्यान लाइसेंसिंग नहीं बल्कि उपयोगकर्ता संरक्षा से संबंधित नियमन पर है। सूत्रों ने कहा कि दूरसंचार विधेयक में स्पैम कालिंग और साइबर धोखाधड़ी से जुड़े पक्षों पर कड़ी कार्रवाई के प्रावधान किए जाएंगे।

चीन से आयातित वस्तुओं से पूरी की जा रही तेजी से बढ़ते उद्योग क्षेत्रों की मांग

नई दिल्ली (भाषा)।

भारत में दूरसंचार और बिजली जैसे तेजी से बढ़ते क्षेत्रों की मांग को पूरा करने के लिए चीन से आयातित प्रमुख वस्तुओं जैसे इलेक्ट्रानिक उपकरणों, कंप्यूटर हार्डवेयर और रसायनों का उपयोग किया जाता है। सरकार के एक अधिकारी ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी।

अधिकारी ने कहा कि चीन से आयातित ये वस्तुएं कच्चे माल के रूप में है। इनका उपयोग तैयार माल के उत्पादन के लिए किया जाता है और निर्यात भी किया जाता है। वाणिज्य मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार, चीन को निर्यात पिछले वित्त वर्ष में मामूली रूप से बढ़कर 21.25 अरब डालर हो गया। यह 2020-21 में 21.18 अरब डालर था, जबकि आयात 2020-21 में लगभग 65.21 अरब डालर से बढ़कर 94.16 अरब डालर हो गया। इसके अलावा 2021-22 में व्यापार घाटा बढ़कर 72.91 अरब डालर हो गया, जो पिछले वित्त वर्ष में 44 अरब डालर था।

चीन के सीमा शुल्क विभाग द्वारा जारी व्यापार आंकड़ों के अनुसार, इस साल जनवरी-सितम्बर के दौरान दोनों देशों के बीच कुल द्विपक्षीय व्यापार 14.6 प्रतिशत बढ़कर 103.63 अरब डालर हो गया। चीन से आयात की जाने वाली प्रमुख वस्तुएं इलेक्ट्रानिक कलपुर्जे, कंप्यूटर हार्डवेयर, दूरसंचार उपकरण, कार्बनिक रसायन, डेयरी के लिए औद्योगिक मशीनरी, इलेक्ट्रानिक उपकरण और थोक दवाएं है।

दस आतंकियों के खातों की जानकारी सरकार को दें बैंक

■ भारतीय रिजर्व बैंक ने सभी बैंकों को जारी किए इसके निर्देश

मुंबई (भाषा)।

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने बृहस्पतिवार को बैंकों और अन्य वित्तीय संस्थानों से उन 10 व्यक्तियों के खातों के बारे में सरकार को ब्योरा देने को कहा, जिन्हें इस महीने की शुरुआत में केंद्रीय गृह मंत्रालय ने आतंकवादी घोषित किया था।

केंद्रीय गृह मंत्रालय ने चार अक्टूबर को गैरकानूनी गतिविधि (रोकथाम) अधिनियम (यूएपीए) के तहत हिजबुल मुजाहिदीन (एचएम), लश्कर-ए-तैयबा (एलईटी) और अन्य प्रतिबंधित संगठनों के कुल 10 सदस्यों को आतंकवादी घोषित किया था।

आतंकवादी घोषित किए गए लोगों में हबीबुल्लाह मलिक उर्फ साजिद जट्ट (एक पाकिस्तानी नागरिक), बासित अहमद रेशी (जम्मू-कश्मीर के बारामूला का निवासी और इस समय पाकिस्तान में है), इम्तियाज अहमद कंडू उर्फ सज्जाद, (जम्मू-कश्मीर के सोपोर का निवासी और इस समय पाकिस्तान में है), जफर इकबाल उर्फ सलीम (पुंछ का निवासी और इस समय पाकिस्तान में है) और शेख जमील-उर-रहमान उर्फ शेख साहब (पुलवामा का निवासी) शामिल है।

आरबीआई ने एक अधिसूचना में कहा, 'विनियमित इकाइयों (आरई) को आवश्यक अनुपालन के तहत केंद्रीय गृह मंत्रालय द्वारा जारी उपरोक्त अधिसूचनाओं को संज्ञान में लेने की सलाह दी जाती है।' इन आरई में बैंक, अखिल भारतीय वित्तीय संस्थान (एक्जिम बैंक, नाबार्ड, एनएचबी, सिडबी और एनएबीएफआईडी) और एनबीएफसी शामिल हैं।

आईडीबीआई बैंक की हिस्सेदारी बिक्री के लिए 'पूछताछ' की अवधि बढ़ी

नई दिल्ली (भाषा)। आईडीबीआई बैंक के निजीकरण के संबंध में संभावित बोलीदाताओं की ओर से पूछताछ या सवाल जमा करने की समयसीमा को 13 दिन बढ़ाकर 10 नवम्बर कर दिया गया है। वित्त मंत्रालय ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी।

मंत्रालय ने सात अक्टूबर को प्रारंभिक सूचना ज्ञापन (पीआईएम) जारी किया था, जिसमें आईडीबीआई बैंक में लगभग 61 प्रतिशत हिस्सेदारी बेचने के लिए बोलियां आमंत्रित की गई थीं। इच्छुक बोलीदाताओं को सवाल पूछने और बोलियां जमा करने के लिए क्रमशः 28 अक्टूबर और 16 दिसम्बर तक का समय दिया गया था। निवेश और लोक संपत्ति प्रबंधन विभाग (दीपम) ने बृहस्पतिवार को पीआईएम से संबंधित एक शुद्धिपत्र जारी किया और पूछताछ की समयसीमा 10 नवम्बर तक बढ़ा दी। सरकार को उम्मीद है कि उसे आईडीबीआई बैंक के लिए वित्तीय बोलियां अगले साल मार्च तक मिल जाएंगी।

सौ अरब डालर के पार होगा कपड़ा निर्यात

नई दिल्ली (एसएनबी)।

केंद्रीय कपड़ा मंत्री पीयूष गोयल ने बृहस्पतिवार को कहा कि अगले पांच-छह वर्षों के देश के कपड़ा निर्यात को बढ़ाकर 100 अरब डालर तक पहुंचाने का इरादा है। इस लक्ष्य के पूरा होने पर कपड़ा उद्योग का कुल मूल्य बढ़कर 250 अरब डालर हो जाएगा। वित्त वर्ष 2021-22 में भारत के कपड़ा उद्योग ने करीब 42 अरब डालर का निर्यात किया था।

गोयल ने निर्यात संवर्द्धन परिषदों के सदस्यों को वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से संबोधित करते हुए कहा कि विनिर्माताओं को मांग पूरी करने के लिए कपास की उपलब्धता सुनिश्चित करने के प्रयास शुरू कर देने चाहिए। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि कपास उद्योग से जुड़े सभी पक्षों को कपास से बने उत्पादों का मूल्य सुनिश्चित करने के लिए मिलकर प्रयास करने भी जरूरत है।

उन्होंने कहा कि पिछले साल कपड़ा निर्यात करीब 42 अरब डालर का रहा था और अगले पांच-छह साल में इसे बढ़ाकर 100 अरब डालर तक ले जाने का लक्ष्य रखा गया है।

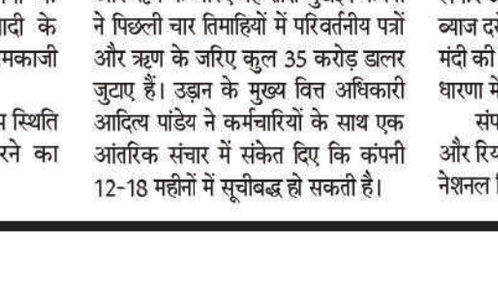

गोयल ने कहा कि कपड़ा निर्यात के इस लक्ष्य को अगर हासिल कर लिया जाता है तो इस उद्योग का कुल घरेलू एवं अंतरराष्ट्रीय बाजार मूल्य सम्मिलित रूप से 250 अरब डालर का हो जाएगा। कृषि मंत्रालय के आंकड़ों के मुताबिक, कपास का उत्पादन फसल सत्र 2022-23 के दौरान 3.41 गांठ रहने का अनुमान है जबकि एक साल पहले यह 3.12 गांठ रहा था। एक गांठ का वजन 170 किलोग्राम का होता है। कपास की बुवाई खरीफ सत्र में होती है और अक्टूबर से इसकी कटाई भी शुरू हो चुकी है।

गोयल ने कहा कि कपड़ा मिशन के तहत उपलब्ध कोष का इस्तेमाल नई परियोजनाओं में किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि जी-20 बैठकों एवं कार्यक्रमों के दौरान भी भारतीय कपड़ा क्षेत्र की संभावनाओं को प्रदर्शित किया जाना चाहिए।

रुपया 48 पैसे की तेजी के साथ 82.33 प्रति डालर पर

मुंबई (भाषा)।

डालर के अपने उच्चतम स्तर से नीचे आने के कारण अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में बृहस्पतिवार को अमेरिकी मुद्रा की तुलना में रुपया 48 पैसे की तेजी के साथ 82.33 प्रति डालर पर बंद हुआ।

अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया 82.15 पर खुला और बाद में इसने 82.14 के उच्चस्तर तथा 82.52 के निचले स्तर को छुआ। कारोबार के अंत में यह अपने पिछले बंद भाव के मुकाबले 48 पैसे मजबूत होकर 82.33 प्रति डालर पर बंद हुआ। पिछले कारोबारी सत्र में रुपया सात पैसे की तेजी के साथ 82.81 रुपए प्रति डालर पर बंद हुआ था। बुधवार को दिवाली बलिप्रतिपदा के मौके पर विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार बंद रहे। छह प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले डॉलर की मजबूती को आंकने वाला डॉलर सूचकांक 0.36 प्रतिशत की तेजी के साथ 110.09 पर था।

सेंसेक्स 213 अंक चढ़ा

मुंबई (भाषा)। वैश्विक बाजारों के मिले-जुले संकेतों के बीच धातु, रियल्टी एवं ऊर्जा शेयरों में जोरदार लिवाली से बृहस्पतिवार को घरेलू शेयर बाजारों के मानक सूचकांक सेंसेक्स और निफ्टी में अच्छी बढ़त दर्ज की गई। बीएसई का 30 शेयरों वाला सेंसेक्स 212.88 अंक यानी 0.36 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 59,756.84 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान एक समय यह 415.98 अंक यानी 0.69 प्रतिशत तक उछल गया था। इसी तरह नेशनल स्टाक एक्सचेंज के निफ्टी ने भी 80.60 अंक यानी 0.46 प्रतिशत की बढ़त दर्ज की और यह 17,736.95 अंक पर बंद हुआ। शेयर बाजारों में बुधवार को 'दिवाली बलिप्रतिपदा' के अवसर पर कारोबार बंद रहा था।

कोटक सिक्योरिटीज लिमिटेड के इक्विटी शोध (खुदरा) प्रमुख श्रीकांत चौहान ने कहा, 'मासिक वायदा एवं विकल्प के निपटान के दिन बाजार में काफी उतार-चढ़ाव देखा गया। लेकिन धातु, रियल्टी और तेल एवं गैस कंपनियों में तेज खरीदारी होने से घरेलू बाजारों ने बढ़त का सिलसिला कायम रखा। भारत की वृद्धि संभावनाओं को लेकर निवेशकों के सकारात्मक बने रहने से बाजार वैश्विक चुनौतियों के बावजूद बढ़त दर्शा रहा है।' सेंसेक्स में शामिल कंपनियों में से टाटा स्टील ने सर्वाधिक 3.02 प्रतिशत की बढ़त दर्ज की। इसके अलावा पावर ग्रिड, सन फार्मा, भारती एयरटेल, टाइटन, एक्सिस बैंक, डा. रेड्डीज लैब और एनटीपीसी भी लाभ कमाने में सफल रहे। दूसरी तरफ, बजाज फाइनेंस, बजाज फिनसर्व, एशियन पेंट्स, टेक महिंद्रा और नेस्ले के शेयर नुकसान में रहे।

एचडीएफसी सिक्योरिटीज के खुदरा शोध प्रमुख दीपक जसानी ने कहा कि रियल्टी, धातु, तेल एवं गैस और ऊर्जा क्षेत्रों के सूचकांकों में अधिक तेजी देखी गई जबकि आईटी सूचकांक सर्वाधिक नुकसान में रहा।

मोलर-मर्स्क के नए गोदाम का संचालन महिलाएं करेंगी

नई दिल्ली (भाषा)।

एकीकृत कंटेनर लाजिस्टिक कंपनी एपी मोलर-मर्स्क ने बृहस्पतिवार को कहा कि उसने उत्तर प्रदेश के दादरी में अपना नया गोदाम तैयार किया है, जिसका संचालन पूरी तरह महिलाएं करेंगी।

इस गोदाम की महिला कर्मचारियों की संख्या 84 है, और इन्हें आसपास के गांवों से काम पर रखा गया है। यह एक लाख वर्ग फुट का गोदाम कंपनी के कंटेनर फ्रेट स्टेशन (सीएफएस) परिसर के भीतर स्थित है। मर्स्क दक्षिण एशिया के प्रबंध निदेशक विकास अग्रवाल ने कहा, 'देशभर में अपने गोदामों का विस्तार करते हुए हम पारंपरिक रूप से पुरुष-प्रधान क्षेत्र में महिलाओं के लिए अवसर पैदा करना चाहते थे। 2021 की जनगणना के अनुसार, दादरी में कुल आबादी के मुकाबले सिर्फ छह प्रतिशत कामकाजी महिलाएं है।'

उन्होंने कहा कि कंपनी ने इस स्थिति को बदलने के लिए काम करने का फैसला किया।

उड़ान ने 990 करोड़ जुटाए, डेढ़ साल में हो सकती है सूचीबद्ध

नई दिल्ली (भाषा)।

बी2बी यानी थोक कारोबार से जुड़े मंच उड़ान ने हाल ही में 12 करोड़ अमेरिकी डालर (करीब 989.89 करोड़ रुपए) जुटाए हैं।

कंपनी ने मौजूदा शेयरधारकों और बांडधारकों की अगुवाई में परिवर्तनीय पत्रों और ऋण के जरिए यह राशि जुटाई। कंपनी ने पिछली चार तिमाहियों में परिवर्तनीय पत्रों और ऋण के जरिए कुल 35 करोड़ डालर जुटाए हैं। उड़ान के मुख्य वित्त अधिकारी आदित्य पांडेय ने कर्मचारियों के साथ एक आंतरिक संचार में संकेत दिए कि कंपनी 12-18 महीनों में सूचीबद्ध हो सकती है।

वैश्विक चुनौतियों से रियल एस्टेट सेक्टर प्रभावित

■ ब्याज दरें बढ़ने से भी इस क्षेत्र में घट रही मांग ■ उद्योग को छह माह में हालात सुधरने की आस

नई दिल्ली (भाषा)।

रियल एस्टेट कंपनियां, निवेशक और वित्तीय संस्थान अगले छह महीनों में रियल्टी क्षेत्र में वृद्धि को लेकर आशान्वित है। हालांकि, ब्याज दरों में वृद्धि और वैश्विक मंदी की आशंकाओं के कारण धारणा में नरमी आई है।

संपत्ति सलाहकार नाइट फ्रैंक और रियल्टी कंपनियों के निकाय नेशनल रियल एस्टेट डेवलपमेंट काउंसिल (नारेडको) ने बृहस्पतिवार को 2022 की तीसरी तिमाही के लिए रियल एस्टेट धारणा सूचकांक रिपोर्ट जारी की।

वैश्विक आर्थिक परिदृश्य के कारण वर्तमान धारणा स्कोर अप्रैल-जून, 2022 के 62 से जुलाई-सितंबर, 2022 में मामूली रूप से घटकर 61 हो गया है।

धारणा सूचकांक कंपनियों, निवेशकों और वित्तीय संस्थानों जैसे आपूर्ति पक्ष के हितधारकों के सर्वेक्षण पर आधारित है। सूचकांक में 50 से ऊपर का स्कोर 'आशावाद' को दर्शाता है, जबकि 50 के स्कोर का मतलब है कि भावना 'समान' या 'स्थिर' है। वहीं 50 से नीचे का स्कोर 'निराशावाद' को दर्शाता है।

नाइट फ्रैंक ने बयान में कहा, 'वर्तमान धारणा सूचकांक का स्कोर मुख्य रूप से वैश्विक अर्थव्यवस्था और रूस-यूक्रेन युद्ध के कारण भू-राजनीतिक जोखिम की वजह से कम हो गया है। हालांकि, इसमें मामूली गिरावट आई है।

यह अभी भी सकारात्मक बना हुआ है, क्योंकि भारतीय अर्थव्यवस्था और रियल एस्टेट की धारणा अबतक मजबूत बनी हुई है।'

चार गेंद पर चार रन नहीं बना सका पाकिस्तान, जिंबाब्वे एक रन से जीता

एजेंसियां, पर्थ

रोमांच से भरे टी-20 विश्व कप में गुरुवार को एक और बड़ा उलटफेर देखने को मिला. जिंबाब्वे ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपने कद से बेहतर प्रदर्शन करते हुए गुरुवार को यहां टी-20 विश्व कप के रोमांचक मुकाबले में पाकिस्तान को एक रन से हरा दिया. जिंबाब्वे ने 131 रन के लक्ष्य का अच्छा बचाव किया और पाकिस्तानी बल्लेबाजों के लगातार अंतराल पर विकेट झटक कर विपक्षी टीम को आठ विकेट पर 129 रन ही बनाने दिये. पाकिस्तान में जन्में ऑल राउंडर सिकंदर रजा ने मध्य के ओवरों में मैच का रुख बदल दिया, जिन्होंने अपने चार ओवर में 25 रन देकर तीन विकेट झटके, जिसमें शान मसूद (44 रन), शादाब खान (17 रन) और हैदर अली का विकेट शामिल था. पाकिस्तान की दो मैचों में दूसरी हार है, उसे एक और रोमांचक मुकाबले में चिर प्रतिद्वंद्वी भारत से चार विकेट से हार का सामना करना पड़ा था. जिंबाब्वे की दो मैचों में यह पहली जीत है. अफ्रीका की इस टीम ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ बारिश के कारण रद्द हुए मैच में अंक बांटे थे.

अंतिम ओवर में जीत के लिए 11 रन की थी जरूरत

पाकिस्तान को अंतिम ओवर में जीत के लिए 11 रन की दरकार थी. नवाज ने तीन रन बनाये और फिर इवांस की धीमी गेंद को चौके के लिए भेजा. पर इवांस ने शानदार वापसी की और अंतिम ओवर की पांचवीं गेंद पर नवाज का विकेट ले लिया, जिससे आखिरी गेंद पर तीन रन बनाने थे. शाहीन अफरीदी अंतिम गेंद पर रन आउट हो गये.

अंतिम ओवर का रोमांच : गेंदबाज इवांस

- पहली गेंद : नवाज ने तीन रन लिये
- दूसरी गेंद : वसीम ने चौका जड़ा
- तीसरी गेंद : वसीम ने एक रन लिया
- चौथी गेंद : कोई रन नहीं
- पांचवीं गेंद : नवाज कैच आउट
- छठी गेंद : शाहीन शाह अफरीदी एक रन लिये, दूसरा रन लेते वक्त रन आउट हो गये

सेमीफाइनल की राह कठिन : अब जीतने होंगे तीनों मैच

पाकिस्तान को सेमीफाइनल में पहुंचने के लिए नीदरलैंड, दक्षिण अफ्रीका और बांग्लादेश को बड़े अंतर से हराना होगा. तब ही छह अंकों के साथ उम्मीद जगेगी. इस ग्रुप से अफ्रीका और जिंबाब्वे तीन-तीन अंक लेकर दूसरे स्थान पर हैं. दोनों एक भी मैच जीत लेते हैं, तो पांच अंक हो जायेंगे. पाकिस्तान के एक मैच भी हारने पर चार अंक ही होंगे.

दक्षिण अफ्रीका की बांग्लादेश पर रिकॉर्ड 104 रन से जीत

सिडनी. रिली रोसेयु के शतक और एनरिच नॉर्किया के चार विकेट की मदद से दक्षिण अफ्रीका ने टी-20 विश्व कप के मैच में गुरुवार को बांग्लादेश को 104 रन से हरा दिया. टी-20 विश्व कप में दक्षिण अफ्रीका की बांग्लादेश पर सबसे बड़ी जीत है. गुरुवार को रोसेयु ने 56 गेंद में सात चौकों और आठ छक्कों से 109 रन की पारी खेलने के अलावा क्विंटन डिकॉक (38 गेंद में 63 रन, सात चौके, तीन छक्के) के साथ दूसरे विकेट के लिए 163 रन की साझेदारी भी की, जिसकी मदद से दक्षिण अफ्रीका ने पांच

विकेट पर 205 रन बनाये. इसके बाद नॉर्किया ने टी-20 में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करके 10 रन देकर चार विकेट लिये. बांग्लादेश की टीम 16.3 ओवर में 101 रन ही बना सकी.

टी-20 विश्व कप सुपर-12 : अंक तालिका

टीम	मैच	जीते	हारे	अंक	नेट रन रेट
ग्रुप-ए					
न्यूजीलैंड	2	1	0	3	4.450
श्रीलंका	2	1	1	2	0.450
इंग्लैंड	2	1	1	2	0.239
आयरलैंड	2	1	1	2	-1.169
ऑस्ट्रेलिया	2	1	1	2	-1.555
अफगान	2	0	1	1	-0.620
ग्रुप-2					
भारत	2	2	0	4	1.425
द अफ्रीका	2	1	0	3	5.200
जिंबाब्वे	2	1	0	3	0.050
बांग्लादेश	2	1	1	2	-2.375
पाकिस्तान	2	0	2	0	-0.050
नीदरलैंड	2	0	2	0	-1.625

फील्ड बाइट्स

बोपन्ना और मिडेलकूप एर्स्टे बैंक ओपन के क्वार्टर फाइनल में

वियना. भारत के रोहन बोपन्ना और नीदरलैंड के मेटवे मिडेलकूप ने अर्जेंटीना के पेड्रो कोचिन और डिएगो श्वार्त्जमैन को सीधे सेटों में हरा कर एर्स्टे बैंक ओपन के क्वार्टर फाइनल में प्रवेश कर लिया. बोपन्ना और मिडेलकूप ने 6-1, 6-3 से जीत दर्ज की. अब उनका सामना आंद्रेस मोल्टेनी और सैंटियागो गोंजालेस से होगा, जिन्होंने वेसले कूलहोफ और नील स्कूपस्की को 7-6, 7-5 से हराया.

फुटबॉल टूर्नामेंट आज से

रांची. जेएसएफ क्लब बरतुआ के तत्वावधान में पांच दिवसीय फुटबॉल टूर्नामेंट शुक्रवार से शुरू होगा. पंचायत खेल मैदान पर दोपहर एक बजे से टूर्नामेंट के उद्घाटन मुकाबले में जयराम स्पोर्टिंग बीसा व एसएसएफसी सोसो से होगी. दूसरे मैच में एमडी स्पोर्टिंग चुट्टू व एफसी कोयलारी आमने-सामने होंगे. उद्घाटन सांसद आदित्य प्रसाद साहू व ओरमांझी प्रखंड की प्रमुख अनुपमा देवी करेंगे.

सुजीत मुंडा को किया सम्मानित

रांची. भारतीय ब्लाइंड क्रिकेट टीम में चयनित रांची के सुजीत मुंडा को गुरुवार को सरना समिति भारत की ओर से सम्मानित किया गया. समिति के अध्यक्ष नारायण उरांव, राष्ट्रीय आदिवासी छात्र संघ के अध्यक्ष संगम उरांव, राजी पाड़हा सरना प्रार्थना सभी के प्रदेश अध्यक्ष रवि तिग्गा ने सुजीत मुंडा को सरना गमछा व बुके देकर सम्मानित किया.

टी-20 विश्व कप. दो मैच जीत कर ग्रुप-2 में शीर्ष पर पहुंची भारतीय टीम

कोहली, सूर्या व रोहित की तूफानी पारी, भारत ने नीदरलैंड को धोया

एजेंसियां, सिडनी

सूर्यकुमार यादव के 25 गेंद में नाबाद 51 रन, विराट कोहली और रोहित शर्मा के अर्धशतकों के दम पर भारत ने गुरुवार को नीदरलैंड को 56 रन से हराकर टी-20 विश्व कप में लगातार दूसरी जीत दर्ज की. पिछले मैच में चिर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान पर चमत्कारिक जीत दर्ज करने वाली भारतीय टीम ने पहले बल्लेबाजी करते हुए दो विकेट पर 179 रन बनाये. जवाब में नीदरलैंड की टीम इस 'बेमेल' मुकाबले में नौ विकेट पर 123 रन ही बना सकी. कप्तान रोहित ने 39 गेंद में 53 रन बना कर भारतीय पारी की दिशा तय की, जबकि पाकिस्तान के खिलाफ असंभव लग रही जीत दिलाने वाले कोहली ने 44 गेंद में नाबाद 62 रन बनाये. कोहली ने दूसरे विकेट के लिए रोहित के साथ 73 और तीसरे विकेट की अटूट साझेदारी में सूर्य के साथ 95 रन जोड़े. केएल राहुल लगातार दूसरी बार नाकाम रहे और 12 गेंद में नौ रन ही बना सके. राहुल बदकिस्मत रहे, क्योंकि दाहिने हाथ के तेज गेंदबाज पॉल वान मीकेरेन की गेंद उनके पैड को लगी और लग रहा था कि लेग स्टम्प के बाहर है, लेकिन कप्तान रोहित ने उन्हें रिव्यू लेने से मना किया. पावर प्ले में एक विकेट पर 32 रन बनानेवाली भारतीय टीम ने अंतिम दस ओवरों में 112 रन बनाये.

स्कोर बोर्ड

भारत	रन	बॉल	4	6
राहुल पगबाधा बो वान मीकेरेन	09	12	1	0
रोहित कै एकेरमैन बो क्लासेन	53	39	4	3
विराट कोहली नाबाद	62	44	3	2
सूर्यकुमार यादव नाबाद	51	25	7	1

अतिरिक्त : 04. **कुल** : 2/179 (20 ओवर). **विकेट पतन** : 1-11, 2-84. **गेंदबाजी** : क्लासेन 4-0-33-1, प्रिंगल 4-0-30-0, मीकेरेन 4-0-32-1, डि लीड 3-0-33-0, वान बीक 4-0-45-0, अहमद 1-0-5-0.

नीदरलैंड	रन	बॉल	4	6
विक्रमजीत सिंह बो भुवनेश्वर	01	09	0	0
मैक्स ओडाउड बो पटेल	16	10	3	0
बास डि लीड कै पंड्या बो पटेल	16	23	0	0
एकेरमैन कै पटेल बो अश्विन	17	21	1	0
टॉम कूपर कै हुड्डा बो अश्विन	09	12	0	0
एडवर्डस कै हुड्डा बो भुवनेश्वर	05	08	0	0
टिम प्रिंगल कै कोहली बो शमी	20	15	1	1
वान बीक कै कार्तिक बो अर्शदीप	03	05	0	0
शारिज अहमद नाबाद	16	11	2	0
फ्रेड क्लासेन पगबाधा बो अर्शदीप	00	01	0	0
पॉल वान मीकेरेन नाबाद	14	06	3	0

अतिरिक्त : 06. **कुल** : 9/123 (20 ओवर). **विकेट पतन** : 1-11, 2-20, 3-47, 4-62, 5-63, 6-87, 7-89, 8-101, 9-101. **गेंदबाजी** : भुवनेश्वर 3-2-9-2, अर्शदीप 4-0-37-2, शमी 4-0-27-1, अक्षर 4-0-18-2, हार्दिक 1-0-9-0, अश्विन 4-0-21-2.

34वां छक्का जड़ा अपना विश्व कप का रोहित शर्मा ने, ऐसा करनेवाले भारत के पहले क्रिकेटर बन गये हैं. रिकॉर्ड युवराज के नाम था, जिन्होंने 33 छक्के जड़े थे.

51 रन की ताबड़तोड़ पारी खेली सूर्यकुमार ने नीदरलैंड के खिलाफ

गेल को पीछे छोड़ा कोहली ने, विश्व रिकॉर्ड के करीब

62 रन की नाबाद पारी खेली कोहली ने. गेल को पीछे छोड़ वे अब टी-20 विश्व कप में रन बनानेवाले में दूसरे नंबर पर आ गये हैं. कोहली के 23 मैचों में 989 रन हो गये हैं. अब माहेला जयवर्धने आगे हैं, जिन्होंने 1016 रन बनाये हैं. अगले मैच में कोहली यह रिकॉर्ड तोड़ सकते हैं.

अपनी पारी से खुश नहीं हैं भारतीय कप्तान

सिडनी. भारतीय कप्तान रोहित शर्मा टीम की नीदरलैंड पर गुरुवार को यहां टी-20 विश्व कप में मिली जीत से काफी प्रसन्न हैं, लेकिन वह खुद की 53 रन की पारी से इतने खुश नहीं हैं. भारतीय कप्तान ने कहा कि अपने अर्धशतक से ज्यादा खुश नहीं हूं. रोहित ने मैच के बाद कहा कि सबसे महत्वपूर्ण रन जुटाना है, यह मायने नहीं रखता कि ये कैसे मिले. अंत में यह आत्मविश्वास बरकरार रखने की बात है.

खेलमंत्री ने फ्लैग ऑफ कर यूथ फोरम में जाने वाली टीम को रवाना किया

रांची. म्यूनिख (जर्मनी) में आयोजित 13वें इंटरनेशनल सीआइपीसी यूथ फोरम में भाग लेने झारखंड से भारतीय दल में स्नेहा सिंह कंडुलना, अंशु प्रिया बाखला, आयशा एंजेला लकड़ा, शालोम नोआह और मैनेजर डेनिस डॉसन गुरुवार को रवाना हुए. खेल मंत्री हफीजुल हसन ने टीम को फ्लैग ऑफ करके विदाई दी. उन्होंने सभी प्रतिभागियों को इंटरनेशनल यूथ फोरम में अच्छा प्रदर्शन करने की शुभकामनाएं दी. इससे पहले स्पोर्ट्स अथॉरिटी ऑफ झारखंड में फ्लैग ऑफ सेरेमनी का आयोजन किया गया. इमसें मुख्य अतिथि के रूप में आइपीसीए के प्रेसिडेंट दिलीप तिर्की, विशिष्ट अतिथि कोलकाता थंडरबोल्ट्स के चेयरमैन पवन कुमार पटौदिया मौजूद थे. खेल निदेशक सरोजनी लकड़ा ने यूथ फोरम के बारे में बताया. मौके पर शिवेंद्र दुबे, चंचल भट्टाचार्य सहित अन्य मौजूद थे.

कोविड पॉजिटिव वेड खेल सकते हैं इंग्लैंड से मैच

मेलबर्न. विकेटकीपर बल्लेबाज मैथ्यू वेड इंग्लैंड के खिलाफ टी-20 विश्व कप के ऑस्ट्रेलिया के महत्वपूर्ण मुकाबले से पहले कोविड-19 पॉजिटिव पाये जाने वाले गत चैंपियन टीम के दूसरे खिलाड़ी बन गये. पंद्रह सदस्यीय टीम में शामिल एकमात्र विकेटकीपर 34 साल के वेड में हल्के लक्षण नजर आ रहे हैं, लेकिन मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड (एमसीजी) में उनके इंग्लैंड के खिलाफ खेलने की संभावना है. अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आइसीसी) के नियम कोविड-19 पॉजिटिव पाये जाने पर खिलाड़ी को मैच में हिस्सा लेने से नहीं रोकते. वेड ने गुरुवार को ऑस्ट्रेलिया के वैकल्पिक इंडोर ट्रेनिंग सत्र में हिस्सा नहीं लिया.

खो-खो कोच अजय झा को पितृ शोक

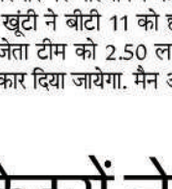

रांची. खो-खो के कोच अजय झा व खेल प्रशासक सह खेल पत्रकार संजय झा के पिता पीतांबर झा का निधन गुरुवार सुबह हार्ट अटैक से हो गया. वे 84 वर्ष के थे और 2002 में सदर अस्पताल से सेवानिवृत्त हुए थे. शाम को हरमू मुक्तिधाम में उनका अंतिम संस्कार किया गया. मौके पर खेल निदेशक सरोजनी लकड़ा, गोविंद झा, चंचल भट्टाचार्य सहित कई खेल संघों के पदाधिकारी और खिलाड़ी मौजूद थे. इसके अलावा कई खिलाड़ियों और पत्रकारों ने उनको श्रद्धांजलि अर्पित की.

नामकुम में फुटबॉल टूर्नामेंट शुरू, खूंटी का जीत से आगाज

नामकुम. सोहराई जतरा के अवसर पर बुलेट कवाली के तत्वावधान में सात दिवसीय फुटबॉल टूर्नामेंट शुरू हुआ. इसका उद्घाटन मुख्य अतिथि डीएसपी नीरज कुमार, विशिष्ट अतिथि इंस्पेक्टर सुनील कुमार तिवारी, सीता लकड़ा, रिया तिर्की, रामअवतार केरकेट्टा, वीणा कुमारी, बिपिन टोप्पो व लक्ष्मी कुमारी ने स्व सावना लकड़ा और शहीद राय मुंदी की तस्वीर पर माल्यार्पण कर किया. उद्घाटन मुकाबले में बीएफसी रिमिक्स बालू घाट खूंटी ने बीटी 11 को हराया. टूर्नामेंट का फाइनल दो नवंबर को खेला जायेगा. विजेता टीम को 2.50 लाख रुपये, जबकि उप विजेता को 1.75 लाख रुपये का पुरस्कार दिया जायेगा. मैन ऑफ द सीरीज को पुरस्कार में स्कूटी दी जायेगी.

2015 के बाद से खिताब नहीं जीत सकी है बार्सिलोना की टीम, एटलेटिको नहीं कर सका क्वालिफाइ

बायर्न से हार बार्सिलोना चैंपियंस लीग से बाहर

एजेंसियां, जिनेवा

बार्सिलोना की टीम बायर्न म्यूनिख के खिलाफ 0-3 की हार के साथ चैंपियंस लीग फुटबॉल टूर्नामेंट से बाहर हो गयी. एटलेटिको मैड्रिड की टीम भी बायर लीवरकूसेन के खिलाफ 2-2 से ड्रॉ खेलने के बाद अगले दौर में जगह बनाने में विफल रही. एटलेटिको को अंतिम लम्हों में पेनल्टी किक मिली थी, लेकिन इसके बावजूद टीम गोल करने में नाकाम रही और पोर्टो ने नॉकआउट में जगह बनायी. पोर्टो ने इससे पहले ग्रुप में शीर्ष पर चल रहे ब्रुज को 4-0 से हराया था. स्पेन की दो दिग्गज टीमें बार्सिलोना और एटलेटिको मैड्रिड प्री-क्वार्टर फाइनल का हिस्सा नहीं होंगी. लीवरपूल ने ग्रुप ए में अजैक्स को 3-0 से हराकर एक मैच शेष रहते नॉकआउट में जगह पक्की की.

रेफरी ने टोटेनहैम के कोच एंटोनियो को दिखाया लाल कार्ड : ग्रुप डी में टोटेनहैम और स्पोर्टिंग लिस्बन का मैच 1-1 से बराबर रहा. हैरी केन गोल किया, वीएआर की सहायता से ऑफ साइड करार दिया गया. टोटेनहैम के कोच एंटोनियो कोंटे ने नाराजगी जाहिर की, जिसके लिए उन्हें लाल कार्ड दिखाया गया.

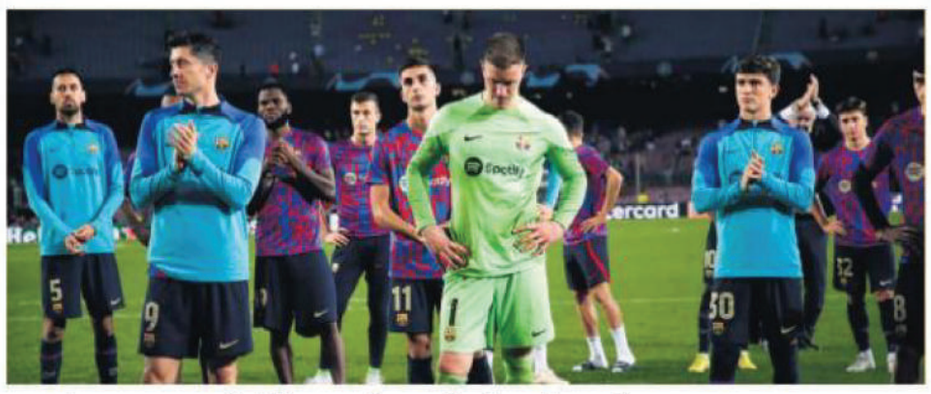

अगले सप्ताह चार टीमों के पास प्री-क्वार्टर में जाने का मौका

इस ग्रुप का अंतिम दौर अगले हफ्ते होगा और सभी चार टीम के पास नॉकआउट में जगह बनाने का मौका है. शीर्ष पर चल रही टोटेनहैम की टीम अगले मंगलवार को अंतिम स्थान पर चल रहे मार्सिले से भिड़ेगी. बुधवार को मार्सिले को 2-1 से हराने वाला एंट्रैक्ट फ्रैंकफर्ट अब स्पोर्टिंग से खेलेगा. बार्सिलोना की नॉकआउट में जगह बनाने की उम्मीद हालांकि उसी समय टूट गयी थी, जब इंटर मिलान जीता.

समान वेतन का महिला क्रिकेटरों ने किया स्वागत, अब आइपीएल से है बड़ी उम्मीदें

मैच फीस में वृद्धि

एजेंसियां, नयी दिल्ली

भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआइ) के केंद्रीय अनुबंधित महिला और पुरुष क्रिकेटरों को समान मैच फीस देने के फैसले की क्रिकेट जगत ने प्रशंसा की है, लेकिन विशेषज्ञों का कहना है कि यह खेल को लैंगिक समानता की ओर पहुंचाने के लिए महज एक कदम है और अधिक समावेशिता तभी हासिल की जा सकती है, जब मार्च में महिलाओं की शुरुआती इंडियन प्रीमियर लीग आयोजित की जायेगी. नयी व्यवस्था के तहत बीसीसीआइ महिला क्रिकेटरों को भी अब पुरुष क्रिकेटरों के समान प्रत्येक टेस्ट के लिए 15 लाख रूपये, वनडे के लिए छह लाख और टी-20 के लिए तीन लाख

रुपये मैच फीस देगा. भारत के लिए पांच टेस्ट, 116 वनडे और 41 टी-20 मैच खेलने वाली पूर्व भारतीय तेज गेंदबाज अमिता शर्मा ने कहा कि यह स्वागत योग्य कदम है, यह सकारात्मक कदम है, लेकिन केंद्रीय अनुबंध देखें, तो हम अब भी लैंगिक समानता से काफी दूर हैं. पूर्व भारतीय कप्तान डायना एडुल्जी ने कहा कि मैं बीसीसीआइ को महिलाओं की मैच फीस पुरुषों के बराबर करने के लिए बधाई देती हूं. महिलाओं की आइपीएल भी जल्द ही आ रही है, इससे काफी बड़ी संख्या में हमारी महिला क्रिकेटरों पर सकारात्मक असर पड़ेगा.

गर्भाशय कैंसर

जरूरी हैं इससे जुड़ी बातों को जानना

70 में से 1 महिला को गर्भाशय का कैंसर होता है, यह गायनेकोलॉजी से संबंधित सबसे खतरनाक कैंसर में से एक है क्योंकि अब तक गर्भाशय कैंसर की जांच के लिए कोई भी भरोसेमंद गायग्नोस्टिक स्क्रीनिंग उपलब्ध नहीं है। ऐसे में, एडवांस स्टेज तक पहुंचने तक या तो इसकी पहचान नहीं हो पाती है अथवा रिपोर्ट गलत आती है। 75 प्रतिशत से भी अधिक मामलों में इसका पता एडवांस स्टेज में पहुंचने के बाद चलता है। सिर्फ 19 प्रतिशत मामलों का ही शुरुआत में पता लग पाता है। जिन महिलाओं की समस्या का एडवांस स्टेज में पहुंचने के बाद पता लगता है, उनमें से अधिकतर 5 साल तक भी जीवित नहीं रह पाती हैं। गर्भाशय कैंसर कोई भेदभाव नहीं करता है। यह किसी भी उम्र और किसी भी समुदाय की महिला को हो सकता है। यहां तक कि 1 साल की बच्ची को भी गर्भाशय कैंसर का पता चल चुका है। गर्भाशय कैंसर को लेकर लोगों में जागरूकता की कमी इससे बचाव के आगे सबसे बड़ा रोड़ा है।

रिस्क फैक्टर्स

आनुवांशिक कारण

- गर्भाशय कैंसर के हर पांच में से एक मामले में पारिवारिक इतिहास जिम्मेदार होता है और जीन में बदलावों के साथ अगली पीढ़ी में खतरा और बढ़ जाता है। इसमें बीआरसीए1 और बीआरसीए2 जीन में बदलाव शामिल है, जो स्तन और गर्भाशय कैंसर से संबंधित है।
- ब्रेस्ट कैंसर, गर्भाशय कैंसर या कोलन कैंसर का व्यक्तिगत अथवा पारिवारिक इतिहास है।
- उन महिलाओं को गर्भाशय कैंसर होने का खतरा ज्यादा होता है जिनके किसी करीबी रिश्तेदार में गर्भाशय, स्तन या कोलन कैंसर का इतिहास रहा हो। कैंसर के पारिवारिक इतिहास वाली महिलाओं को शुरू से ही अपने डॉक्टर से बात करके यह जानकारी लेनी चाहिए कि उनके लिए कौन-सी स्क्रीनिंग आदि कराना फायदेमंद रहेगा।
- उम्र बढ़ना
- अनचाही इनफर्टिलिटी
- कभी भी अपने परिवार की महिला सदस्यों, दोस्तों और सहकर्मियों और खासतौर से अपने फैमिली फिजिशियन से गर्भाशय कैंसर से जुड़े संभावित जीवन रक्षक उपायों के बारे में चर्चा करने से बिल्कु ल न हिचकें। जितना ज्यादा हमें जानकारी होगी, शुरुआत में बीमारी का पता लग पाने की उम्मीद उतनी ही अधिक होगी। इससे गर्भाशय कैंसर के खिलाफ जंग हारने का खतरा भी काफी कम हो जाएगा।

लक्षण

- हालांकि गर्भाशय कैं सर के लक्षण गंभीर या गहरे नहीं होते हैं, खासतौर से शुरुआती दिनों में, लेकिन ये पूरी तरह साइलेंट भी नहीं होते हैं। जब इसे एक साइलेंट बीमारी के तौर पर ध्यान देते हैं तो पता चलता है कि गर्भाशय कैंसर से पीड़ित 95 फीसद महिलाओं को अस्पष्ट लेकिन स्थायी लक्षण होते हैं। ओवेरियन कैंसर से पीड़ित महिलाओं में निम्नलिखित लक्षण दिखाई दे सकते हैं :
- सूजन
- पेड़ू या पेट में दर्द
- खाने में परेशानी महसूस होना और जल्दी पेट भरा हुआ महसूस होना
- बार-बार पेशाब आना
- गर्भाशय कैंसर के अन्य लक्षणों में बहुत ज्यादा थकान, अपच, छाती में जलन, पेट खराब होना, कमर के निचले हिस्से में दर्द और पैरों में दर्द जैसे लक्षण सामने आ सकते हैं। आंतों की आदत में बदलाव जैसे कि कब्ज या डायरिया होना, वजन कम होना, माहवारी अनियमित होना और सांस लेने में कठिनाई जैसे लक्षण भी इसमें दिखाई दे सकते हैं।
- अगर आपको इनमें से कुछ लक्षण दिखाई दें और ये 2 हफ्तों तक बरकरार रहें तो अपने डॉक्टर से सलाह जरूर लें।

गर्भाशय कैंसर स्क्रीनिंग टेस्ट

- अगर महिला में कोई भी लक्षण दिखाई न दें तो गर्भाशय कैंसर की जांच के लिए कोई भी विश्वसनीय तरीका उपलब्ध नहीं है। हालांकि नियमित गायनेको लॉजी टेस्ट के दौरान गर्भाशय कैंसर का पता लगाने के दो तरीके हैं- पहला है ब्लड टेस्ट जिसमें प्रोटीन, जिसे सीए-125 कहते हैं, का बढ़ा हुआ लेवल जांचते हैं। दूसरा तरीका है गर्भाशय का अल्ट्रासाउंड टेस्ट।

गर्भाशय कैंसर की सर्जरी

- अगर बीमारी का शक होता है तो गायनेको लॉजिक ऑन्कोलॉजिस्ट द्वारा सर्जरी कराया जाना चाहिए, जिन्हें महिलाओं के प्रजनन सिस्टम संबंधी कैंसर के इलाज का प्रशिक्षण मिला हो। इस सर्जरी का उद्देश्य होता है, जहां तक हो सके, कैंसर वाले हिस्से को हटा देना।

साइलेंट किलर से लेकर एक स्पिरिंग बीमारी

- गर्भाशय कैंसर पूरी तरह साइलेट बीमारी नहीं है लेकिन इसके लक्षणों को पहचानने के लिए महिलाओं को अपने शरीर की स्पिरिंग आवाज को सुनना और इसके लक्षणों को पहचानना पड़ता है। आपको कोई गायनेकोलॉजिकल कैसर है, तो अगर अपना इलाज एक गायनेकोलॉजिकल कैसर विशेषज्ञ से कराएंगी तो आपके सकुशल का उम्मीद ज्यादा रहेगी।

- हम चाहते है कि महिलाएं गायनेकोलॉजिकल कैसर के खतरे को कम से कम करने के लिए कुछ चरणों के बारे में अवशय जानकारी रखें। विशेषज्ञों की बेहतरीन टीम के साथ हम यहां उनकी सहायता के लिए मौजूद रहते हैं।

डॉ. रीनू जैन

कंसल्टेंट, डिपार्टमेंट ऑफ ऑब्सटेट्रिक्स एंड गायनेकोलॉजी, जेपी हॉस्पिटल, नोएडा

बारिश के पानी में कागज की कश्ती (व्यंग्य)

बरसात में भी बारिश न होने पर समझदारों दवारा किए गए हवन के धुंए से कुपित इंद्रदेव ने इतना पानी सप्लाई कर दिया कि शहर के बाजारों में तीन फुट पानी खड़ा हो गया। दुकानदारों ने म्युनिसिपल कमेटी में फोन किया तो सूचना मिली कि काफी कर्मचारी क्वारंटीन हैं और बाकी वार्षिक वृक्षारोपण में अति व्यस्त हैं। पालिका अध्यक्ष को फोन किया, उन्होंने सुना नहीं। पार्षद राजा को किया तो झट से काट दिया, लगा दुखी वोटरों की प्रार्थनाओं के कारण क्वारंटीन हैं। काफी देर बाद, बड़ी मुश्किल से चार बंदे, अध्यक्ष महाराज के दरबार में हाजिर हुए, शुक्र है जनाब विराजमान रहे। महंगा सुरक्षा मास्क गले में लटकाए हुए बोले, मैं वन मंत्रीजी को पौधे पकड़ा रहा था, कुछ भी हो जाए हम सबने मिलकर हरा भरा पर्यावरण बढ़ाना ही है, आप लोगों की क्या सेवा करूं।

आम लोगों ने खास बंदे से गुजारिश की, जनाब आप खुद चलकर देखें, बारिश के दो दिन बाद भी बाजार में इस समय डेढ फुट पानी खड़ा है। ग्राहक गायब, बिजनेस ठप्प, लोग हाथ में जूते उठाकर चल रहे हैं। घरों के बाहर भी पानी पसरा है। अध्यक्ष बोले सकारात्मक सोचो मित्रो, कितना आशीर्वाद दिया इंद्रदेवजी ने, आपके घर के बाहर पानी आया है। आपके घर में अगर सब स्वस्थ हैं, तो बच्चों को बोलो कागज की कश्तियाँ बना कर पानी में तैराएं। इस मौके पर आपको भी अपना बचपन याद आ जाएगा। जनता बोली, यह संजीदा मामला है अध्यक्षजी जब भी बारिश होती है पानी ऐसे ही रुकता है। चार साल पहले नगरपालिका ने सीमेंट का फर्श डलवाया था तब से हर साल बरसात के मौसम में पानी दुकानों में घुस जाता है। अध्यक्ष ने स्पष्ट घोषणा की, जब फर्श डाला गया था तब दूसरी पार्टी की सरकार थी और हम भी अध्यक्ष न थे। घबराएं नहीं, हमने इस समस्या को गर्दन से पकड़ लिया है, गहन विचार जारी है, पानी की ज्यादा बेहतर निकासी के लिए ठोस योजना बनाई जा रही है। फिलहाल नालियां साफ करने का आदेश दे दिया है। दुकानदारों ने कहा पांच साल से ऐसा ही हो रहा है।

पुरानी बातें भूल जानी चाहिए, अध्यक्ष बोले, हम समय निकाल कर देखेंगे कि पहले क्या क्या गलत हो चुका है। आपको यह जानकर खुशी होगी, कामकाज दोबारा शुरू हो चुका है और हमने इस मामले को राष्ट्रीय स्वच्छता मिशन के अंतर्गत ले लिया है। हम क्षेत्र की साफ सफाई के बारे में बहुत संजीदा ढंग से बैठकें करने जा रहे हैं जिसमें गहन विचार विमर्श कर संकल्प लिया जाएगा। आपको पता ही है अच्छे काम को बढ़िया तरीके से करने में वक़्त तो लगता ही है। यह तो नीली छतरी वाले की गलती के कारण बारिश ज्यादा हो गई, नहीं तो आपको कोई दिक्कत नहीं होती, प्राकृतिक आपदा के सामने हम सब मजबूर हो जाते हैं। हमने मेहनत कर महामारी पर भी काबू पा ही लिया है लेकिन फिर भी आप ध्यान रखें।

दुकानदारों ने वापिस घर पहुंच कर देखा तो बच्चे बारिश के पानी में कागज की कश्ती से सचमुच खेल रहे थे, बोले, देखो पापा, आप भी बचपन में ऐसा ही करते थे न?

'बीच' के अलावा, गोवा में ये भी हैं घूमने लायक जगहें

गोवा की सबसे खूबसूरत और ज्यादा घूमने जाने वाले जगहों में दूध सागर वॉटरफॉल का नाम आता है। इस वाटरफॉल को दूध सागर इसलिए कहा जाता है, क्योंकि ऊपर से देखने पर इसका पानी दूध की तरह सफेद दिखाई पड़ता है। यह वाटरफॉल मंडोवी नदी पर स्थित है।

लगभग 6 महीने से लोग कोरोना वायरस की वजह से अपने घरों में कैद होकर रह गए हैं। हालाँकि अब धीरे-धीरे देश भर में अनलॉक की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है तो पर्यटक भी अब बाहर निकलना और घूमने की इच्छा रख रहे हैं। ऐसे में हम आपको गोवा के बारे में बताएँगे, जहां कोरोना के मामले कम होने के कारण घूमना सुरक्षित बताया जा रहा है। अगर आप भी गोवा घूमने की तैयारी कर रहे हैं, तो वहां की सरकार द्वारा जारी गाइडलाइन को ध्यान में जरूर रखें, जिससे आपको कोई परेशानी नहीं होगी।

गोवा सरकार के अनुसार गोवा आने वाले सभी पर्यटकों के फोन में आरोग्य सेतु एप का होना अनिवार्य है, वहीं सभी पर्यटकों के पास कोरोना नेगेटिव का सर्टिफिकेट भी जरूर होना चाहिए। सरकार का कहना है कि सभी पर्यटक अनिवार्य रूप से मास्क पहनें तथा अपने पास ग्लब्स व सेनेटाइजर की बोतल जरूर रखें।

इसके बाद अगर हम गोवा में घूमने लायक जगहों की बात करें तो खूबसूरत समुद्र-तटों के लिए प्रसिद्ध गोवा में आपको एक से बढ़ कर एक बीच देखने को मिलेंगे। आइये एक नजर डालते हैं।

पालोलम बीच

पालोलम बीच शांतिपूर्ण वातावरण वाला बीच है। इस बीच के किनारे खूबसूरत ताड़ के पेड़ एक लाइन से लगे हुए हैं, वहीं इस बीच पर बनी लकड़ी की सुंदर झोपड़ियां आपका मन मोह लेंगी। इसके साथ ही इस बीच के बारे में एक और बेहद प्रसिद्ध चीज है और वह है यहां आयोजित होने वाला डिस्को!

इसमें हर एक व्यक्ति को पर्सनल हेडफोन दिया जाता है ताकि दूसरा गाने को सुन ना पाए और डिस्टर्ब न हो सके।

दूध सागर वाटर फॉल

गोवा की सबसे खूबसूरत और ज्यादा घूमने जाने वाले जगहों में दूध सागर वॉटरफॉल का नाम आता है। इस वाटरफॉल को दूध सागर इसलिए कहा जाता है, क्योंकि ऊपर से देखने पर इसका पानी दूध की तरह सफेद दिखाई पड़ता है। यह वाटरफॉल मंडोवी नदी पर स्थित है। यह वाटरफॉल भगवान महावीर सैंक्चुरी और मूलम नेशनल पार्क के बीच स्थित है। यहाँ के सुंदर हरे-भरे माहौल लोगों का मन सहज ही आकर्षित कर लेते हैं।

बोम जीसस बेसिलिका चर्च

ओल्ड गोवा में स्थित यह बेहद पुराना चर्च अपनी खूबसूरती के लिए जाना जाता है और जिंदगी की भागदौड़ से परेशान लोग शांति की तलाश में इस चर्च में आते हैं। बेहद खूबसूरत वास्तु कला का नमूना यह चर्च सेंट फ्रांसिस जेवियर के अवशेषों को सुरक्षित रखने के लिए भी जाना जाता है।

इसे भी पढ़ें: जानिये देश के सबसे स्वच्छ शहर इंदौर के प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों और खानपान के बारे में

अगौडा फोर्ट

कहा जाता है कि इस किले का निर्माण निर्माण 17वीं शताब्दी में हुआ था, तथा इसका निर्माण पुर्तगालियों द्वारा किया गया था। गोवा आने वाला हर पर्यटक इस खूबसूरत किले को देखने जरूर आता है।

सैटरडे नाइट मार्केट

अगर आप खरीददारी के शौकीन हैं तो गोवा में हर शनिवार को लगने वाले साप्ताहिक बाजार में आना ना भूलें। इस बाजार में काफी सस्ती और खूबसूरत चीजें आपको आसानी से मिल जाएँगी तो वहीं यहां पर बिकने वाले डेकोरेशन के सामान भी आप का मन मोह लेंगे।

उच्च रक्तचाप की समस्या है तो जांच लें अपना बीएमआई

लंदन। अगर आप उच्च रक्तचाप की समस्या से जूझ रहे हैं, तो सर्वप्रथम अपना बॉडी मास इंडेक्स (बीएमआई) जांच लें। एक नए शोध के अनुसार, सोडियम की मात्रा की बजाय बीएमआई स्वास्थ्य को अधिक प्रभावित करता है। शोधकर्ताओं ने वेब आधारित अध्ययन दस्ते न्यूट्रीनेट-सैन्ट स्टडी के 8,670 वालंटियरों के डाटा का विश्लेषण कर पाया कि बीएमआई, रक्तचाप का स्तर बढने की मुख्य वजह है। शोध के दौरान, 24 घंटे के रिकॉर्ड का इस्तेमाल कर आहारीय खपत का मूल्यांकन किया गया। जीवनशैली संबंधी जानकारी प्रश्नावली और तीन रक्तचाप माप का इस्तेमाल कर जुटाई गई थी। सिस्टोलिक बीपी (एसबीपी) और जीवनशैली से आयु और उसके बाद बहु-वेरीइट का संबंध बहु-रेखीय प्रतिगमन का इस्तेमाल कर आंका गया। शोधकर्ताओं ने पाया कि उन्नत बॉडी मास इंडेक्सिस वाले प्रतिभागियों में एसबीपी उच्च था। पुरुषों में नमक की खपत का एसबीपी से सकारात्मक संबंध था, लेकिन महिलाओं में नहीं। शोध के लेखकों ने कहा, ''दोनों लिंगों में फलों व सब्जियों की खपत के बीच नकारात्मक संबंध और एसबीपी महत्वपूर्ण था।'' दोनों लिंगों में शराब की खपत का एसबीपी से सकारात्मक संबंध था, जबकि शारीरिक गतिविधि का नहीं था।

सूर्योपासना के महापर्व की तैयारी शुरू, क्षेत्राधिकारी तथा उप जिला अधिकारी ने किया निरीक्षण

प्रखर मुहम्मदाबाद यूसुफपुर (गाजीपुर)। स्थानीय और विकासखंड अंतर्गत तथा कोतवाली अंतर्गत नगर एवं ग्रामीण क्षेत्र में डाला छठ की तैयारी शुरू हो गई है। नदी तालाब ,व अन्य जगहों पर छठ के घाट के लिए साफ सफाई का काम तेजी पर है। त्यौहार में प्रयोग होने वाले सामानों की बिक्री भी शुरू हो गई है तथा समानो में फल -फूल, दुर्गा, सुप इत्यादि के लिए क्षेत्र के मुख्य बाजार एवं शाहनिंदा में दुकान सज गए हैं।

बताया जाता है की छठ पर्व पर महिलाएं भी आज से चार दिवसीय महापर्व की तैयारी में जुट गई है। सरोवर गंगा का किनारा तालाब के किनारे घाट की साफ सफाई और रंग रोगन का कार्य भी किया जा रहा है पर्व को लेकर पोखरे के पानी को भी साफ किया जा रहा है नगर के महादेव घाट पर साफ सफाई हो रही है नगर एवं ग्रामीण क्षेत्र के अधिकांश लोग महादेव मंदिर के पास के तालाब में महापर्व के लिए एक जगह एकत्रित होते हैं और कुछ लोग गंगा तट के किनारे ही इस महापर्व को करते हैं नदी के किनारे दलदल जैसी स्थिति नहीं है घाटों पर महिलाओं की सुविधा के लिए इंतजाम को लेकर लोगों को जिम्मेदारी सौंप दी गई है आज घाटों पर पूजन के लिए स्थान का निरीक्षण किया गया स्थानीय कोतवाली पुलिस द्वारा विगत रात्रि पैदल रूट मार्च भी किया गया ।जिसमें कोतवाली प्रभारी अशोक कुमार मिश्रा मय हमराहियों के साथ मुख्य बाजार और शाहनिंदा में पैदल रूट मार्च किया गया। शाहनिंन्दा चौकी इंचार्ज कृष्ण प्रताप सिंह ने हनुमानगंज में स्थित पोखरे का निरीक्षण किया और वहां स्थिति को देखा। इस पर्व को शुद्धता से मनाया जाता है ।क्योंकि यह व्रत काफी कठिन है। इसके बावजूद भी लोग और श्रद्धालु छठ को करने के लिए आज से पूजा में जुड़ गए हैं। उत्साही युवकों को तालाबों के किनारे स्थान को घेरते हुए देखा गया। जब पत्र प्रतिनिधि ने उप जिला अधिकारी हर्षिता तिवारी से बात की तो उन्होंने फोन पर बताया की स्थानीय क्षेत्र के सेमरा ,बच्छल का पूरा, हनुमानगंज और महादेव घाट पर जाकर वहां की स्थिति का जायजा लिया गया है साथ ही संबंधित अधिकारियों को इसे ठीक-ठाक करने का निर्देश दिया गया है। इसके अतिरिक्त अन्य स्थान पर भी साफ सफाई की व्यवस्था के लिए दिशा निर्देश दे दिए गए हैं। आज से श्रद्धालु महिला और पुरुष लौकी की सब्जी चने की दाल और चावल खाएंगे ।इसके साथ ही व्रत की शुरूआत होगी ?। इसके बाद 36 घंटे के उपवास का व्रत आरंभ हो जाएगा बाजरो में फलों की दुकान है सजा दी गई है फल विक्रेता विगत 2 दिन पहले से ही फल फूल एवं पूजा से संबंधित समानों की बिक्री के लिए दुकानों को सजा चुके हैं। क्षेत्राधिकार श्याम बहादुर सिंह ने भी बताया की सूर्य उपासना का व्रत को लेकर सभी सरोवरों और गंगा के किनारे घाटों को देखा गया तथा शासन प्रशासन द्वारा उसे ठीक कर कर अन्य दिशा निर्देश भी दिए गए।

हाटा तहसील के सकरौली ग्राम के मूल निवासी उमेश मिश्र बने राजस्थान के डीजीपी

प्रखर कुशीनगर। यह केवल हाटा तहसील और कुशीनगर जनपद के ही नहीं, गोरखपुर मण्डल और समूचे उत्तर प्रदेश के गौरव की बात है कि हाटा तहसील के सकरौली ग्राम में, गांधी स्मारक इण्टर कालेज हाटा, कुशीनगर में अंग्रेजी के प्रवक्ता स्वर्गीय शिवपूजन मिश्र जी के घर में जन्में उनके द्वितीय पुत्र श्री उमेश मिश्र, राजस्थान राज्य के पुलिस प्रमुख अर्थात पुलिस महानिदेशक (डी जी पी) नियुक्त हुए हैं। उमेश मिश्र जी 1989 बैच के भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारी हैं और कुशीनगर जनपद के हाटा तहसील के सकरौली ग्राम के मूल निवासी हैं। आपके पिता स्वर्गीय शिव पूजन मिश्र श्री गांधी स्मारक इण्टर कालेज, हाटा, कुशीनगर में अंग्रेजी के प्रवक्ता तथा बड़े भाई स्वर्गीय डॉ राजेन्द्र मिश्र जी चिकित्सक थे। उमेश जी अपनी सफलता का पूरा श्रेय अपने पिता तथा बड़े भाई को देते हैं। उमेश जी की बारहवीं तक की शिक्षा इसी इण्टर कालेज से और उच्च शिक्षा इलाहाबाद विश्वविद्यालय से प्राप्त किये। इसी विश्वविद्यालय से इन्होंने दर्शनशास्त्र विषय में परास्नातक करते हुए उत्कृष्ट स्थान प्राप्त किया। भारतीय पुलिस सेवा में चयनित होने के बाद, राजस्थान काडर में आपको सेवा का अवसर मिला और वहां इन्होंने अपनी ईमानदारी कर्मठता तथा सादगी से अलग छाप छोड़ते हुए पुलिस विभाग की शान बने रहे हैं। कल देर शाम उन्हें राजस्थान सरकार द्वारा पुलिस विभाग का मुखिया बनाये जाने पर उनके पैतृक ग्राम सकरौली और कुशीनगर जनपद में सूचना मिलते ही खुशी की लहर दौड़ गई। श्री उमेश मिश्र की इस उपलब्धि पर सभी क्षेत्रवासी गौरवान्वित हैं तथा उनके उज्जवल भविष्य की कामना करते हैं। इस अवसर पर बुद्ध स्नातकोत्तर महाविद्यालय के शिक्षक और कर्मचारी वर्ग ने भी प्राचार्य प्रोफेसर सिद्धार्थ पाण्डेय जी की अध्यक्षता में एक बैठक कर उनको बधाई तथा शुभकामना प्रेषित किया है। इस अवसर पर प्रो कौस्तुभ नारायण मिश्र, प्रो उमाशंकर त्रिपाठी, प्रो सत्येन्द्र गौतम, डॉ दुर्गेश मणि त्रिपाठी, डॉ आमोद कुमार राय, डॉ जितेन्द्र मिश्र, श्री उमेश जी के भतीजे सूर्य नारायण मिश्र, अधिवक्ता शमशाद खान, डॉ अनुज कुमार, दयाशंकर सिंह, पारिवारिक संजय मिश्र जी, सुधीर त्रिपाठी, पशुपति मिश्र, बृजकिशोर दुबे, प्रफुल्ल चन्द, अशोक मद्देशिया, संजय गौंड आदि लोग उपस्थित रहे।

गांवों में नहीं आ रहे सफाईकर्मी, लोग परेशान

प्रखर गोरखपुर। केंद्र सरकार द्वारा स्वच्छ भारत अभियान चलाया जा रहा है। इसी अभियान के तहत सरकार के कई दिग्गज मंत्री जगह-जगह सफाई अभियान चलाकर लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक भी कर चुके हैं। स्वयं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी इस अभियान का हिस्सा रह चुके हैं, लेकिन सरकार के इस अभियान की ग्रामीण क्षेत्रों में धज्जियां उड़ाई जा रही हैं।गांवों की नालियों में जलभराव हो गया है। नालियों में गंदगी का भी बुरा हाल है। गांव में सफाई व्यवस्था दुरुस्त रखने के लिए पंचायती राज विभाग द्वारा प्रत्येक ग्राम पंचायत में सफाई कर्मचारियों की नियुक्ति की गई है, लेकिन सफाई कर्मचारी गांवों में जाने का नाम नहीं ले रहे हैं। बड़हलगंज ब्लॉक क्षेत्र के ग्रामसभा कोल्हुआ के ग्राम चैनपुर में सफाई का बुरा हाल है, गांव में पुरुषों को खुद अपने घरों की नालियों की सफाई करनी पड़ रही है।नालियां सफाई न होने से गंदगी से भरी हुई हैं,गांव के सफाई कर्मचारी भी कई माह से गांव में सफाई करने नही आए हैं। यदि सरकार के स्वच्छ भारत अभियान की इसी तरह धज्जियां उड़ाई जाती रहीं तब केंद्र सरकार का यह सपना कैसे साकार हो पाएगा।गांव में कई माह से सफाई नहीं हो पाई है, बरसात शुरू होते ही नालियां बंद हो जाती है। गंदगी और पानी से नालियों में बदबू आने लगी है। ऐसे में लोगों का रास्तों पर निकलना मुश्किल हो रहा है।लेकिन इस पर न तो ग्राम प्रधान नजर पड़ रहा नही।न ही अधिकारियों का,गांव की नालियां कीचड़ से भरी हुई हैं, नियुक्ति के बाद कुछ माह तक तो सफाई कर्मचारी गांव में आए, लेकिन अब गांव में सफाई का बुरा हाल है। लोगों को खुद ही नालियों की सफाई करनी पड़ रही है। ऐसे में सफाई कर्मचारियों का क्या फायदा। गंदगी कोदेखते हुए जल्द ही गांवों में भी सफाई करवाई जाए।नालियों में गंदगी ज्यादा होने पर गांव की महिलाएं खुद ही सफाई करने लग जाती हैं। सफाई कर्मचारी तो केवल सरकारी दस्तावेजों में नियुक्त होकर तनख्वाह ले रहे हैं। सरकार को इनकी ओर ध्यान देते हुए सख्त कदम उठाकर जो कर्मचारी सफाई करने नहीं जा रहे हैं, उन पर कार्रवाई करनी चाहिए।

जौनपुर के गाँव की लड़की का योग शिक्षक बनने का सपना पूरा करने के लिए आगे आये सचिन मिश्रा/सी.पी.सी. पावर इंडिया प्राईवेट लिमिटेड

प्रखर पूर्वान्चल जौनपुर। उत्तर प्रदेश के जौनपुर जिले की केराकत तहसील के अंतर्गत ग्राम - सरौनी पूरब पट्टी की रहने वाली दीक्षा चौबे की बचपन से ही योग में रूचि थी और कठिन आसनों को भी सरलता से करते देख कर सभी लोग अचंभित हो जाते थे. दीक्षा की भी तीव्र इच्छा थी कि वह योग शिक्षक बनें` काफी मेहनत के बाद दीक्षा चौबे को देश के सबसे प्रसिद्ध योग संस्थानों में से एक, कैवल्यधाम योग संस्थान (लोनावला, महाराष्ट्र) में 'योग शिक्षण में पी.जी. डिप्लोमा' - P.G. Diploma in Yoga Education में प्रवेश तो मिल गया मगर सबसे बड़ी समस्या पैसों की थी. फीस, कापी-किताब और हास्टल के साथ ही अन्य व्यय मिलाकर लगभग 2 लाख रुपए की जरुरत थी एक साथ इतनी बड़ी धनराशि का इंतजाम होना मुश्किल दिख रहा था और प्रतिभाशाली दीक्षा के सपने चकनाचूर होते दिख रहे थे` इसी बीच इस प्रकरण की जानकारी मेडिकल वेस्ट प्रबंधन के क्षेत्र में अग्रणी कंपनी, सी.पी.सी. पावर इंडिया प्राईवेट लिमिटेड वाराणसी के संस्थापक और प्रबंध निदेशक सचिन मिश्रा को मिली जिन्होंने इसके पूर्व भी कई गरीब परिवारों को सम्हालने का सराहनीय कार्य किया था इसके बाद सचिन मिश्रा ने अपनी सामाजिक जिम्मेदारी का परिचय देते हुए, खुद ही उक्त लड़की के घर पहुँचने का फैसला लिया और उससे मिलकर बातचीत की, श्री सचिन मिश्रा उसकी प्रतिभा और लगन से इतना अधिक प्रभावित हुए कि दीक्षा की पूरी पढ़ाई का खर्च उठाने का प्रस्ताव दिया जिसे दीक्षा और उसके माता-पिता ने सहर्ष स्वीकार कर लिया` तत्काल ही सी.पी.सी. पावर इंडिया प्राईवेट लिमिटेड, वाराणसी के प्रबंध निदेशक श्री सचिन मिश्रा ने दीक्षा चौबे के बैंक खाते में पूरी धनराशि ट्रांसफर कर दी और इसके बाद का दृश्य बहुत ही भावुक कर देने वाला था। दीक्षा और उसके परिजनों की आँखों से खुशी के आंसू निकल रहे थे जो रुकने का नाम ही नहीं ले रहे थे` अब दीक्षा पढ़ेगी और कोर्स पूरा करने के बाद योग शिक्षिका बनेगी और इसका पूरा श्रेय जाता है सी.पी.सी. के श्री सचिन मिश्रा जी जो की ब्रह्मराष्ट्र एकम, रोटरी क्लब सहित अन्य कई सामाजिक संगठनों में बड़ी सक्रियता से लगे रहते है साथ में उनके द्वारा कई ऐसे अनेक लोगो के कल्याण में वे सहायक बने है जैसे आज दीक्षा के घर का दीपक बनने का अमूल्य योगदान दिया।

नहाय खाय के साथ शुरू हुआ लोकआस्था का महापर्व छठ

अंकित मिश्रा

प्रखर खानपुर गाजीपुर। नहाय खाय के साथ आज शुक्रवार को शुरू हुआ लोकआस्था का महापर्व छठ,इस दिन से घर में साफ-सफाई और शुद्धता का बहुत ध्यान रखा जाता है।साथ ही घर मे बनने वाले भोजनों मे भी लहसुन-प्याज की मनाही हो जाती है।छठ व्रत एक कठिन तपस्या की तरह माना जाता है।छठ व्रत मूल रूप से महिलाएं ही करती हैं,हालांकि कुछ पुरुष भी इस व्रत को रखते हैं।छठ का पहला दिन 'नहाय खाय' के रूप में मनाया जाता है जिसमें घर की सफाई, फिर स्नान और शाकाहारी भोजन से व्रत की शुरूआत की जाती है।मान्यता के मुताबिक, छठी मैया ने कार्तिकेय को दूध पिलाकर पाला था. इसी से छठ में दूध का अर्ध्य देने की परंपरा शुरू हुई।

नहाय खाय के दिन क्या खाती हैं व्रती- सूर्योदय पूर्व उठकर महिलाएं आम की लकड़ी से दातून करती हैं। इसके बाद नहा धोकर व्रती लौकी की सब्जी के साथ चने की दाल और चावल खाती हैं. इसमें संतान देने वाली छठी मैया और आरोग्य देने वाले भगवान सूर्य की प्रार्थना की जाती है।इस दिन एक ही समय भोजन किया जाता है,नहाय खाय के साथ व्रती सात्विक जीवन जीते हैं और हर तरह की नकारात?मक भावनाएं,जैसे लोभ, मोह, क्रोध आदि से खुद को दूर रखते हैं। नहाय खाए के दिन खासतौर पर कद्दू की सब्जी बनायी जाती है. व्रत रखने वाले सबसे पहले इसे ग्रहण करते हैं।इस दौरान महिलाएं अपनी संतान के स्वास्थ्य, सफलता और दीघार्यु के लिए 36 घंटे का निर्जला उपवास रखती हैं,इसलिए ये व्रत बेहद कठिन माना जाता है। इस महापर्व को मनाने वाले छठ व्रतियों को कुछ खास बातों का भी ध्यान रखना चाहिए, प्रसाद को तैयार करते वक्त अनाज की शुद्धता का खास ध्यान रखना चाहिए,छठ के प्रसाद में काम आने वाले अनाज में गलती से भी पैर नहीं लगना चाहिए।इतना ही नहीं प्रसाद को नए चूल्हे पर बनाया जाए। सूर्य प्रत्यक्ष देवता माने जाते हैं. इसमें संतान देने वाली छठी मैया और आरोग्य देने वाले भगवान सूर्य की प्रार्थना की जाती है. ऐसे में लोग गंगा में स्नान कर सूर्य को अर्ध्य देते हैं और अच्छे स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना करते हैं।

लोकआस्था के महापर्व छठ पर बाजारों मे बढ़ गयीं चहल-पहल- लोकआस्था के महापर्व छठ पर खानपुर क्षेत्र के सिधौना, रामपुर, बिहारीगंज, खानपुर, पोखरामोड़, अनौनी, मौधा आदि बाजारों के छठ पर्व पर फल की दुकानें सज गई हैं। महिलाएं सूप-दौरी, साड़ी-कपड़ा व पूजन सामग्री की तैयारी में जुट गई है। ग्रामीण क्षेत्र की महिलाएं शहर सहित पास के बाजारों में पहुंच रही हैं।क्षेत्र के बाजारों में भी चहल-पहल बढ़ गई है। कपड़े, ईख, दीया, सूप, बर्तन, किराना दुकानों समेत ब्यूटी पार्लर पर महिलाओं की भीड़ उमड़ रही है।

छत के रास्ते घर में घुस नकदी सहित लाखों के जेवर चोरी

प्रखर थानागद्दी जौनपुर। केराकत कोतवाली के थानागद्दी चौकी अंतर्गत थानागद्दी के जाखिया पुरवा में बीती रात चोरों ने घर में घुसकर लाखों रुपये के मूल्य के गहने, नकदी और कीमती सामानों पर हाथ साफ कर दिया। जहा पुलिस ने घटनास्थल का निरीक्षण किया। वही पुलिस घटना को संदिग्ध मान जाच कर रही है।

थानागद्दी के जाखिया पुरवा निवासी झगडू सिंह के घर बीती देर रात चोर छत के रास्ते मकान में घुस गए और सीढ़ी के सहारे अंदर कमरों में पहुंच गए। चोरों ने इस दौरान अंदर के सभी कमरों को खंगाल डाला। चोरों ने इतनी सफाई से घटना को अंजाम दिया कि छत और बरामदे में सो रही महिलाओं को भनक तक नहीं लगी। आलमारी, अटैची और बक्सों में रखे लाखों के जेवर, नकदी सहित अन्य कीमती सामान चोर लेकर चंपत हो गए। भोर में घर की महिलाओं की नींद खुली तो सामान बिखरे पड़े थे और अंदर कमरे के दरवाजे भी खुले थे। इससे परिवार में हलचल मच गई।

सूचना मिलने पर चौकी पुलिस ने पहुंचकर घटना का जाएजा लिया। गृहस्वामी ने बताया कि चोरों ने चार चूड़ी, एक करधनी, दो नथिया, 2 मंगलसूत्र 4 अंगूठी व अन्य चांदी के लगभग पांच लाख के जेवर, 15 हजार नकद के अलावा घर में रखे अन्य कीमती सामान भी उठा ले गए। मामले के चौकी इंचार्ज रोहित मिश्रा का कहना है कि प्रथम दृष्टया मामला संदिग्ध लग रहा है। बीच गाव में घर है मकान की छत पर चढने का कोई रास्ता नही है। और आलमारी का लाकर नही टूटा और उसमे से गहने गायब है। मामले जांच पकडताल की जा रही है।

नेहा व प्रीती बनना चाहती थीं आर्टिस्ट और इन्जीनियर बन गयीं दारोगा

प्रखर गोरखपुर। दारोगा के रिजल्ट को लेकर उपनगर गोला की एक प्रेरणा देने वाली खबर है। क्षेत्र के एक व्यक्ति की दो बेटियों ने एक साथ दारोगा बनकर अपने माता-पिता व परिवार के साथ पूरे क्षेत्र का नाम रोशन कर दिया। इस उपलब्धि से उनका परिवार फूले नहीं समा रहा है। पूरे इलाके में इस बात की चर्चा जोरों पर है। नौकरी की तैयारी कर रहे युवाओं के लिए दोनों बहनें प्रेरणा श्रोत बन गई हैं। उपनगर के रामामऊ गांव निवासी कमलेश कुमार नायक एवं नर्वदा देवी की पुत्री नेहा कुमारी एवं प्रीती कुमारी ने दारोगा की परीक्षा में एक साथ सफलता पाई है।स्टील प्लांट में नौकरी करने वाले कमलेश कहते हैं कि आज उनका सपना पूरा हो गया है। उनकी दो बेटियां सफलता का इतिहास रच अपने परिवार एवं गांव का नाम रोशन की है।नेहा और प्रीती ने प्रथम प्रयास में ही यह सफलता हासिल की है। वर्तमान में छत्तीसगढ भिलाई स्टील प्लांट में नौकरी करने वाले नायक

की बेटी नेहा और प्रीती शुरू से ही होनहार थी नेहा का सपना आर्टिस्ट और प्रीती का इन्जीनियर बनने का था।दोनों नौकरी का कोई भी चांस छोडना नही चाहती थीं।लेकिन दोनों बहने पढ़ाई के साथ फिजिकल तैयारी भी करती थीं। भिलाई दारोगा भर्ती परीक्षा का रिजल्ट आया कि इस परिवार में खुशियों की लहर दौड़ गई।नेहा व प्रीती ने बताया कि हम दोनों बहनों को पहले ही प्रयास में यह सफलता मिली। दोनों की शुरूआती और डिग्री की पढ़ाई भिलाई से हुई है। माता-पिता व परिवार ने दोनों की पढाई में भरपूर सहयोग किया।नेहा और प्रीती युवाओं को संदेश देते हुए बताती हैं कि प्रयास करते रहिए सफता जरूर मिलेगी। इनकी सफलता पर भाजपा नेत्री अस्मिता चंद, दिलीप नायक,संजय नायक, समाजसेवी इन्द्र बहादुर वर्मा,शत्रुघ्न कसौधन,प्रदीप नायक,राकेश कुमार यादव,मनोज उमर वैश्य,अतुल नायक,राबिन नायक,संतोष तिवारी,दीपू जायसवाल,सत्यव्रत तिवारी आदि ने बधाई दी है।

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल 95वीं बटालियन, राष्ट्रीय आपदा मोचन बल एवं प्रांतीय सशस्त्र बल 'फिट इंडिया फ्रीडम रन' का आयोजन

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल 95 वीं बटालियन, राष्ट्रीय आपदा मोचन बल एवं प्रांतीय सशस्त्र बल 'फिट इंडिया फ्रीडम रन' का आयोजन किया गया केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल 95 वीं बटालियन, राष्ट्रीय आपदा मोचन बल एवं प्रांतीय सशस्त्र बल 'फिट इंडिया फ्रीडम रन' का आयोजन किया गया इस दौड़ की शुरूआत कमांडेंट मनोज कुमार शर्मा के नेतृत्व में 11 बटालियन राष्ट्रीय आपदा मोचन बल कैम्प पुलिस लाइन चौराहे तक और कमांडेंट अनिल कुमार बृक्ष के नेतृत्व में पहड़िया सीआरपीएफ 95वीं बटालियन के मुख्यालय से सारनाथ चौराहे तक हुई बटालियन के कमांडेंट अनिल कुमार बृक्ष ने 'फिट इंडिया फ्रीडम रन' का शुभारंभ किया` इस कार्यक्रम के माध्यम से सीआरपीएफ के जवानों ने लोगों को संदेश दिया कि यदि अपने आप को फिट रखना है तो अपने दिनभर में थोड़ा समय निकाल कर जरूर टहलें या दौड़ें इससे आपका स्वास्थ्य ठीक रहता है और इंसान इन क्रियाकलापों से हृदय रोग जैसी बीमारियों से भी बचता है कमांडेंट अनिल कुमार बृक्ष ने बताया कि बटालियन मुख्यालय से फिट इंडिया फ्रीडम रन की शुरूआत की गई इस रन में सीआरपीएफ के जवान बटालियन मुख्यालय से सारनाथ तक दौड़ते हुए और वहां से लौटकर वापस मुख्यालय आए उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान पर सीआरपीएफ ने अक्टूबर पूरे महीने फिट इंडिया मूवमेंट को लेकर कार्यक्रम आयोजित किया गया जा रहा है जिसमें सीआरपीएफ के जवानों व उसके परिवार को प्रतिदिन 10 किलोमीटर का डिस्टेंस वॉकिंग व रनिंग के जरिए पूरा करना था उन्होंने कहा कि फिट इंडिया फ्रीडम रन का ये प्रोग्राम लोगों को जागरूक करने के लिए था कि लोग ज्यादा से ज्यादा जागरूक हो सकें और फिट रह सकें` इस कार्यक्रम को सफल बनाने में उमाकांत ओझा उप कमांडेंट, विनोद कुमार सहायक कमांडेंट निरीक्षक कमलेश कुमार, निरीक्षक वेद प्रकाश त्रिपाठी और निरीक्षक त्रिलोचन जेना साथ साथ में वाहिनी के तमाम जवानों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया।

संक्षिप्त खबरें

कमीशन का भुगतान जल्द हो- प्रदेश अध्यक्ष

प्रखर वाराणसी। आल इंडिया फेयर प्राइज शाप डीलर्स फेडरेशन उत्तर प्रदेश ईकाई के प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष गिरीश तिवारी के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल सम्भागीय खाद्य नियंत्रक वाराणसी मण्डल वाराणसी से मुलाकात किया गया ।और मण्डल के जनपद वाराणसी जौनपुर गाजीपुर चंदौली जिले के माह अप्रैल से जून तक कमीशन के भुगतान पर चर्चा किया गया। महोदय द्वारा यह बताया गया कि जो भी जिले की फाइल आई थी।उसका भुगतान कर दिया गया है कुछ जनपद के 70रुपए की फाइल आई थी।उसका भुगतान कर दिया गया है।अब सिर्फ वाराणसी जनपद की फाइल यहां पर है।जो कि 90रुपए से बनकर आया है।जून तक का उसका भुगतान दो तीन दिन कर दिया जायेगा। प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष गिरीश तिवारी ने कहा कि अब जो विपणन गोदाम से बाल पोषाहार व आंगनबाड़ी का खाद्यान्न का उठान कोटेदारों द्वारा कराया जा रहा है।उसे अब सिंगल डोर स्टेप डिलीवरी से कराया जा। प्रतिनिधिमंडल में जिला अध्यक्ष वाराणसी बह्मदेव मिश्रा मनीष तिवारी अन्य लोग मौजूद थे।

धानापुर थाना में शांति समिति की बैठक की गई

प्रखर चंदौली। जिले के धानापुर थाना में छठ पूजा को देखते हुए शांति समिति की बैठक की गई .जिसमें सएचओ विनय प्रकाश सिंह द्वारा सभी ग्राम प्रधानों व हर गांव से मानिन्द व्यक्ति को भी बुलाया गया था सभी लोगों के साथ बैठक की गई जिसमें बताया गया कि सभी लोग अपना त्योहार शांतिपूर्ण ढंग से मनाये भाईचारे का सम्बन्ध बनाये रखें पुलिस प्रशासन आपलोग के साथ है और हर घाट पर पुलिस की व्यवस्था की गई है और सभी ग्राम प्रधान को बताया गया कि घाट पे लाइट की भी व्यवस्था कराए और गंगा का जलस्तर बढ़ाव भी है इसको देखते हुए पानी के अंदर बांस बल्ली गढ़वा दिया जाए ताकि हादसा होने से बचा जा सके .जिसमें मौजूद धानापुर ग्राम प्रधान राम जी कुशवाहा हेतमपुर ग्राम प्रधान कमलाकांत मिश्र बिपिन रस्तोगी नंदन दुबे आदि लोग मौजूद रहे।

एनडीआरएफ वाराणसी ने किया रन फॉर यूनिटी का आयोजन

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। राष्ट्र और उसके नागरिकों की सेवा में पुलिस कर्मियों की शहादत को उजागर करने के लिए हर साल पुलिस स्मृति दिवस (21 अक्टूबर) को मनाया जाता है और एकता के प्रतीक, राष्ट्रीय एकता दिवस (31 अक्टूबर) को मनाया जाता है इनके बीच कार्यक्रमों की एक श्रृंखला आयोजित की जा रही है जिससे जन मानस में देशभक्ति की भावना को प्रबलता मिले। उसी कड़ी में पुलिस सेवा झंडा दिवस 2022 के तहत शुक्रवार को कमान्डेंट मनोज कुमार शर्मा के निर्देशन में 11 एनडीआरएफ वाराणसी के अधिकारीयों एवं जवानों द्वारा चौकाघाट वाराणसी में रन फॉर यूनिटी का आयोजन किया गया` कमांडेंट मनोज कुमार शर्मा द्वारा रन फोर यूनिटी को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। इस कार्यक्रम द्वारा लोगों में देशभक्ति और एकता का संदेश फैलाया गया और कर्तव्य की पंक्ति में अपने प्राणों की आहुति देने वाले पुलिस कर्मियों को श्रद्धांजलि दी गई` इस कार्यक्रम में 95 सीआरपीएफ के अधिकारी, जवानों तथा रिजर्व पुलिस लाइन वाराणसी व एनडीआरएफ के बचावकर्मियों ने उत्साह के साथ बढ़-चढ़कर भाग लिया` कार्यक्रम के अंत में सभी प्रतिभागियों ने वीर बलिदानियों द्वारा किए गए सर्वोच्च बलिदान को याद किया और उन महान शहीदों की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की।

अन्तर्राष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन का आयोजन

प्रखर वाराणसी। अंतर्राष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन का कार्यकारिणी का गठन प्रदेश अध्यक्ष डॉ० नीरज बोराजी (एम0एल0ए0) के मौजूदगी में हुआ। महोदय, आज दिनांक 28.10.2022 विशेश्वरगंज स्थित कार्यालय में अंतर्राष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन 30प्र0 एक संगोष्ठी आयोजित हुई जिसमें मुख्य अतिथि डॉ० नीरज बोरा प्रदेश अध्यक्ष व विधायक मौजूद थे। संगोष्ठी में मुख्य रूप से 300 एवं वाराणसी में विस्तार से मुख्य अतिथि द्वारा चर्चा हुयी जिसमें वैश्य समाज के उत्थान एवं भविष्य में कार्यकारिणी योजनाओं पर विस्तृत चर्चा हुई एवं जिला वाराणसी के कार्यकारिणी की घोषणा जिला अध्यक्ष श्री प्रतीक गुप्ता जी द्वारा की गयी। संचालन महामंत्री ओमकृष्णदास अग्रवाल ने किया जिसमें मुख्य रूप से पदाधिकारियों का चयन किया गया श्री मनमोहन अग्रवाल जी श्री गुलशन कपूर श्री कुंवर कृष्ण अग्रवाल श्री राजवंश जायसवाल श्री नाथ कुमार अग्रवाल श्री मुकेश गुजराती वरिष्ठ उपाध्यक्ष वरिष्ठ उपाध्यक्ष वरिष्ठ उपाध्यक्ष वरिष्ठ उपाध्यक्ष वरिष्ठ उपाध्यक्ष वरिष्ठ उपाध्यक्ष कार्यालय 82-83 सेक्टर-डी. प्रियदर्शिनी कालोनी, सीतापुर रोड, लखनऊ।

प्रखर पूर्वांचल

RNIUPHIN/2016/68754

मुद्रक प्रकाशक 'पंकज सिंह' के लिए सम्पादक 'अरूण सिंह' द्वारा 'गायत्री प्रिंटिंग प्रेस' सकलेनाबाद नियर दुर्गा चौक, गाजीपुर पिन कोडः 233001 से छपवाकर कनेरी गाजीपुर से प्रकाशित

सम्पादकीय कार्यालयः 9/10, टैगोर मार्केट, कचहरी, गाजीपुर पिन कोडः 233001

सम्पर्क सूत्रः 0548-2223833, +91-8858563779 +91-9450208067, +91-9452844802

सभी विवाद गाजीपुर न्यायालय के अधीन होगें।

ताजा खबर पढ़ने के लिए लॉगइन करें हमारी वेबसाइट
https://prakharpurvanchal.com
Email ID: prakharpurvanchal@gmail.com

सांध्य दैनिक प्रखर पूर्वांचल अखबार के सभी पद अवैतनिक हैं